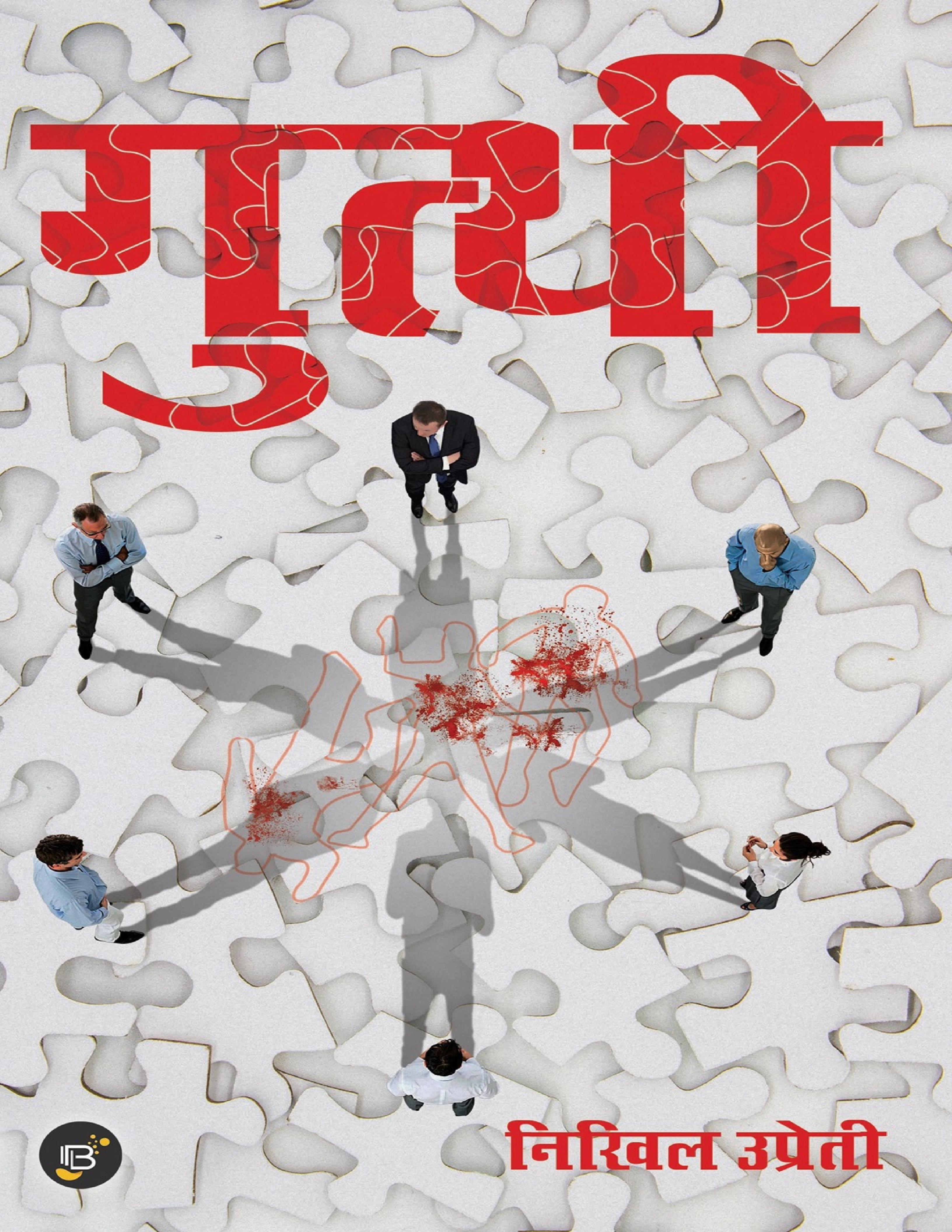
गुत्थी
निखिल उप्रेती

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

यदि आप दुर्लभ उपन्यासों, प्रेरणादायक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों और अनुवादित साहित्य की खोज में हैं तो हमारे विशेष टेलीग्राम चैनल से जुड़ें और अनमोल साहित्य का आनंद लें।

हमारे चैनल में आपको मिलेगा :

- ★ अद्वितीय और दुर्लभ उपन्यास (Novels)
- ★ प्रेरणादायक पुस्तकें (Motivational Books)
- ★ धार्मिक ग्रंथ और किताबें
- ★ विभिन्न भाषाओं में अनुवादित साहित्य
- ★ बेहतरीन पत्रिकाएं (Magazines)
- ★ और अन्य दुर्लभ साहित्यिक खज़ाने

साहित्य और ज्ञान की इस अनोखी दुनिया का हिस्सा बनने के लिए

नीचे दिए गए Link पर Click करें !

HINDI BOOKS CHANNEL

(धार्मिक, आज़ादी, इतिहास...उपन्यास से संबंधित)

https://t.me/Hindi_Books_Library

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

यदि आप दुर्लभ , प्रेरणादायक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों

और अनुवादित साहित्य की खोज में हैं,

तो हमारे विशेष 📲 टेलीग्राम चैनल से जुड़ें

और अनमोल साहित्य का आनंद लें।

📖 हमारे चैनल में आपको मिलेगा:

📚 अद्वितीय और दुर्लभ उपन्यास (Novels)

💡 प्रेरणादायक पुस्तकें (Motivational Books)

🕉️ धार्मिक ग्रंथ और किताबें

🌎 विभिन्न भाषाओं में अनुवादित साहित्य

📜 बेहतरीन पत्रिकाएं (Magazines)

🎁 और अन्य दुर्लभ साहित्यिक खज़ाने

🔔 कृपया "Join Now" बटन या लिंक पर Click करें!

HINDI BOOKS CHANNEL

Join Now▶️ (धार्मिक, आजादी, इतिहास...से सबंधित)

https://t.me/Hindi_Books_Library

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

(नई, पुरानी किताबों के लिए)

Join Now 📒

https://t.me/Book_Hindi

ENGLISH BOOKS CHANNEL

Join Now 📗

https://t.me/Google_Ebooks

Join Now 📙

https://t.me/English_Library_Books

(ALL CHANNEL LINKS)

Join Now 📘

https://t.me/Hindilibrary

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

(नयी, पुरानी किताबों के लिए)

https://t.me/Book_Hindi

ENGLISH BOOKS CHANNEL

https://t.me/Google_Ebooks

https://t.me/English_Library_Books

(ALL CHANNEL LINKS)

https://t.me/Hindilibrary

GUTTHI

Nikhil Uprety

Bookemist

सामग्रियाँ

शीर्षक पेज

समर्पित

लेखकीय

गुत्थी

अध्याय 1

अध्याय 2

अध्याय 3

अध्याय 4

अध्याय 5

अध्याय 6

अध्याय 7

अध्याय 8

अध्याय 9

अध्याय 10

अध्याय 11

अध्याय 12

अध्याय 13

अध्याय 14

अध्याय 15

अध्याय 16

अध्याय 17

अध्याय 18
अध्याय 19
अध्याय 20
अध्याय 21
अध्याय 22
अध्याय 23
अध्याय 24
अध्याय 25
इस लेखक द्वारा पुस्तकें

गुत्थी

गुत्थी

निखिल उप्रेती

Bookemist

गुत्थी (उपन्यास)
लेखक : निखिल उप्रेती
© 2024 : निखिल उप्रेती
प्रथम संस्करण: जनवरी 2024
कवर डिजाइन: शहनवाज़ खान

सभी अधिकार सुरक्षित हैं।
इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा लेखक व प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बगैर फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी अन्य मेकैनिकल या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के ज़रिये पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक:
बुकेमिस्ट (इम्प्रिन्ट-सूरज पॉकेट बुक्स)
ठाणे, महाराष्ट्र

यह एक काल्पनिक किताब है।
स्थानों और संस्थाओं के नामों का प्रयोग केवल कथ्य को प्रमाणिकता प्रदान करने के लिए किया गया है। कहानी में आये सभी चरित्र, नाम और घटनाएँ लेखक की कल्पना पर आधारित हैं और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध एक संयोग मात्र होगा।

समर्पित

मेरे माता-पिता

स्वर्गीय श्रीमती सरिता उप्रेती व स्वर्गीय श्री चक्रधर उप्रेती को

मेरे पंखों को उड़ान देने के लिए

लेखकीय

प्रिय दोस्तों,

कोई भी विचार, कोई भी कथानक, कोई किस्सा कब और कैसे किसी लेखक के ज़हन में घर कर लेता है ये कहना मुश्किल है। मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से ये कोई दैविक शक्ति, भगवान की नेमत ही है जो मुझसे नए किरदार , नई कहानियाँ गढ़वाती रहती है। परमपिता परमात्मा ने मुझे दूसरों का मनोरंजन करने हेतु माध्यम के रूप में चुना है जिसके लिए मैं उसका सदा ऋणी रहूँगा।

मेरे माता पिता जिन्होंने मुझे सपने देखने की ना सिर्फ आज़ादी दी बल्कि इसके लिए प्रेरित भी किया, यूँ तो उनकी कमी मुझे सदा ही खलती रहेगी पर मैं जानता हूँ की वो मेरे साथ हमेशा बने रहेंगे और मुझे प्रेरित करते रहेंगे। ये उनकी प्रेरणा ही है जिसने मुझे लेखन में आगे बढ़ने के लिए हिम्मत दी।

मेरी दोनों बेटियाँ रविता और भाविका जो मेरी हर कहानी को न सिर्फ पूरी दिलचस्पी से सुनती हैं बल्कि अपनी तरफ से सुधार भी बताती हैं, उनके बिना मेरी लेखनी अधूरी है।

मेरी धर्मपत्नी प्रियंका जिन्होंने मुझे हमेशा अपने दिल की सुनने को कही और मेरे साथ कंधे से कंधा मिला कर हमेशा चलती चली आयी हैं, मैं उनका आभारी हूँ।

मेरे प्रिय पाठकगण जिनकी वजह से मेरी कहानियाँ घर-घर तक पहुंची हैं, मैं आज जो कुछ भी हूं उनकी ही वजह से हूं।

आभार व्यक्त करना चाहूंगा शुभानन्द जी और सूरज पॉकेट बुक्स का जिन्होंने एक बार फिर मुझे अपने साथ जुड़ने का मौका दिया है, कोशिश यही है कि उनकी उम्मीदों पर खरा उतर सकूं।

आपका शुभचिंतक

निखिल उप्रेती

गुत्थी

कपूर विला की ऊपरी मंज़िल से मद्धम सी रौशनी बाहर झाँक रही थी। दिसंबर की उस काली सर्द रात में भी कोई था जो उस वक़्त भी जाग रहा था। चारों तरफ कुछ था तो बस सन्नाटे का शोर। शहर भर को कोहरे ने अपने आगोश में लिया हुआ था। ठंड इतनी थी की अमूमन रात भर सड़क पर भौंकने वाले आवारा कुत्ते भी उस रात चुपचाप कहीं छुपे बैठे थे। वो गाढ़ा सफ़ेद कोहरा धीरे-धीरे बढ़ता हुआ ऊपरी मंज़िल की उस खिड़की से अंदर घुसने लगा।

कमरे में एक मखमली बिस्तर मौजूद था जिस पर लेटी थी सोनाली कपूर, शहर के नामी व्यवसायी मनमोहन कपूर की सबसे छोटी बेटी। सोनाली बिस्तर पर लेटी हुई एक नॉवेल पढ़ रही थी। कमरे में बस आवाज़ थी तो उस दीवार घड़ी की जो टिक टिक करती हुई समय की ताल पर थिरक रही थी। सोनाली ने नॉवेल से नजर हटाकर एक नज़र घड़ी पर डाली। रात के डेढ़ बज रहे थे। उसने उपन्यास के पन्ने को मोड़ा और उठ कर बैठ गयी। काफी देर से वो एक अजीब सी बेचैनी महसूस कर रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसकी छाती अंदर से बुरी तरह से जल रही हो। वो बार-बार अपना हाथ छाती पर फेरती और फिर गले तक लाती। पिछले ढ़ाई घंटे से वो अपने कमरे में बंद थी। रात का खाना खाने के बाद वो अपने कमरे में चली आयी थी और तभी से उपन्यास पढ़ने में लगी हुई थी। ये उसका रोज़ का नियम जो था। नॉवेल पढ़ने की शौक़ीन सोनाली सोने से पहले हर रात कोई न कोई नॉवेल ज़रूर पढ़ती थी। बाईस साल की सोनाली को कोई स्वास्थ्य संबंधित परेशानी भी नहीं थी। देखने में सुंदर, स्वभाव से चुलबुली और हमेशा खुश रहने वाली सोनाली उस वक़्त सही महसूस नहीं कर रही थी। उसने अपने माथे को छुआ तो पाया की वहाँ पसीने की कुछ बूँदें उभर आयीं थीं। ठंड की एक तीखी लहर तेज़ी से उसके जिस्म में दौड़ पड़ी। यकायक उसका दम घुटने लगा। उसका हाथ तेज़ी से एक बार फिर उसके गले की तरफ बढ़ा। वो छटपटाने लगी।

□□□

कमरे में अँधेरा छाया हुआ था। रात के सन्नाटे को चीरती हुई मनमोहन कपूर की खाँसी ने साथ लेटी उनकी बीवी योगिता को भी उठा दिया। वो बुरी तरह से खाँसते हुए बिस्तर पर उठ बैठे।

“क्या हुआ! ठीक तो हैं आप?” योगिता ने बेड स्विच पर हाथ मारते हुए पूछा।

बिस्तर के ऊपर लगा वो नाईट लैंप पीली रौशनी फेंकता हुआ जगमगा उठा। योगिता ने बेड के साथ लगे टेबल पर रखा हुआ पानी का गिलास उठाया और अपने पति के हाथ में थमा दिया। मनमोहन कपूर ने एक झटके से पानी अपने गले के अंदर उतारा और फिर एक नज़र अपनी पत्नी की तरफ दौड़ाई।

“कुछ बेचैनी से लग रही है। जैसे कुछ जलन सी हो रही हो यहाँ पर!” उन्होंने अपनी छाती और गले की ओर इशारा करते हुए कहा।

“कितनी बार बोला है आपको कि रात का खाना थोड़ा कम खाया कीजिये, पर आप मेरी सुनते ही कहाँ हैं… बस जहाँ तंदूरी चिकन मिला नहीं वहाँ…”

इससे पहले योगिता अपनी बात पूरी कर पाती अचानक एक तेज़ खाँसी का दौरा सा उठा और उसने उसके गले को भी दबोच लिया। वो भी अब बुरी तरह से खाँसने लगी थी।

“पानी पी लो तुम भी” कहते हुए मनमोहन कपूर ने साथ रखा पानी का जग योगिता की तरफ बढ़ा दिया। योगिता ने पानी का जग हाथ में पकड़ा ही था कि तभी मनमोहन कपूर की साँसें उखड़ने सी लगी।

“आ… आप ठीक तो है ना! क्या हो रहा है आपको?” योगिता हड़बड़ा उठी। उसके हाथ से जग छूट कर बिस्तर पर गिर गया और सारा बिस्तर गीला हो गया।

मनमोहन कपूर का समूचा जिस्म ठंडे पसीने से तरबतर हो गया था। उनका चेहरा लाल होने लगा और उनकी साँसे उखड़ने लगी थीं। ऐसा लग रहा था जैसे कोई उनका गाला दबा रहा हो। गले के अंदर तक होती एक तीखी जलन ने उनका साँसे लेना भी दूभर कर दिया था।

वो घबरा कर बिस्तर से नीचे उतर आये और अपने गले को पकड़े कमरे के चक्कर लगाने लगे। योगिता भी घबरा के बिस्तर से नीचे उतर आयी थी।

“डॉक्टर विष्णु को कॉल करूँ क्या? आप बैठ जाइये। ऐसे क्यों घूम रहे हैं कमरे में?” वो अपने पति के करीब आती हुई बोली।

मनमोहन कपूर ने हाथ से इशारा करते हुए योगिता को अपने और करीब बुला लिया।

“मुझे… मुझे साँस… साँस नहीं आ रही… यो… योगिता !”वो बुरी तरह से हाँफने लगे। उनकी साँसे अब यूँ उखड़ने लगी थीं जैसे उनका आखिरी समय करीब आ गया हो। अगले ही पल मनमोहन कपूर की आँखें भी पलटने लगीं। देखते ही देखते उनकी आँखों के अंदर बस सफ़ेद सा हिस्सा ही बस नज़र आने लगा और वो नीचे गिर पड़े।

“मनमोहन क्या हो गया आपको? उठिये… सोनाली… सोनाली तेरे पापा… !”

इस बार फिर योगिता की आवाज़ उसके गले में क़ैद होकर रह गयी। उसने भी यकायक अपना गला पकड़ लिया और ज़मीन पर बैठ गयी।

अगले ही पल योगिया का जिस्म भी जमीन पर लुढ़क चुका था। कुछ पल यूँ ही छटपटाने के बाद उसका जिस्म शांत हो गया। खिड़की पर लगी जाली से वो सफ़ेद कोहरा उनके कमरे में दाखिल होने लगा था और फिर देखते ही देखते कोहरे ने समूचे कमरे को अपनी गिरफ्त में ले लिया।

कपूर विला में अब दोनों मंज़िलों पर कुल तीन लाशें पड़ी हुई थीं। मनमोहन कपूर, योगिता कपूर और सोनाली कपूर बेहद रहस्यमयी परिस्थितयों में इस दुनिया से रुख़सत हो चुके थे।

वो गाढ़ा कोहरा कपूर विला की दीवारों में समाने लगा। उस रात जैसे अँधेरे और कोहरे ने मिल कर कपूर विला और उसमें रहने वालों को निगल लिया था।

□□□

अध्याय 1

गोपालगंज पुलिस थाने में हर रोज़ की तरह उस रोज़ भी चहल पहल थी। पुलिस थाना शहर के बीचों बीच बाज़ार में स्थित था और इसी वजह से वहाँ चहल पहल लगी ही रहती थी। कहीं बाहर से दुकानों का शोर, कहीं गाड़ियों की चिल्ल-पों की आवाज़, कहीं रेढ़ी वालों का शोर तो कहीं पुलिस थाने के अंदर चोरी चकारी में पकड़े गए छुटभय्ये अपराधियों का रोना धोना।

“साहब अबकी बार छोड़ दो फिर ऐसी गलती नहीं होगी!”

सत्रह अट्ठारह साल का वो लड़का उस एस आई के पैरों पर पड़ा गिड़गिड़ा रहा था। लड़के के बदन पर भूरे रंग का बाँह से उधड़ा हुआ स्वेटर था और उसने काले रंग की मटमैली सी पैंट पहनी हुई थी।

“साले पिछली दफा भी तूने यही कहा था। गंद मचा रखा है तुम लोगों ने... इधर-उधर से उठ कर यहाँ चले आते हैं और फिर हमारे इस छोटे से शहर का नाम खराब करते हैं!” एस आई रौनक सिंह ने उसके कान मरोड़ते हुए कहा।

“क्या हुआ रौनक सिंह जी?” हाथ में चाय का कप लिए एस आई केवल राम ने पूछा और वो कप रौनक सिंह की तरफ बढ़ा दिया।

रौनक सिंह ने चाय के कप से उड़ती गर्मागर्म भाप को सूँघा और फिर एक गहरी साँस लेते हुए जवाब दिया:

“साले चाय का मज़ा भी नहीं लेने देते ये लोग!”

“अरे हुआ क्या है बोलिये तो सही?”केवल राम अपनी मूँछों को ताव देता हुआ बोला।

“होना क्या है! इन हरामजादों के ख़ून में ही चोरी चकारी बहती हुई लगती है। जहाँ कोई टूरिस्ट दिखा नहीं वहाँ सालों का ख़ून उबाल मारना शुरू कर देता है। अभी पिछले महीने ही इस साले को चेतावनी दे कर छोड़ा था कि फिर से ये सब मत करना। पर नहीं, सालों को जब तक पिछवाड़े पर डंडा न पड़े, दिमाग में बात घुसती नहीं!”

कहते हुए रौनक सिंह ने अपने डंडे से उस लड़के के पीछे ज़ोर से मारते हुए कहा। लड़का दर्द से बिलबिला उठा।

“माफ़ कर दो साहब अब नहीं करूँगा। वो मुझे पैसों की बहुत ज़रूरत थी इसलिए... वो मेरी बहन बीमार थी ना उसके इलाज…”

बार पूरी होती इससे पहले एक ज़ोरदार तमाचा उस लड़के के गाल पर जा पड़ा। अगले ही पल तीन उँगलियों के निशान उसके गाल पर उभर आये।

“साले झूठ बोलता है? पिछली बार भी तेरी बहन बीमार थी। इस बार भी वही बहाना। चल इस बार तेरे पूरे खानदान को ही यहाँ ला कर लॉकअप में डाल देता हूँ, फिर यहीं करवाना तू अपनी बहन का इलाज भी।” रौनक सिंह दाँत चबाता हुआ बोला।

“बंद कर साले को! रात तक भूखा प्यासा रख इसे!” कहते हुए केवल राम ने लड़के को कान

से पकड़ते हुए उठाया और एक हवलदार की तरफ धकेल दिया।

“साहब माफ़ कर दो, अब नहीं करूँगा!” लड़का फिर से चिल्लाने लगा। पर तब तक उस हलवालदार ने भी उसके पीछे एक ज़ोरदार लात मार कर उसे वहीं मौजूद छोटे से उस लॉकअप में धकेल दिया था।

रौनक सिंह ने चाय का कप थामा और अपनी कुर्सी की तरफ चल दिया। केवल राम भी उसके सामने वाली कुर्सी पर जा बैठा।

“सुना है कोई नई मैडम ने ज्वाइन किया है यहाँ ड्यूटी पर।”

केवल राम चाय का घूँट लेता हुआ बोला।

“हाँ, है कोई नई अफसर एसीपी मंजरी मिश्रा… सुना है बड़े साहब भी उसकी बहुत तारीफें कर चुके हैं!” रौनक सिंह आँखें मटकाते हुए बोला।

“अब बड़े साहब ने तारीफ करी है तो इसका मतलब मैडम में कुछ तो बात होगी!” केवल राम ने उसकी बात का जवाब देते हुए कहा।

रौनक सिंह ने चाय का एक घूँट और लिया फिर चारों तरफ नज़रें दौड़ाते हुए बोला:

“लगता है अब इस पुलिस थाने के दिन फिरने वाले हैं, आज तक यहाँ सख़्त मिज़ाज अफसर, कड़क वर्दी वाले ही दिखाई दिए हैं। अब पहली दफा कोई मैडम यहाँ पर तशरीफ़ लाएँगी… चलो सही है अगले दो तीन साल तक अपने भी अच्छे दिन आ ही गए।”

बिस्कुट का एक टुकड़ा मुँह में डालते हुए रौनक सिंह ने जिस अंदाज़ में बोला, केवल राम भी खुद को हँसने से ना रोक सका।

“वैसे भी यहाँ काम तो कुछ ज़्यादा है नहीं। ले देकर ये चिल्लर जैसे छोटे मोटे चोर हैं। मैडम भी आराम से रहेंगी और हमें भी चैन से रहने देंगी!” रौनक सिंह ने बात आगे बढ़ाते हुआ कहा।

अचानक पुलिस स्टेशन के बाहर कुछ हलचल सी सुनाई दी। दोनों हवलदारों के कान खड़े हो गए।

“अब ये क्या कलेश पड़ गया बाहर? अरे देवीदत्त, देख तो सही ये शोर कैसा है बाहर!” रौनक सिंह चाय का गिलास नीचे रखता हुआ बोला।

हुक्म की तामील की गयी। देवीदत्त नाम का वो नया हवलदार तेज़ी से बाहर निकल आया। उसे गए हुए अभी कुछ ही पल बीते थे कि जिस तेज़ी से वो बाहर गया था उससे दोगुनी तेज़ी से वो वापस अंदर आता उन्हें दिखाई दिया।

“क्या हुआ? इतना घबराया हुआ क्यों है? इसका चेहरा तो देख केवलराम, ऐसा लग रहा है जैसे दिन में कोई भूत देख लिया हो इसने… अबे हुए क्या है बोलेगा कुछ या नहीं?” रौनक सिंह रौब झाड़ता हुआ बोला।

देवीदत्त अपनी टोपी ठीक करने लगा। उसके चेहरे पर वाक़ई में हवाईयाँ उड़ रहीं थीं। उसे अभी नौकरी करते हुए बमुश्किल दो महीने ही हो रहे थे। पुलिस विभाग के काम काज के तरीकों से वो धीरे धीरे ही वाक़िफ़ हो रहा था।

“साहब जी… वो… वो… बाहर!” उसकी ज़ुबाँ काँप रही थी।

“क्या? बाहर क्या?” रौनक सिंह खीजता हुआ बोला।

“साहब वो… बाहर वो आ गयी हैं… मैडम जी… आज ही!” उसने किसी तरह से अपनी बात पूरी करी।

“मैडम! कौन मैडम? ओह!” पहली दफा रौनक सिंह के चेहरे से रौनक गायब नज़र आने लगी। उसका सारा रौब जैसे एक पल में हवा हो गया।

“केवल राम वो… वो सामने कमरा ठीक करवा जल्दी से… मैं आया” बोलता हुआ वो तेज़ क़दमों से थाने के बाहर निकल आया।

□□□

“गुड मॉर्निंग मैडम एसआई रौनक सिंह रिपोर्टिंग!” एक ज़ोरदार सलूट मारते हुए रौनक सिंह ने थाने की नई एसीपी मंजरी मिश्रा का गोपालगंज थाने में स्वागत करते हुए कहा।

“गुड मॉर्निंग बाद में रौनक सिंह जी पहले अपनी कमर पे बँधी ये पेटी ठीक से बाँध लीजिये!” मंजरी ने तंज कसते हुए कहा और थाने के अंदर दाखिल हो गयी।

रौनक सिंह ने झेंपते हुए अपनी पतलून ठीक की और वो भी थाने के अंदर चला आया।

“वैसे तो आप लोगों को मेरे आने की खबर मिल ही गयी होगी पर फिर भी बताये दे रही हूँ मेरा नाम मंजरी मिश्रा है और आज से इस थाने की ज़िम्मेदारी मेरी है। यानी कि इस थाने के साथ साथ यहाँ काम करने वालों की ज़िम्मेदारी भी मेरी ही है!” मंजरी ने रौनक सिंह की तरफ देखते हुए कहा।

रौनक सिंह हौले से सर हिलाता हुआ बोला :

“बहुत सुना था मैडम जी आपके बारे में, आज साक्षात दर्शन भी हो गए।”

“मैंने भी आपके बारे में काफी सुना है रौनक सिंह जी। बस अब आपके साथ साथ आपके कामकाज के तौर तरीकों के भी दर्शन हो जाएँगे तो मैं खुद को धन्य समझूँगी!” मंजरी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

“जी मैडम... मैं वो… पूरी कोशिश रहेगी मैडम जी आपके कहे अनुसार काम करने की। आपको शिकायत का कोई मौका नहीं दूँगा!” रौनक सिंह हकलाता हुआ बोला।

“मुझसे ज़्यादा हमें लोगों को यानी जनता को किसी भी तरह की कोई शिकायत का मौका नहीं देना है और ये बात हम सभी पर लागू होती है!” कहते हुए मंजरी ने अपनी सीट संभाल ली।

रौनक सिंह ने नज़रें चुरा कर केवल राम की तरफ देखा। केवल राम ने गला साफ़ किया और हिम्मत जुटाते हुए बोला:

“मैडम चाय नाश्ता मँगवाऊँ कुछ आपके लिए?”

मंजरी ने टेबल पर पड़ी फाइल से एक कागज़ निकला और उस पर हस्ताक्षर करती हुई बोली:

“नाश्ता मैं कर के आयी हूँ केवल राम जी। हाँ, चाय की बहुत शौक़ीन हूँ। एक कप गर्मागर्म चाय मँगवा सकते हैं तो मँगवा दीजिये और हाँ इलायची वाली चाय होगी तो मज़ा आ जायेगा!” मंजरी ने इस बार धीमे से मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

“जी मैडम मैं अभी बंदोबस्त करता हूँ!”

कहते हुए केवलराम देवीदत्त नाम के उस नए हवलदार की ओर मुखातिब हुआ।

“रौनक सिंह जी बैठिये। घबराइए नहीं, ये कोई कॉलेज नहीं है जहाँ मैं सीनियर हूँ और आपकी रैगिंग लूँगी। हमें एक टीम की तरह मिल कर काम करना है यहाँ। बस मुझे काम में कोताही बरतने वालों से सख़्त नफरत है। आप बस काम सही से कीजिये। हम चाय नाश्ता सब साथ में किया करेंगे!” इस बार मंजरी की आवाज़ में हलकी सी नज़ाकत थी।

“जी मैडम, बिलकुल। आपको शिकायत का कोई मौका नहीं देंगे हम!” रौनक सिंह ने हौले से मुस्कुराते हुए कहा।

मंजरी ने नई नियुक्ति की औपचारिकताएँ पूरी करी और फिर सारे थाने का मुआयना करने लगी।

“ये थाने के बाहर कूड़े का ढ़ेर कल से नहीं लगना चाहिए। इसकी ज़िम्मेदारी आपकी होगी!” उसने केवल राम से कहा।

केवल राम ने उसे चाय का कप थमाते हुए धीमे से सर हिलाया।

“ये इस लड़के को क्यों रखा हुआ है यहाँ?” मंजरी की नज़र लॉकअप के अंदर ज़मीन पर बैठे उस लड़के पर पड़ी जिसे रौनक सिंह ने बंद कर रखा था।

“मैडम जी, वो दरअसल बात ये है कि ये लड़का चोरी करते हुए पकड़ा गया है। इसने पहले भी इसने कई बार ऐसा किया है और कई बार हम इसे वार्निंग दे के छोड़ चुके हैं, पर ये है कि साला…!”

मंजरी ने घूर कर रौनक सिंह की तरफ देखा तो वो रुक गया।

“सो …सॉरी मैडम वो मुँह से गलती से निकल गया!”

“इसको आखिरी वार्निंग दे कर छोड़ दो और इसका पता नोट करो। हो सकता ये किसी गिरोह का हिस्सा हो!” कहते हुए मंजरी उस लड़के की तरफ मुड़ी।

“इस बार तुझे छोड़ रही हूँ। पर ध्यान रख अगली बार ये हरकत करी तो रौनक सिंह तेरे चेहरे को इतना बिगाड़ देंगे कि फिर कभी उस पर रौनक नज़र नहीं आएगी!”

मंजरी ने कुछ इस अंदाज़ में कहा कि केवल राम के लबों पर मुस्कान उभर आयी।

लड़का छूटते ही थाने से ऐसे निकला जैसे उसे यकीन हो अगर वो रुका तो उसे वापस लॉकअप में ठूँस दिया जाएगा।

इसके बाद मंजरी कुछ देर तक थाने के हर कोने में जा कर वहाँ का हाल देखने लगी। सामने एक स्टोर रूम था जहाँ बरसों पुरानी फाइलें एक के ऊपर एक दबी पड़ी हुई थीं। उन फाइलों में कितने ही ऐसे केस थे जो वक़्त की धूल में दब कर कब का दम तोड़ चुके थे।

मंजरी वापस अपनी सीट पर आ कर जा बैठी और टेबल से गिलास उठाकर उसने अपना गला तर किया। फिर उसने अपने बैग से एक छोटी सी फ्रेम लगी फोटो निकाली और उसे टेबल पर एक किनारे रख दिया। वो कुछ देर तक उस फोटो फ्रेम को निहारती रही। उसकी आँखें नम हो चली थीं। उस फोटो में एक महिला और एक पुरुष मुस्कुराते हुए खड़े थे।

“ माँ - पापा आज आपका सपना सच हुआ। देखिये आपके आशीर्वाद से आज मैं एक थाने की इंचार्ज बन के आयी हूँ, पर अफ़सोस कि पापा आप ये दिन देखने के लिए आज नहीं हैं। बहुत जल्दी थी ना आपको ऊपर जाने की ? आई मिस यू पापा!” वो धीमे से बुदबुदाई और अपने आँसू पोंछने लगी।

“मैडम जी बुरा न माने तो एक बात कह सकता हूँ?” रौनक सिंह ने हिम्मत करते हुए पूछा तो मंजरी टेबल पर पड़ी फाइल से नज़र उठा कर उसकी ओर देखने लगी।

“कहिये क्या कहना चाहते हैं?”

“वो मैडम जी पिछले हफ़्ते मेहता साहब आये थे थाने में। वो अपने पुराने कमिश्नर साहब। वो आपकी बड़ी तारीफ कर रहे थे। उन्होंने एक बड़ा ही मज़ेदार किस्सा सुनाया था!” रौनक सिंह के

चेहरे पर अब वही पुरानी रौनक वापस लौटने लगी थी।

"वेस्टवुड विला वाला किस्सा?" मंजरी के होंठों पर मुस्कराहट नाचने लगी।

"जी मैडम जी वो ही। साहब बता रहे थे कि उस केस को कोई भी सुलझा नहीं सका था... आप भी... !" कहते कहते वो रुक गया।

"हाँ, मैं भी नहीं!" मंजरी हामी भरती हुई बोली। "पर मैंने उस केस से सीखा बहुत कुछ है रौनक सिंह जी! इंसानी फितरत, इंसानी जूनून और इंसानी ज़हन के बारे में काफी कुछ जानने को मिला था। और एक बात मैं पूरे यकीन के साथ कह सकती हूँ कि इंसान बड़ा टेढ़ा जानवर है रौनक सिंह जी। हमने इतनी प्रगति कर ली है लेकीन हम अभी तक इंसानी ज़हन को समझ नहीं पाए हैं और शायद आगे भी कभी समझ न सकें!" मंजरी ने मुस्कुराते हुए अपनी बात पूरी करी।

"मैडम जी अगर आप ऐसा बोल रही हैं तो फिर ज़रूर ऐसा ही कुछ होगा... वैसे यहाँ गोपालगंज में तो अभी तक ऐसा कोई वाक़या पेश आया नहीं है, बाकी जगहों के मुक़ाबले ये जगह काफी शांत है!" रौनक सिंह ने अपनी बात ख़त्म करी और मंजरी को ताकने लगा।

"अपराध और अपराधी कहीं भी पनप सकते हैं रौनक सिंह जी! जैसे एक पौधे को पनपने के लिए खाद, पानी और धूप की ज़रूरत होती है, वैसे ही अपराध और अपराधी को पनपने के लिए एक गिरा हुआ ज़मीर, दिल में दबी गहरी नफ़रत और ज़हन में उबाल मारता कोई जूनून ही बस काफी होता है!" मंजरी वापस टेबल पर रखी फाइल पर नज़र टिकाती हुई बोली।

रौनक सिंह ने जवाब में सर हिलाया ही था कि तभी टेबल पर रखा फ़ोन घनघना उठा। मंजरी ने लपक कर फ़ोन उठाया।

"हेलो एसीपी मंजरी मिश्रा स्पीकिंग!"

"...", सामने से कुछ कहा गया जो मंजरी के सामने खड़े रौनक सिंह और केवल राम सुन न पाए।

"जी कहाँ से?"

"..."

"शिव पार्वती मंदिर के पास कपूर विला, ओके? हुआ क्या है?"

"..."

"व्हाट? कब?"

"..."

दूसरे तरफ से कही जा रही बात के कारण मंजरी के चेहरे का बदलता रंग देख कर रौनक सिंह और केवल राम को इतना तो समझ आ ही चुका था कि उस शांत शहर की शांति अब भंग हो चुकी है।

"नहीं, अंदर कोई नहीं जायेगा। हम अभी पहुँच रहे हैं। आप उधर ही रहिये!" मंजरी ने उन दोनों की तरफ देखते हुए फ़ोन नीचे रखा।

"मैडम जी क्या हुआ?" रौनक सिंह सीट से उठता हुआ बोला।

"कपूर विला का नाम सुना है क्या?" मंजरी ने पुलिस कैप पहनते हुए पूछा।

"जी मैडम जी। वहाँ का पता तो बच्चा बच्चा जानता है, पर हुआ क्या है मैडम?" इस बार केवल राम भी खुद को ना रोक सका।

"कोई तो हादसा हुआ है वहाँ और जहाँ तक मुझे लग रहा है, ये हमारे लिए अच्छी ख़बर नहीं

है!” कहते हुए मंजरी ने दोनों को चलने का इशारा किया।

अगले ही पल एक पुलिस जीप कपूर विला के लिए रवाना हो चुकी थी।

□□□

अध्याय 2

कपूर विला यानी शहर का वो पता जिसे केवल राम के लफ़्ज़ों में कहें तो शहर का बच्चा बच्चा तक जानता था। पर ये जान पहचान सिर्फ कपूर विला तक ही सीमित नहीं थी। कपूर विला में रहने वालों को शहर का लगभग हर इंसान पहचानता था। इसकी वजह थी कपूर विला के मालिक मनमोहन कपूर और उनकी धर्मपत्नी योगिता कपूर की दरियादिली। उनका सादगी भरा व्यवहार, उनकी ऊँची सोच और उनके हाथों किया गए ऐसे कितने ही सामजिक काम, जिसके चर्चे आये दिन शहर में होते रहते थे।

मनमोहन कपूर का जन्म शहर से अस्सी किलोमीटर दूर उनके पैतृक गाँव बैरागपुर में हुआ था पर उन्हें ज़िंदगी इस शहर ने दी। एक ऐसी ज़िंदगी जहाँ कदम कदम पर रुपया पैसा, शोहरत और बुलंदी थी। शुरूआती विफलताओं के बाद उन्होंने रेडीमेड कपड़ों के व्यावसाय में जो एक बार कदम रखा, तो फिर उन्हें कभी पीछे मुड़ने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। देवी की ऐसी कृपा रही कि उनका धंधा दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करने लगा और फिर देखते ही देखते वो न सिर्फ उस शहर के बल्कि सारे प्रांत के सबसे बड़े कपड़ा व्यापारी बन गए। इस सफलता में न सिर्फ उनकी मेहनत का हाथ था, बल्कि उनकी किस्मत में चार चाँद लगाने वाली उनकी धर्मपत्नी योगिता का भी बहुत बड़ा हाथ था।

योगिता कपूर ने मनमोहन कपूर का एक सच्ची ग्रहणी की तरह साथ दिया और मुश्किल समय में भी उनके साथ चट्टान की तरह मज़बूती के साथ डटी रहीं। बहुत कम उम्र में उनकी अर्धांगिनी बन कर उनके घर में वो तब आयीं थीं जब मनमोहन कपूर जीवन यापन के लिए संघर्ष कर रहे थे। व्यवसाय में मिली शुरूआती विफलताओं ने उन्हें लगभग तोड़ कर ही रख दिया था। पर वो तो योगिता कपूर थीं जिन्होंने अपने पति में एक नयी ऊर्जा शक्ति का संचार किया। वो योगिता कपूर ही थीं जिनका सहारा लिए मनमोहन कपूर ने फर्श से अर्श तक का ये सफर पूरा किया था।

कहते हैं की इंसान हर चीज़ से पीछा छुड़ा सकता है पर अपने कर्मों से नहीं। आज जब कपूर विला के आसपास वो भीड़ जमा थीतो सभी की दिल में बस यही कसक बार बार उठ रही थी की कपूर परिवार ने ऐसे कौन से कर्म किये थे जो उन्हें आज का वो दिन देखना पड़ा। इस जन्म में तो कोई ऐसा वाक़या याद नहीं आन पड़ता था जिसे लेकर उस परिवार पर कोई किसी भी तरह से कोई ऊँगली उठा सके और पिछले जन्मों का बहीखाता तो ऊपर वाले के पास ही होता है।

गोपालगंज पुलिस थाने से कपूर विला तक का आधे घंटे से कुछ ज़्यादा का वो सफर रौनक सिंह और केवल राम के लिए मंजरी को कपूर विला और उसके सदस्यों के बारे में बातें बताने के लिए काफी था। उनकी बातें सुन कर इतना तो वो समझ ही गयी थी की गोपालगंज में मनमोहन कपूर का काफी नाम था और लोग उन्हें इज्जत की नज़रों से ही देखते थे। इससे यह भी साफ था की कहीं न कहीं उनके दुश्मन भी ज़रूर होंगे। क्यूँकि हर ऊँचे नाम की ऐसी कोई न कोई कीमत

ज़रूर होती है जो जाने अनजाने में उस आदमी को चुकानी ही पड़ती है।

पुलिस जीप कपूर विला के गेट के बाहर रुकते ही मंजरी की नज़र सबसे पहले विला की नेम प्लेट पर पड़ी। वहाँ बड़े बड़े अक्षरों में एक सफ़ेद मार्बल पर कपूर विला और नीचे मनमोहन कपूर और योगिता कपूर का नाम लिखा हुआ था।

विला के आसपास लोगों का जमावड़ा लगना शुरू हो चुका था। ये वक़्त ही कुछ ऐसा है की शायद मीडिया से भी पहले आम इंसान को कई बार ख़बर लग जाती है। या शायद लोगों के पास दूसरों की ज़िंदगी में झाँकने के लिए काफी वक़्त रहता है।

“सबसे पहले तो इन लोगों को हटाओ यहाँ से। ये क्या मजमा लगा रखा है यहाँ?” मंजरी ने चारों तरफ नज़र फिराते हुए कहा।

रौनक सिंह एकदम मुस्तैद हो हुक्म की तामील करने लगा। साथ आये उस नए हवलदार ने सीटी बजाते हुए सभी को वहाँ से चले जाने के लिए इशारा किया। लोग अनमने मन से वहाँ से चलने लगे।

तीन मंज़िला कपूर विला की खूबसूरती बाहर से देखते ही बनती थी और मंजरी भी उसकी खूबसूरती को निहार रही थी।

मार्बल से बनी वो सफ़ेद दीवारें और उन पर हुई नक्काशी कपूर परिवार के मिज़ाज को बयान करती थी। विला के बाहर खिला बुरांस का वो पेड़ विला की ख़ूबसूरती में चार चाँद लगा रहा था। गेट के अंदर हरा भरा वो लॉन, उसके बीचों बीच सजा लकड़ी का छोटा सा टेबल और उस पर बिछी शंतरज की बाज़ी। ऐसा लगता था जैसे कोई राजा महाराजा का ठिकाना हो। टेबल के इर्द गिर्द चार कुर्सियाँ करीने से रखी हुई थीं।

मंजरी गेट को धकेलते हुए अंदर दाखिल हुई तो उसने देखा विला के अंदर भी कुछ लोग मौजूद थे।

पुलिस को देखते ही वो सकपका से गए।

“आप लोग बाहर चलिए। हमें अपना काम करना है। आप लोग चलिए यहाँ से प्लीज़!” मंजरी ने ऊँची आवाज़ में कहा तो तीन चार लोग बाहर निकल आये।

“आप में से पुलिस को फ़ोन किसने किया था?”

बाहर आते एक व्यक्ति से मंजरी ने सवाल किया तो वो रुक गया। मंजरी ने देखा उसने पीला कुर्ता और सफ़ेद पायजामा पहना हुआ था और उसके बाल बीच से एकदम सफ़ेद थे। आँखों पर मोटा काला चश्मा चढ़ाये वो आदमी बार बार अपना गला साफ़ कर रहा था। ऐसा लगता था जैसे उसे ज़ुकाम हो।

“जी, मैंने ही आपको फ़ोन किया था। मेरा नाम सुधीर चौधरी है और मैं यहीं साथ वाले मकान में रहता हूँ!” उसने हाथ जोड़ते हुए अपनी बात पूरी करी।

“आप यहाँ क्या कर रहे थे?” मंजरी ने उसे घूरते हुए सवाल दागा।

“जी वो... मैं... हम कपूर साहब के पुराने जान पहचान वाले हैं!” आदमी थोड़ा सकपका सा गया।

“जान पहचान वाले हो तो कहीं भी कभी भी आ जाते हो बिना काम के?” रौनक सिंह ने इस बार बागडोर सँभालने की कोशिश करी। उसे काफी देर से किसी पर रौब झाड़ने का मौका भी तो नहीं मिल रहा था।

“वो दरअसल हम लोगों का आज कपूर साहब के साथ कहीं जाने का प्रोग्राम था जी!” आदमी ने रौनक सिंह की तरफ देखते हुए जवाब दिया।

“कहाँ जाने का?”मंजरी विला के आसपास का मुआयना करती हुई बोली।

“जी वो यहाँ से सत्तर किलोमीटर दूर माता रानी का बड़ा मंदिर है। हम लोग हर साल वहाँ जाते हैं!” सुधीर चौधरी ने इस बार मंजरी से मुख़ातिब होते हुए जवाब में कहा।

मंजरी उसकी बात पर हल्की सी तवज्जो दिए अंदर चली आयी। लॉन को पार करके एक छोटा सा पोर्च (बरामदा) था जहाँ से विला के अंदर जाने के लिए दरवाज़ा खुलता था।

“विला के अंदर जाने का यही दरवाज़ा है मैडम जी और ये अंदर से बंद है।” रौनक सिंह मंजरी की तरफ देखते हुए बोला।

“अंदर तो हमें जाना ही होगा रौनक सिंह जी। तरीका आप निकालिये।” मंजरी ने बिना उसकी तरफ देखे जवाब दिया और आस पास का मुआयना करने लगी।

वो लकड़ी का एक मोटा सा दरवाज़ा था जिस पर सुंदर सी नक्काशी की गयी थी। देखने से ही लग रहा था जैसे किसी महंगी लकड़ी से बना होगा। अभी मंजरी ने पूरी तरह से नक्काशी पर नज़र डाली भी नहीं थी कि तभी रौनक सिंह की उत्साह भरी आवाज़ ने उसका ध्यान खींचा।

“मैडम जी ये स्लाइडिंग विंडो आधी खुली हुई है। आईये।” कहते हुए रौनक सिंह ने अपना पूरा ज़ोर लगाते हुए उस आधी खुली आधी फँसी हुई स्लाइडिंग विंडो को धकेला और अंदर जाने का रास्ता बना लिया।

□□□

मंजरी और रौनक सिंह अंदर दाखिल हुए। केवल राम दूसरे हवलदार के साथ बाहर ही खड़ा था। अंदर घुसते ही मंजरी को ऐसा महसूस हुआ जैसे वो किसी आलिशान महल में घुस आयी हो। एक बड़े से हॉलनुमा कमरे के बीचों बीच काँच का बड़ा सा फानूस लटका हुआ था जिस पर से पीले रंग के काँच के छोटे छोटे टुकड़े लटक रहे थे। दीवारों पर लकड़ी की कई कलाकृतियाँ सजी हुई थीं। हॉल से ऊपर की मंज़िल पर सीढ़ियाँ जाती थीं। मंजरी ने देखा हॉल की बायीं तरफ एक कमरा था। ऊपर की मंज़िल पर एक दूसरा कमरा बना हुआ था।

“ये कमरा किस का है? “मंजरी ने सुधीर चौधरी की ओर देखा जो रौनक सिंह के इशारे पर अंदर चला आया था।

“जी ये कपूर साहब का कमरा है!” सुधीर चौधरी ने जवाब में कहा।

मंजरी ने देखा वो कमरा अंदर से बंद था।

“आप अंदर कैसे आये? क्या गेट खुला हुआ था?” यकायक मंजरी की पेशानी पर बल पड़ने लगे।

“हाँ मैडम गेट खुला था। जैसा कि मैंने अभी कहा हम लोगों को आज सुबह आठ बजे रवाना होना था। जब साढ़े आठ बजे तक कपूर साहब नहीं आये तो मैं यहाँ चला आया। गेट से अंदर आकर देखा तो यहाँ कोई नज़र ना आया। फिर मैंने कपूर साहब के मोबाइल पर कॉल किया तो मोबाइल के कमरे के अंदर से बजने की आवाज़ सुनाई दी।”

सुधीर चौधरी एक ही साँस में बोलता चला गया। वो कुछ देर रुका और मंजरी की ओर देखने लगा। फिर कुछ सोचते हुए खुद ही दोबारा बोलने लगा।

“मोबाइल की आवाज़ सुन कर मैं उन्हें आवाज़ लगाने लगा। फिर मैंने सोनाली बिटिया के मोबाइल पर भी कॉल किया तो वो भी कमरे के अंदर ही बजने लगा। मैं बहुत घबरा गया था मैडम इसलिए बिना वक़्त गँवाए मैंने पुलिस स्टेशन फ़ोन कर दिया।” सुधीर चौधरी ने अपने माथे पर उभर आयी पसीने की बूँदों को साफ करते हुए अपनी बात खत्म करी।

मंजरी ने महसूस किया की वहाँ की हवा में एक ठंडक सी थी। जैसे बंद घरों में अक्सर होती है। उस बड़े से हॉलनुमा कमरे में कुछ न कुछ ऐसा था जिससे कपूर परिवार के रुतबे के बारे में देखते ही पता चल जाता था। अभी मंजरी ये सब निहार ही रही थी की तभी सुधीर चौधरी ने आगे बढ़ कर एक कमरे के दरवाज़े पर बने हैंडल को मरोड़ना शुरू कर दिया।

“अरे ! ये क्या कर रहे हैं..”, मंजरी उसकी ये हरकत देखकर चिल्लाई।

“वो.. वो मैं...मैं…” सुधीर मंजरी की आवाज से सकपका गया। अभी भी उसका हाथ हैंडल पर मौजूद था।

“अरे हाथ हटाइए हैंडल से अपना भई!”, मंजरी सुधीर का हाथ उधर चिपका देख तेजी से बोली।

सुधीर ने घबराकर झटके से अपने हाथ हटा लिये।

मंजरी ने एक बार उसकी तरफ गुस्से से देखा और फिर कुछ सोचते हुए मनमोहन कपूर के कमरे के दरवाज़े पर लगे हैंडल को मोड़ने के लिए जेब से रबर का एक दस्ताना निकाल कर हाथ में डालने लगी।

“आपने इस दरवाज़े को पहले भी खोलने की कोशिश की?” मंजरी हैंडल मोड़ती हुई बोली।

“हाँ जी मैं… मैं वो कोशिश कर रहा था?” सुधीर चौधरी ने तपाक से जवाब दिया।

“दस्ताने तो नहीं पहने होंगे क्यों? साले, सब यहाँ खुद को ब्योमकेश बक्शी समझते हैं।” रौनक सिंह दाँत दिखाता हुआ बोला।

मंजरी ने घूरकर उसे देखा तो वो चुप हो गया।

“चौधरी साहब हो सकता है कि ये कोई क्राइम सीन हो और इस हैंडल पर किसी की उँगलियों के निशान पहले से हों। लेकिन अब उसपर आपकी उँगलियों के निशान भी छप चुके होंगे, अब सोचिये आपने हमारा काम कितना मुश्किल कर दिया!”

मंजरी खुद को संभालती हुई बोली। एक सीनियर अफसर होने के नाते उसे खुद पर अपनी भावनाओं पर काबू रखना था, वरना गुस्सा तो उसे भी खुद आ रहा था सुधीर चौधरी पर।

“सॉरी मैडम!” सुधीर चौधरी आँखें झुकाते हुए बोला।

मंजरी ने दरवाज़े पर ज़ोर से डंडा मारा और फिर रौनक सिंह की तरफ मुड़ती हुई बोली।

“देवीदत्त और केवल राम को बुला लो और ये दरवाज़ा और ऊपर मंज़िल का दरवाज़ा तोड़ने को बोलो।”

रौनक सिंह उसकी बात सुन तेज़ी से बाहर निकल आया। मंजरी ने एक बार फिर से हॉल का मुआयना करना शुरू किया। बड़ा सा वो फानूस हवा से मद्धम गति से हिल रहा था। बाहर से आती

रोशनी में उसके पीले रंग के छोटे से टुकड़े बेहद ख़ूबसूरत लग रहे थे। मंजरी उसे बड़े ध्यान से देखे जा रही थी।

हॉल में चलते हुए वो फानूस के एकदम नीचे आ कर जा खड़ी हुई।

अचानक फानूस से होते हुए उसकी नज़रें किनारे पर बनी किसी जगह पर गयी। उसने ध्यान से देखा हॉल की दायीं तरफ एक किचन था जिसके बाहर एक गोल सा बड़ा टेबल लगा हुआ था। टेबल खाली था। कुछ सोचती हुई मंजरी किचन की तरफ बढ़ चली। यह एक अत्याधुनिक किचन था जहाँ सब साजो सामान मौजूद था। किचन के कोने में एक सिंक था जहाँ कुछ बर्तन नजर आ रहे थे। मंजरी उस तरफ बढ़ गई और उसने देखा कि वहाँ खाने की कुछ प्लेट रखी हुई थीं। प्लेटों में कुछ खाना बचा था। साथ ही काँच के चार गिलास भी वहीं रखे हुए थे। ऐसा लगता था जैसे टेबल से उठाकर उन्हें बस उधर रख दिया हो। वो वहाँ से वापस आ गई।

वो पीछे मुड़ी तो देखा सामने केवल राम और दूसरा हवलदार साथ ही खड़े थे। मंजरी ने बिना कुछ बोले इशारा किया तो दोनों कमरे की तरफ चल दिए। देवीदत्त नाम के उस हवलदार ने बिना वक़्त गँवाए दरवाज़े के लॉक पर रिवॉल्वर के दस्ते से ज़ोरदार वार किया। केवल राम ने उसका अनुसरण करते हुए ऐसे ही दूसरा वार किया।

“धक्का लगाओ!” मंजरी ने रौनक सिंह की तरफ देखते हुए बोला तो वो उचक कर दरवाज़े के सामने जा खड़ा हुआ।

जैसे ही देवीदत्त ने अगला वार किया, रौनक सिंह दौड़ता हुआ आया और उसने दरवाज़े को ज़ोर से धक्का मारा। दरवाज़ा एक झटके में खुल गया।

दरवाज़ा खुलते ही अंदर का मंज़र देख मंजरी के साथ साथ उन तीनों के चेहरे उतर से गए। सामने मनमोहन कपूर और उनकी धर्मपत्नी योगिता के बेजान जिस्म फर्श पर गिरे पड़े थे। मंजरी ने हाथों पर वापस दस्ताने चढ़ाये और जल्दी से उनकी नब्ज़ टटोलने लगी। पर ठंडे पड़े जिस्मों ने अपनी कहानी बयाँ कर दी थी। मुर्दा जिस्मों में नब्ज़ कहाँ चला करती है।

□□□

अध्याय 3

कुलभूषण चावला ने सिगार से एक बड़ा सा कश लिया और धुआँ हवा में उड़ाते हुए सामने बैठे आदमी की ओर मुस्कुराते हुए बोला:

“आज मेरे रास्ते का सबसे बड़ा काँटा भी हट गया। कमबख्त कब से पाँव में चुभ रहा था!”

अपने पाँव पर चढ़ी काले रंग की पंजाबी जूती को उतारते हुए चावला ने अपनी बात पूरी करी।

सामने बैठे उस शख़्स ने व्हिस्की का गिलास हवा में उठाकर जवाब दिया:

“चावला साहब आज का दिन तो यादगार है आपके लिए। आपका बरसों पुराना ख़्वाब पूरा हुआ है आज। पार्टी तो बनती है सर!”

“साले रोज़ कबाब पर कबाब उड़ाता है और फिर पार्टी माँग रहा है?” कुलभूषण चावला ने एक कश और खींचते हुए मज़ाकिया लहज़े में जवाब दिया।

“अब आपके साथ इतने साल से काम कर रहा हूँ सर, थोड़ी गुस्ताखी तो मुझे भी माफ़ होगी ना!” व्हिस्की के उस गिलास को मुँह से लगाते हुए उस आदमी ने जवाब में कहा।

कुलभूषण चावला अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। लगभग छह फ़ीट की उसकी कदकाठी देखने लायक थी। काले रंग का पठानी कुरता पायजामा पहने, साथ में गठीला बदन लिए वो बेहद सख़्त मिज़ाज नज़र आ रहा था। उसकी आँखें लाल हो चुकी थीं पर ये बता पाना मुश्किल था की ये रंग नशे का था या फिर उसकी आँखों में ख़ून उतर आया था।

सामने बैठे उस आदमी ने अपना गिलास खाली किया और वो भी उठ खड़ा हुआ।

“अब तो आपको दूर कर तक बिज़नेस में टक्कर देने वाला दूसरा कोई नहीं चावला साहब… अब देर किस बात की? मंत्री जी से बात करके अगले साल के चुनाव के लिए टिकट की बात करूँ क्या? यहाँ से एमएलए के लिए आपसे बड़ा नाम अब और कोई है ही नहीं!” उस आदमी ने एक नज़र चावला पर डालते हुए कहा।

“नहीं बृजेश अभी नहीं… अभी आग ताज़ा है। राख के ढेर में हाथ डालेंगे तो अपने ही हाथ जला बैठेंगे… थोड़ा इंतज़ार करना होगा!” चावला ने अपना हाथ हवा में लहराते हुए इशारा किया।

बृजेश नाम के उस आदमी ने धीमे से सर हिलाया और दोनों वापस अपनी-अपनी जगह पर जा बैठे।

“वैसे चावला साहब आपकी और मनमोहन कपूर की कहानी है बड़ी ज़बरदस्त… शहर की इस युवा पीढ़ी को शायद ही ये बात मालूम हो की आप कभी कपूर साहब… “

बृजेश बोलते बोलते रुक गया। चावला उसकी तरफ घूर कर देख रहा था। बृजेश ने गला साफ़ किया और माथे पर उभर आयी पसीने की बूँदों को पोंछते हुए बोला:

“मेरा मतलब आप कभी उस मनमोहन कपूर के पार्टनर हुआ करते थे!”

चावला के हाथों की पकड़ कुर्सी के हत्थे पर मजबूत हुई। एक पल के लिए उसे ऐसा लगा जैसे

बृजेश से बरसों पुरानी कोई दुखती रग दबा दी हो।

बृजेश एक पल के लिए सकपका सा गया। वो चावला के साथ पिछले बीस साल से काम कर रहा था और उसके गुस्से से अच्छी तरफ वाक़िफ़ था। कुलभूषण चावला एक ऐसा नाम जो मनमोहन कपूर की ही तरह शहर भर के लोगों की जुबाँ पर अक्सर ही रहता था। अगर मनमोहन कपूर को कोई टक्कर दे सकता था वो था कुलभूषण चावला। बस फर्क ये था कि जहाँ मनमोहन कपूर का लिबास एक दम सफ़ेद था, वहीं कुलभूषण चावला के लिबास पर ख़ून के छींटों के कुछ निशान देखे जा सकते थे। ये अलग बात है कि अपनी पहुँच और रुतबे की आड़ में वो अपने लिबास को बरसों से छुपाता चला आ रहा था।

"बहुत पुरानी बात छेड़ दी तुमने बृजेश। एक ऐसी बात जिसे मैं अब याद करना नहीं चाहता था। खैर..." चावला बृजेश के एकदम करीब आता हुआ बोला।

"माफ़ कीजिये सर। वो मुँह से निकल गया। मेरा वो मतलब..." बृजेश की धड़कने तेज़ होने लगीं।

"तुम मेरे बहुत पुराने मुलाज़िम हो बृजेश... तुम्हारी जगह कोई और होता तो शायद इतनी हिम्मत न करता पर चलो आज के दिन मैं बहुत खुश हूँ तो इस बात को यूँ ही जाने देता हूँ!" चावला ने बृजेश के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा और एक कुटिल मुस्कान बिखेरने लगा।

बृजेश ने जेब से रुमाल निकाला और माथे पर आये पसीने को पोंछने लगा।

"मनमोहन कपूर नाम का ये काँटा मेरे पाँव में तभी से चुभने लगा था जब मैं उसका पार्टनर बना था!" चावला कुछ याद करते हुए बोल पड़ा।

"पचास लाख... सिर्फ पचास लाख की ही तो बात थी... बस एक मामूली गबन ही तो किया था मैंने... पर उस कपूर ने न सिर्फ मुझे बेइज़्ज़त करके पार्टनरशिप से हटा दिया बल्कि उसके कारण मुझे तीन साल जेल की हवा भी खानी पड़ी थी।"

चावला की आँखों का रंग फिर से लाल होने लगा था। गहरा लाल। एकदम सुर्ख़। जैसे बरसों पुराना कोई ज़ख्म किसी ने फिर से उधेड़ दिया हो।

"जेल से बाहर आते ही मेरी ज़िंदगी का सिर्फ एक मक़सद रह गया था और वो था मनमोहन कपूर की बर्बादी। मैं न सिर्फ उसे पूरी तरह से बर्बाद कर देना चाहता था बल्कि उसे पूरी तरह से नेस्तनाबूद कर देना चाहता था। और आज...", चावला ने जोरदार ठहाका लगाया और अपनी बात जारी रखी, "आज मेरे दिल को जो ठंडक मिली है मैं उसे बयाँ नहीं कर सकता बृजेश... अब दुनिया देखेगी कुलभूषण चावला का असली जलवा... हा! हा! हा! हा!"

चावला पागलों की तरह हँसने लगा। बृजेश उसे ध्यान से देखे जा रहा था। उसने चावला जैसा घिनौना इंसान अपनी ज़िंदगी में आज तक नहीं देखा था।

□□□

गोपालगंज पुलिस थाने में उस वक़्त माहौल संजीदा था। मंजरी अपनी टीम के साथ वापस लौट चुकी थी। उसके चेहरे से साफ़ ज़ाहिर था की वो किसी सोच की दलदल में बहुत गहरी डूबती जा रही थी। उसके सामने क्राइम सीन की तस्वीरें बिखरी हुई थीं। रौनक सिंह और केवल राम मंजरी से कुछ दूरी बना कर रखे हुए थे। किसी महिला पुलिस अफसर के नीचे काम करने का उनका ये पहला अनुभव था और इसलिए वो दोनों पहले से भी ज़्यादा सावधानी बरत रहे थे। मंजरी के

व्यक्तित्व में कुछ था जो दूसरों पर अपना प्रभाव जमा ही देता था।

"मैडम चाय!" रौनक सिंह ने किसी तरह से अपने काँपते हाथों को सँभालते हुए चाय का वो गिलास मंजरी के आगे सरकाया।

जाहिर था मंजरी की सोचों का विषय वह तस्वीरें ही थीं जो उसके समक्ष बिखरी हुई थी। वो बड़े ध्यान से एक एक तस्वीर को देख रही थी। उसका तेज दिमाग भी साथ-साथ अपने काम में लगा हुआ था। मंजरी ने बिना देखे चाय का गिलास पकड़ा और एक चुस्की ली। रौनक सिंह ने तिरछी नज़रों से केवल राम की ओर देखा। दोनों ने आँखों ही आँखों में कुछ बात करी और रौनक सिंह अपनी कुर्सी की तरफ जाने लगा।

"दो बंद कमरे... तीन लाशें... मौका-ए-वारदात पर ख़ून का एक छींटा भी नहीं! उफ़! ये अगाथा क्रिस्टी कब मेरा पीछा छोड़ेगी?" मंजरी उन तस्वीरों से सर उठा कर बड़बड़ाती हुई बोली और रौनक सिंह की तरफ देखने लगी। रौनक सिंह के कदम वहीं थम गए।

इससे पहले वो कुछ और बोलती केवल राम के साथ-साथ रौनक सिंह भी मंजरी की कुर्सी के करीब आ चुका था। मंजरी ने चाय की एक और चुस्की ली और फिर अपने कंधों को उचकाती हुई बोली :

"क्या लगता है रौनक सिंह जी क्या ये कहानी भी अगाथा क्रिस्टी ने लिखी है?"

रौनक सिंह के चेहरे से रंग यूँ उड़ गया जैसे पतछड़ के मौसम में शाखों से पत्ते उड़ जाते हैं। केवल राम बमुश्किल अपनी हँसी रोक पाया। वो ये बात अच्छे से जानता था की रौनक सिंह ने शायद ही कभी अगाथा क्रिस्टी का नाम भी सुना हो।

"ज... जी मैडम जी... वो पता नहीं जी। शायद अगरतला जी ने... " रौनक सिंह के मुँह से अलफ़ाज़ निकले ही थे की मंजरी खिलखिला कर हँस दी।

"अगरतला नहीं रौनक सिंह जी अगाथा क्रिस्टी!" मुस्कुराते हुए मंजरी ने जवाब दिया तो रौनक सिंह बुरी तरह से झेंप गया।

"मैडम जी ऐसा लगता है कि जैसे इन सभी ने ख़ुदकुशी की है जी!" केवल राम अपने साथी के बचाव में यकायक कूद पड़ा।

"वो कैसे?" मंजरी के चेहरे पर एक बार फिर संजीदगी लौट आयी।

"मैडम जी देखने से तो ऐसा ही लगता है कि कमरे में जाकर कुछ खा लिया होगा इन्होंने। इन सभी के कमरे भी अंदर से बंद थे और फिर लाशों पर कोई चोट या ख़ून का निशान भी तो नहीं है मैडम जी!" केवल राम ने डरते डरते अपनी बात पूरी की।

रौनक सिंह हैरानी से उसकी तरफ देखने लगा। उसे केवल राम के जवाब पर ख़ुशी भी हो रही थी और साथ ही साथ हैरानी भी।

मंजरी कुछ देर फिर से उन तस्वीरों को घूरती रही। उन तस्वीरों में कहीं कुछ ऐसा था जो उसकी आँखों में खटक रहा था।

वो एकटक उन तस्वीरों को घूरती रही और फिर अचानक उसके चेहरे के भाव बदल गए।

"एक चीज़ है जो मुझे परेशान कर रही है। जरा ये देखो!" बोलते हुए उसने एक तस्वीर उन दोनों के सामने रख दी।

"नीचे किचन में सिंक के अंदर खाने की चार प्लेट रखी हुई थीं जिनपर कुछ बचाखुचा खाना भी था और वहाँ चार गिलास भी थे। घर में हमें सिर्फ मिस्टर कपूर, उनकी बीवी और उनकी बेटी

की लाशें मिली हैं। इसका मतलब रात को उन तीनों ने किसी चौथे शख़्स के साथ खाना खाया था। तो अब वो चौथा शख़्स कहा गायब हो गया?"

"या गायब हो गयी?" रौनक सिंह के मुँह से निकल पड़ा।

मंजरी का ध्यान तस्वीर से हट कर उसकी ओर गया।

"सही जा रहे हो रौनक सिंह जी। शक के दायरे में सभी आने चाहिए। फिर वो कोई आदमी हो या कोई औरत। फितरत कभी भी मर्द या औरत में फर्क नहीं करती। जुर्म का लहू किसी की भी रगों में दौड़ सकता है और अगर यहाँ कोई जुर्म हुआ है तो हमें हर तरह से अपनी आँखें और अपना दिमाग खुला रखना होगा।"

मंजरी ने चाय का आखिरी घूँट गले के नीचे सरकाया और एक बार फिर उन तस्वीरों को देखने लगी।

"रौनक सिंह जी आपने कहा था की कपूर साहब की बेटी को इत्तिला कर दी है। कब तक आ रही है वो?" मंजरी ने बिना उसकी ओर देखे सवाल दागा।

"हाँ जी मैडम वो उनके पड़ोसी सुधीर चौधरी से बात हुई थी मेरी। उन्होंने फ़ोन किया था कपूर साहब की बड़ी बेटी शिखा को। वो यहाँ पहुँचने वाली ही होगी।" रौनक सिंह ने तपाक से जवाब दिया।

"कौन कौन है इनके परिवार में?" मंजरी इस बार तस्वीर से सर उठा कर बोली।

रौनक सिंह ने जेब से एक छोटी सी डायरी निकली और उसमें से देख कर बोलना शुरू किया।

"मैडम जी कपूर साहब के चार बच्चे हैं... थे मेरा मतलब?" वो एक पल के लिए रुक गया।

"थे मतलब?" मंजरी ने घूरते हुए पूछा।

"इनका एक बेटा था, मैडम। ध्रुव कपूर नाम था। वो कोई डेढ़ साल पहले एक एक्सीडेंट में मारा गया!" इस बार जवाब केवल राम की तरफ से आया।

"एक्सीडेंट? कहाँ कैसे?" मंजरी ध्यान से सुनती हुई बोली।

"शहर के बाहर हुआ था वो एक्सीडेंट। हिट एंड रन केस था मैडम जी। एक नशे में धुत्त कार वाले ने ध्रुव कपूर की गाड़ी को तब टक्कर मार दी थी जब वो कहीं बाहर से वापस घर लौट रहे थे!" केवल राम ने जानकारी देते हुए बताया।

"उस का क्या हुआ?" मंजरी का सारा ध्यान अब केवल राम पर था।

"किस का मैडम जी?" केवल राम सकपका गया।

"अरे उस नशेड़ी कार वाले का, जिसकी गाड़ी से ध्रुव कपूर मारा गया। उसको कोई सज़ा नहीं हुई क्या?" मंजरी बोली।

"नहीं मैडम। कुछ पता ही नहीं चला उसका। ये तो गाड़ी पर ऐसे निशान थे जिससे लगा था कि ऐसा कुछ हुआ होगा और इसी थ्योरी के आधार पर् मामला खत्म कर दिया गया।" इस बार रौनक सिंह ने बात पूरी करी।

"ओह, ओके!" मंजरी बोली।

"ध्रुव के अलावा इनकी तीन बेटियाँ थीं। बड़ी बेटी शिखा, फिर शिप्रा और सबसे छोटी ये सोनाली जिसकी लाश हमें मिली है!" रौनक सिंह बात आगे बढ़ाता हुआ बोला।

"और आपने सिर्फ इनकी बड़ी बेटी को ही इत्तिला करवाई?" मंजरी रौनक सिंह से मुखातिब

होती हुई बोली।

"मैडम जी वो दरअसल सुधीर चौधरी के पास उसी का नंबर होगा शायद!" रौनक सिंह ने जवाब दिया।

"शायद? रौनक सिंह जी ये शायद लफ़्ज़ न हमारे पुलिस विभाग के लिए बड़ा खतरनाक होता है। थोड़ा बच कर रहिएगा इससे। हम पुलिस वाले हैं। बिना किसी ठोस सबूत के आगे बढ़ते नहीं हैं। तो ये 'शायद' का सहारा लेना छोड़िये और काम पर लगिए। मुझे ये सभी लोग यहाँ चाहिए। मैं इन सभी से बात करना चाहती हूँ!" मंजरी की आवाज़ में इस दफे थोड़ी सख़्ती थी।

उसकी आवाज़ का ऐसा असर हुआ की रौनक सिंह और केवल राम दोनों ही तुरंत दिए गए आदेश का पालन करने में लग गए।

□□□

अध्याय 4

हस्पतालों के मुर्दाघर अक्सर अपने अंदर कुछ राज़ लिए होते हैं। मुर्दाघरों की दीवारों में न जाने कितनी ही अधूरी ख़्वाहिशें, कितने ही अधूरे सपने जज़्ब हो चुके होते हैं। अक्सर वहाँ दीवारों से एक अजीब सी सर्द महक आती है। दुःख की महक, दर्द की महक, मौत की महक। कुछ ऐसी ही महक सिटी हॉस्पिटल की उस मोर्चुरी से भी उठ रही थी जब वहाँ मंजरी और उसकी टीम ने कदम रखा। ठंडी, सीलन से तर-ब-तर वहाँ की पीली दीवारें अपनी उदासी अपने उधड़े हुए रंग रूप से बखूबी बयाँ कर रही थीं। रौनक सिंह ने मोर्चुरी में घुसते ही नाक पर रुमाल लगा लिया था। केवल राम मंजरी के डर से रुमाल जेब से अंदर बाहर निकाल रहा था। पर मंजरी पर इस सब का कोई भी असर न था। वो उन दोनों पर बिना कोई तवज्जोह दिए सीधे ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर से जा मिली।

“कुछ बता सकते हैं डॉक्टर साहब कि माजरा क्या है?” मंजरी ने बिना लाग लपेट के पूछा।

डॉक्टर ने अपनी नाक पर चढ़े काले चश्मे को उतारा और फिर उसने मुँह की भाप से उसका शीशा साफ़ करते हुए जवाब दिया:

“पोस्टमॉर्टम शुरू होने में अभी कुछ देर बाकी है मैडम।”

“क्यों? किस का इंतज़ार है आपको?” मंजरी ने तल्खी से सवाल किया।

“कपूर साहब के परिवार से उनकी बेटियाँ आने वाली हैं। कुछ औपचारिकताएँ हैं जिन्हें पूरा करना ज़रूरी है। एक बार वो हो जाये तो पोस्टमॉर्टम में ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा।” डॉक्टर ने चश्मा वापस नाक पर चढ़ाते हुए बताया।

“हम्म! अच्छा एक बात बताइये आपका शुरुआती आकलन क्या कहता है?” मंजरी अपनी मायूसी को छुपाती हुई बोली।

“देखिये मैडम अभी तो कुछ भी कहना जल्दबाज़ी होगी। हाँ, पर इतना बोल सकता हूँ कि मैंने अपने करियर में ऐसा केस आज तक तो देखा नहीं है!” डॉक्टर मंजरी की आँखों में झाँकते हुए बोला।

“क्या मतलब?” मंजरी ने उसे घूरते हुए सवाल किया।

“लाशों पर न कोई चोट का निशान है, न कोई ज़ोर ज़बरदस्ती के कोई निशान हैं, कोई ख़ून खरोंच कहीं कुछ भी नहीं… देख कर तो लग रहा है इनकी मौत दम घुटने से हुई है!” डॉक्टर अपनी बात पूरी करते हुए बोला।

“दम घुटने से? मतलब आपको लगता है कि इन्हे मारा गया है?” मंजरी की पेशानी पर बल पड़ने लगे।

मंजरी की बात सुन कर डॉक्टर ने एक बार अपने चश्मे को दोबारा नाक पर सीधा किया और फिर बोले:

“देखिये ये तो मैं पोस्टमॉर्टम के बाद ही बता सकूँगा पर इतना कह सकता हूँ की मेरा अंदाजा

ज़्यादातर सही ही होता है!”

मंजरी ने बात ध्यान से सुनी और एक नज़र सामने स्लैब पर रखी तीनों लाशों पर डाली। लाशें देख कर एक अजीब सा एहसास उसके मन में उभर आया। सामने वो शख़्स बेजान पड़ा था जो कभी उस शहर की बड़ी बड़ी महफिलों की शान हुआ करता था। कितना अजीब होता है ऊपर वाले का हिसाब किताब भी। मखमली बिस्तर पर ज़िंदगी गुज़ारने वाला अब एक मार्बल के ठंडे स्लैब पर मुर्दा बना लेटा हुआ था।

मंजरी की सोच को झकझोरता हुआ मोर्चुरी का दरवाज़ा खुला और एक लड़का डॉक्टर से किसी कागज़ पर दस्तख़त लेने के लिए अंदर आया। मंजरी ने एक ठंडी साँस लेते हुए डॉक्टर की तरफ देखा। लड़का कागज़ ले कर वापस चला गया तो वो बोली:

“डॉक्टर क्या आपको लगता है की इन तीनों की हत्या हुई है?”

सवाल इतनी तेज़ी से किया गया था की डॉक्टर भी हड़बड़ा सा गया।

“देखिये मैडम ऐसे बिना पोस्टमॉर्टम के मैं...”

मंजरी ने उसे बीच में ही रोक दिया और बोली :

“पर अगर इनकी जान दम घुटने से हुई है या यूँ कहें की इनकी हत्या दम घोट कर की गयी है, तो फिर इनके गले पर कोई निशान तो होना चाहिए ना डॉक्टर?”

रौनक सिंह हैरानी से मंजरी को तकने लगा। डॉक्टर ने इस बार अपना चश्मा उतार कर अपनी जेब में डाल दिया।

“मैंने अभी आपसे कहा तो सही की इनके शरीर पर किसी भी तरह की चोट का कोई निशान नहीं है। अब आप प्लीज़ मुझे आगे का काम करने दीजिये वरना पोस्टमॉर्टम में बहुत देर हो जाएगी!” डॉक्टर ने हाथ जोड़ते हुए कहा और बिना आगे बोले कमरे से बाहर निकल आया।

मंजरी ने उसे जाते हुए एक नज़र देखा और फिर रौनक सिंह की ओर इशारा करती हुई वो भी बाहर चली आयी।

मोर्चुरी के बाहर एक लंबा सा कॉरिडोर था जिसके आखिर में कुछ बेंच लगे हुए थे। वहाँ पर कुछ लोग बैठे हुए थे जिन्हे देख कर मंजरी की आँखों में चमक सी आ गयी।

“लगता है मेहमान आ चुके हैं रौनक सिंह जी! चलिए खातिरदारी शुरू करते हैं!” वो मज़ाकिया लहज़े में बोली और उस तरफ चल दी।

सामने बेंच पर तीन युवतियाँ बैठी हुई थीं जिनके साथ एक युवक भी मौजूद था। एक बुज़ुर्ग सा दिखने वाला व्यक्ति उनसे कुछ ही दूरी पर अकेला खड़ा था। मंजरी ने उस तरफ बढ़ते हुए मोर्चुरी की खिड़की से बाहर नज़र डाली तो देखा मीडिया का सर्कस भी शुरू हो चुका था। अलग-अलग टीवी चैनल वालों की ओबी वैन भी वहाँ पर पहुँच चुकी थी और अख़बार रूपी जंगल के ये सभी भूखे बाशिंदे किसी भी तरह की ‘ब्रेकिंग न्यूज़’ पर दाँत मारने के लिए उतावले हुए जा रहे थे।

मंजरी ने उधर से नज़र हटाई और सामने मौजूद उन तीन युवतियों पर नजर टिकाई जिन तक वह पहुँच चुकी थी। उसने अपना गला साफ़ करते हुए बात शुरू की।

“नमस्कार मैं एसीपी मंजरी मिश्रा हूँ और मैं इस केस को लीड कर रही हूँ!”

वहाँ मौजूद तीनों युवतियों और उस युवक ने मंजरी की तरफ देखा। शायद वो लोग अपनी बातों में इतने तल्लीन थे कि एक पुलिस अफसर को वहाँ देख कर वो सभी थोड़ा चौंक से गए।

“हेलो इंस्पेक्टर.. ओह सॉरी! एसीपी मिश्रा!” उस युवक ने सबसे पहले मंजरी से मुख़ातिब होते

हुए कहा।

मंजरी ने जवाब में धीमे से सर हिलाया और बाकी लोगों की तरफ देखने लगी।

सभी के चेहरे ग़मज़दा दिख रहे थे। उन तीन युवतियों में दो की आँखों से अभी भी आँसू बह रहे थे। तीसरी युवती थोड़ी सामान्य हालत में नज़र आ रही थी।

"जी मैं रणधीर चोपड़ा... कपूर साहब मेरे ससुर थे। ये है उनकी बड़ी बेटी यानी मेरी पत्नी शिखा और ये है शिप्रा। शिखा की बहन और कपूर साहब की दूसरी बेटी" साथ खड़े उस युवक ने एक बार फिर बात शुरू करते हुए बताया।

"और आप?"

मंजरी ने बिना वक़्त गँवाए चुपचाप खड़ी उस तीसरी युवती से खुद ही पूछा।

"जी मैं... वो मेरा नाम नताशा है और मैं....!" वो बोलती बोलती चुप हो गयी। मंजरी ने भाँप लिया की नताशा कुछ असहज महसूस कर रही थी।

इससे पहले मंजरी कुछ बोल पाती, शिखा खुद ही बोल उठी।

"ये हमारी भाभी हैं। हमारा भाई ध्रुव डेढ़ साल पहले एक एक्सीडेंट में..." बोलते-बोलते उसका गला भर आया और वो चुप हो गयी।

मंजरी ने बात सुनी और फिर दूर खड़े उस बुज़ुर्ग व्यक्ति की ओर देखने लगी जो बड़ी देर से ये सब बातें सुन रहा था।

"आप?" मंजरी ने सवाल दागा।

"जी मैं कपूर साहब का वकील हूँ इंद्रजीत चड्ढा!" कहते हुए उसे आदमी ने हाथ जोड़ा और मंजरी की तरफ चला आया।

मंजरी ने जवाब में सर हिलाया और सभी की तरफ देखती हुई बोली:

"देखिये अभी पोस्टमॉर्टेम में टाइम लगेगा, तो यहाँ खड़े रहने से कोई फ़ायदा नहीं है। एक काम करते हैं बाहर लॉबी में चल कर बैठते हैं। मुझे आप लोगों से कुछ बात करनी है!"

मंजरी की बात सुन कर नताशा के चेहरे का रंग थोड़ा फीका पड़ गया। पर उसने सभी की तरफ देखते हुए खुद को संभाला और चुपचाप वहाँ से बाहर की तरफ चलने लगी। शिखा ने अपने पति रणधीर को देखा और वो भी वहाँ से चल दी। अपनी बड़ी बहन को जाता देख शिप्रा भी पीछे-पीछे बाहर चली आयी। मनमोहन कपूर के वकील सबसे आखिर में मंजरी के साथ वहाँ से चल दिए।

□□□

हॉस्पिटल लॉबी में उस समय कुछ ख़ास भीड़ नहीं थीं इसलिए मंजरी को इन सभी से बात करने के लिए एक सही जगह मिल गयी। वो सभी एक लंबे से बेंच पर जा बैठे जिसके सामने एक बड़ा सा सोफा लगा हुआ था। मंजरी ने वो सोफा संभाला तो बाकी सभी लोग उस बेंच पर चुपचाप जा बैठे। रौनक सिंह मंजरी के साथ में किनारे खड़ा हो गया और सभी के चहेरे देखने लगा।

शिखा की आँखें रो-रो कर लाल हो चुकी थीं। उसके पति रणधीर का ध्यान मंजरी पर था जो रौनक सिंह की ही तरह सभी के चेहरों को पढ़ने में लगी हुई थी। शिप्रा की आँखों का काजल फैला हुआ था और उसके बाल भी बेतरतीब हो रखे थे। वहीं नताशा अपने नाखूनों को आपस में रगड़ती हुई थोड़ी परेशान सी लग रही थी। सबसे किनारे बैठे इंद्रजीत चड्ढा दीवार पर सर

टिकाये आँखें मूँदे किसी गहरी सोच में डूबे हुए लग रहे थे।

"देखिये जैसा की आप सब जानते हैं मनमोहन जी और बाकी लोग जिन हालात में मिले हैं वो नार्मल नहीं हैं। हालाँकि अभी हमारी इन्वेस्टिगेशन सही से शुरू भी नहीं हुई है, पर मैं इतना कह सकती हूँ की हम इस केस में मर्डर की संभावना से इंकार नहीं कर सकते।"

मंजरी ने वहाँ छायी ख़ामोशी को तोड़ते हुए कहा तो सभी की निगाहें उस पर आ कर रुक गयीं। मंजरी ने एक गहरी साँस ली और अपने कहे गए अलफ़ाज़ का असर देखने लगी।

सबसे पहले उसकी नज़र नताशा पर गयी जिसकी उँगलियाँ अचानक रुक गयीं थीं। कुछ देर पहले तक जो नताशा अपने नाख़ून आपस में रगड़ रही थी, वो अब एकटक मंजरी की तरफ घूरे जा रही थी। शिखा और शिप्रा एक दूसरे की तरफ देखने लगीं थीं, रणधीर का मुँह कुछ बोलने के लिए खुल रहा था और इंद्रजीत चड्ढा की बंद आँखें खुल चुकी थीं।

"मर्डर? लेकिन उन जैसे व्यक्ति को कोई क्यों मारेगा? उनकी तो किसी से भी कोई दुश्मनी नहीं थी!" रणधीर की ज़ुबान पर अटके लफ्ज़ बाहर निकल ही गए।

"माफ़ कीजिये मिस्टर रणधीर पर जहाँ से मैं देख रही हूँ, मुझे लगता है जहाँ शोहरत, रुतबा और पैसा होता है वहाँ जलन, दुश्मनी और नफरत अपने आप पनप जाती है। क्यों चड्ढा साहब, मैंने सही कहा ना?" मंजरी की आँखें रणधीर से होती हुई बुज़ुर्ग वकील पर आ कर जा टिकीं।

वकील चड्ढा ने धीमे से सर हिलाया और नज़रें नीची कर ली।

"पापा ने हमेशा लोगों का अच्छा ही किया है, किसी का भी बुरा नहीं चाहा… हाँ, पर उनसे नफरत करने वालों की कोई कमी नहीं!" शिखा यकायक नताशा की तरफ देखती हुई बोली। उसकी आवाज़ में तंज था जो वहाँ बैठे हर शख्स ने महसूस किया था ।

"मंजरी जी मैं भी आपसे कपूर साहब की वसीयत के बारे में बात करना चाहता हूँ!" वकील चड्ढा ने अपनी बात से सभी का ध्यान अपनी तरफ खींचते हुए कहा।

"हरियाली और सावन, बारिश और बादल ठीक वैसे ही वकील और वसीयत। मैं आपको देखते ही समझ गयी थी की आपका यहाँ होना किस तरफ इशारा करता है!" मंजरी मुस्कुराती हुई बोली।

"वैसे वकील साहब आपका अभी आना थोड़ा अटपटा है।", मंजरी इंद्रजीत चड्ढा को देखते हुए बोली।

"जी चड्ढा अंकल को हमने बुलाया है। वो हमारे वकील ही नहीं फैमिली फ्रेंड भी हैं।" शिखा चड्ढा के बोलने से पहले ही बोल पड़ी।

चड्ढा ने भी सर ऊपर नीचे कर शिखा की बात का अनुमोदन किया।

"अच्छा, आप यहाँ हैं ही तो क्या आप हमें कपूर साहब की वसीयत के बारे में कुछ बता सकते हैं?", मंजरी बोली।

"इस वक्त…" इंद्रजीत चड्ढा यूँ बोला जैसे ये वो हिचक रहा हो।

"जानती हूँ ये सही समय नहीं है लेकिन अगर वसीयत में ऐसा कुछ है जो हमें जानना चाहिए तो हमारी तहकीकात में काफी मदद हो सकती है।"

"मुझे नहीं लगता पापा की वसीयत में ऐसा कुछ होगा जिसकी वजह से कोई उनकी जान का दुश्मन बन जाए!" शिप्रा मंजरी की तरफ देखती हुई बोली। उसकी आवाज़ में तेज़ी थी और एक हल्की बेचैनी भी।

“माफ़ करना शिप्रा बेटी पर शायद तुम्हें मालूम न हो, कपूर साहब ने अभी हाल ही में एक नई वसीयत तैयार करवाई थी।” इंद्रजीत चड्ढा उसकी बात ख़त्म होते ही बोल पड़े।

“व्हाट? नई वसीयत?” शिखा के साथ साथ रणधीर के चेहरे पर भी सवालिया निशान थे।

नताशा ने दोबारा अपने नाखूनों को आपस में रगड़ना शुरू कर दिया था।

“हाँ और उस वसीयत के मुताबिक़...” चड्ढा साहब बोलते बोलते सभी को देखने लगे।

मंजरी अपनी जगह से उठी और उनके करीब आती हुई बोली:

“घबराइए नहीं वकील साहब जो कुछ भी है आप साफ़ साफ़ बोल सकते हैं!”

वकील चड्ढा ने गहरी साँस अंदर ली और जवाब दिया:

“उनकी नई वसीयत के मुताबिक़, उनकी बहू यानी नताशा कपूर को प्रॉपर्टी या किसी भी तरह की चल-अचल संपत्ति से एक पैसा भी नहीं मिलेगा!”

जवाब सुनते ही वहाँ ऐसा सन्नाटा पसर गया जैसे मरघट में होता है। नताशा का चेहरा लाल हो चुका था, तो शिखा और शिप्रा की आँखों में हल्की सी चमक देखी जा सकती थी। सभी की निगाहें नताशा की ओर देख रही थीं।

अचानक नताशा उठी और तमतमाती हुई चिल्लाने लगी।

“मैं जानती थी। इस परिवार से मुझे कभी प्यार और इज़्ज़त मिलने वाली नहीं है। वो तो बस ध्रुव के प्यार में अंधी हो कर मैंने शादी कर ली और अपनी ज़िंदगी भी बर्बाद कर ली!”

यूँ अचानक फूटे उसके गुस्से पर शिखा और शिप्रा सहित रणधीर भी भौंचक्के रह गए थे।

“भाभी ये गुस्सा सिर्फ प्यार और इज़्ज़त न मिलने की वजह से है या वसीयत से बेदखल करने की वजह से ?”शिप्रा तंज कसती हुई बोली तो नताशा गुस्से में और भी काँपने लगी।

मामला गर्माता जा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे सारा कपूर परिवार बारूद के ढेर पर बैठा हो और किसी ने माचिस सुलगा दी हो।

“एक सेकंड आप सब चुप हो जाइए। न ये वक़्त सही है और न ही जगह। किस को क्या मिला है और क्या नहीं मिला इसके बारे में हम आराम से बाद में बात करेंगे। तो अब आप लोग बिना किसी नाटक के चुपचाप अपनी जगह बैठ जाइये!” मंजरी ने बात सँभालते हुए रौबदार आवाज़ में कहा।

इससे पहले की उसकी बात पर अमल होता लॉबी के सामने के दरवाज़े से एक युवक लगभग दौड़ते हुए वहाँ चला आया और नताशा की तरफ देखते हुए बोला:

“नताशा तुम ठीक तो हो न। मुझे अभी-अभी खबर मिली की कपूर अंकल...” सामने मंजरी को देख उसने बात अधूरी ही छोड़ दी।

“आप की तारीफ?” मंजरी को उसका यूँ आना थोड़ा अखर रहा था।

“जी मैं... वो... मेरा नाम कुणाल वर्मा है मैं और नताशा कॉलेज में एक साथ पढ़ते थे!”

उसका जवाब सुनते ही मंजरी ने नताशा की ओर देखा। नताशा के चेहरे पर उभरे भाव उसका हाल बयाँ कर रहे थे। वहीं बाकी सब की आँखों में कुणाल को देख कोई ख़ास ख़ुशी नज़र नहीं आ रही थी।

□□□

अध्याय 5

“तुम्हें वहाँ नहीं आना चाहिए था कुणाल!” नताशा कॉफ़ी का घूँट लेती हुई बोली।

दोनों उस वक़्त एक कॉफ़ी शॉप में बैठे हुए थे। बाहर अब हल्की बूँदाबाँदी शुरू हो चुकी थी। काले बादल आसमान को अपने आगोश में पूरी तरह से ले चुके थे। सर्द हवा ने बदन पर नश्तर चुभाने शुरू कर दिए थे।

नताशा हॉस्पिटल से कुणाल के साथ सीधे यहाँ आ कर बैठ गयी थी। उसे वहाँ देख कर वो कुछ सकपका सी गयी थी पर सबके सामने कुछ ज़ाहिर नहीं करना चाहती थी।

“मैं ख़ुद को वहाँ आने से नहीं रोक पाया नताशा। मुझे जैसे ही अंकल के बारे में पता चला मैं तुम्हारे घर गया और वहाँ जा कर पता चला की तुम यहाँ हो!” कुणाल उसकी आँखों में देखते हुए बोला।

“हाँ, वो मुझे शिखा दीदी का फ़ोन आया था। उन्होंने ही मुझे ये ख़बर दी और यहाँ आने के लिए कहा। हालाँकि, मैं आना तो नहीं चाहती थी पर…!” नताशा बोलते बोलते रुक गयी।

“तुमने वहाँ जा कर सही किया नताशा वरना सब को एक और मौका मिल जाता बातें बनाने का!” कुणाल ने सिगरेट का कश लिया और हवा में धुआँ उड़ाते हुए बोला।

“तुम कब से किसी की परवाह करने लगे कुणाल?” नताशा ने कॉफ़ी का एक घूँट लिया और अपना एक हाथ कुणाल के हाथ पर रखते हुए कहा।

“जब से तुमने मेरी दोस्ती ठुकरा कर कपूर परिवार की बहू बनने का फैसला लिया!” कुणाल संजीदा हो चला था।

नताशा की आँखों में आँसू उतर आये। वो अच्छे से जानती थी कि कुणाल के दिल से उठी ये टीस कितनी पुरानी है। ध्रुव के उसकी ज़िंदगी में आने से कई साल पहले कुणाल उसकी ज़िंदगी में आ गया था। कुणाल और नताशा बचपन के दोस्त थे। दोनों के परिवार आसपास ही रहते थे और इसी वजह से दोनों का एक दूसरे के यहाँ आनाजाना बचपन से ही शुरू हो गया था।

बचपन की दोस्ती बहुत अलग होती है। ना आने वाले कल की फ़िक्र न गुज़रे कल पर कोई शिक़वा शिक़ायत। कितने अलहदा से होते हैं बचपन के वो दिन। हर लम्हे में बेफ़िक्री, ख़्वाब जैसे खुली आँखों से टपकते रहते हैं। ऐसी ही खुली आँखों से कुणाल भी एक ख़्वाब देख बैठा था। नताशा के साथ बचपन की वो दोस्ती उसके लिए कब प्यार में तब्दील हो गयी, खुद कुणाल को भी पता न चला। एक तरफ़ा प्यार की बस यही दिक्कत होती है, दिल से शुरू हो कर ज़हन तक घायल कर देता है।

अंतर्मुखी स्वभाव के कुणाल ने कभी भी अपने दिल की बात नताशा से कहने की जुर्रत नहीं की। नताशा के लिए उसके दिल में पनपने वाले प्यार के बारे में सिर्फ वो ही जानता था। नताशा उसे पसंद करती थी पर सिर्फ एक दोस्त की हैसियत से। वो उसका ख्याल रखती थी सिर्फ एक अच्छे दोस्त की तरह। पर कुणाल के ख्यालों में सिर्फ और सिर्फ नताशा ही बसी हुई थी।

पर होता वही है जो होनी में लिखा होता है। कॉलेज के आखिरी साल में नताशा की यकायक ध्रुव कपूर से हुई मुलाक़ात ने कुणाल के दिल पर ऐसा ज़ख्म दिया, जिससे वो पूरी तरह से कभी भी उभर न पाया।

"तुम ठीक हो न कुणाल?"नताशा उसका हाथ हल्के से दबाते हुए बोली।

कुणाल यादों के भँवर से जैसे अचानक बाहर निकल आया।

"हाँ मैं ठीक हूँ!" वो बस इतना ही कह सका।

"कुणाल मैं जानती हूँ तुम क्या सोच रहे हो। ग़लती मेरी ही है। मैं ही तुम्हारे दिल का हाल ना जान सकी। ध्रुव की मोहब्बत ने मुझ पर ऐसा जादू कर दिया था कि उस वक़्त मुझे कुछ भी समझ न आया।" कहते कहते नताशा की आँखें भर आयीं।

इस दफे कुणाल ने उसका हाथ थाम लिया।

"जो हो गया सो हो गया नताशा, पर मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि मैं आज भी तुम्हारे साथ हूँ और हमेशा रहूँगा!" कुणाल उसकी आँखों में झाँकते हुए बोला।

"थैंक यू कुणाल!" नताशा भरी हुई आँखों से मुस्कुराती हुई बोली।

"वैसे एक बात कहूँ नताशा। बुरा न मानना पर अब तुम पूरी तरह से आज़ाद हो, अब तुम जो चाहो वो कर सकती हो। तुम अपना एक डांसिंग स्कूल शुरू करना चाहती थी ना, मैं तुम्हारा हर ख़्वाब पूरा करने में तुम्हारा साथ दूँगा!" कुणाल की आवाज़ में एक अपनापन था।

नताशा के चेहरे की मुस्कान अचानक गायब हो गयी।

"डांसिंग स्कूल का सपना तो अब बहुत दूर हो गया है मुझसे। मुझे कपूर खानदान से अब एक कौड़ी में भी नहीं मिलने वाली है। जिस चीज़ का डर था वो ही हुआ कुणाल!" नताशा बुरा सा मुँह बनाती हुई बोली।

"मैं तो उसी दिन तुम्हारी ससुर के तेवर देख के समझ गया था कि वो कुछ गड़बड़ ज़रूर करेंगे!" कुणाल कुछ याद करता हुआ बोला।

"किस दिन की बात कर रहे हो?" नताशा ही आवाज़ में हैरानी थी।

कुणाल कुछ पल के लिए ख़ामोश हो गया। वो कुछ सोचने लगा।

"क्या हुआ कुणाल! बताओ न किस दिन की बात कर रह हो तुम?" नताशा बेचैन हो उठी।

"दरअसल नताशा, मैंने तुम्हें पहले बताया नहीं लेकिन एक बार मैं कपूर विला गया था?" कुणाल थोड़ा झिझक कर बोला।

"व्हाट? तुम कपूर विला क्यों गए?" नताशा के हाथ काँपने लगे थे।

"हमारी दोस्ती को लेकर वो पहले से ही खुश नहीं थे नताश। फिर ध्रुव के जाने के बाद मैं नहीं चाहता था कि वो तुम्हें तुम्हारे किसी भी हक़ से महरूम रखें। मैंने उन्हें चेताया भी था कि अगर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई भी नाइंसाफी करी तो उन्हें उसका अंजाम भुगतना पड़ेगा!"

"नहीं! तुम ऐसा कैसे कर सकते हो कुणाल? तुमने मुझे ये बात पहले क्यों नहीं बतायी?" नताशा की आँखों में ख़ौफ़ उतर आया था।

"एक तरफ़ा ही सही नताशा पर, मैंने बड़ी शिद्दत से तुम्हें दिल से प्यार किया है। मेरे प्यार से खिलवाड़ करने का अंजाम कपूर परिवार ने आख़िर देख ही लिया। मैंने जो दिल से चाहा आख़िर वो हो ही गया… मेरा मक़सद आख़िर पूरा हो ही गया!" कहते हुए कुणाल की आँखों में ख़ून उतर आया था। उसकी आँखों में वहशत साफ़ देखी जा सकती थी।

□□□

सर्दी अपनी चरम सीमा पर थी। रह रह कर होती बारिश ने मुश्किलें और बढ़ा रखी थीं। सड़कों पर लबालब भरे पानी और ठंडी हवाओं ने हर किसी का हाल बुरा कर रखा था। मंजरी और उसकी टीम की मुश्किलें तो अभी शुरू ही हुई थीं। वो ये नहीं जानते थे की आने वाले दिनों में उन्हें और कैसी-कैसी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। मीडिया से ले कर आम आदमी तक सभी की ज़ुबान पर कपूर विला केस ही था। पुलिस की कार्यशैली पर सवालिया निशान लगाने के लिए हर कोई तैयार बैठा था।

खुद मंजरी को कई बार सीनियर अधिकारियों के कई फ़ोन आ चुके थे। जबकि वो ये खुद भी जानते थे की इतनी जल्दी किसी केस में कोई एहम सुराग नहीं मिलता पर पुलिस सिस्टम ही कुछ ऐसा था कि नतीजे तक पहुँचना ही सभी का एक मात्र उद्देश्य बनता जा रहा था।

“मैडम पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आ गयी है!” रौनक सिंह ने भूरा बड़ा सा लिफाफा मंजरी की मेज पर रखते हुए कहा। उसकी आवाज़ में हल्का सा उत्साह महसूस किया जा सकता था।

मंजरी ने देखते ही वो लिफाफा लपका और बिना उसकी तरफ देखे उसे खोलने लगी। रौनक सिंह वहीं खड़ा-खड़ा बेसब्री से रिपोर्ट के खुलने का इंतज़ार करने लगा।

“व्हाट?”, रिपोर्ट पढ़ते हुए मंजरी के मुँह से निकला।

“क्या हुआ मैडम जी! सब ठीक तो है?” रौनक सिंह उसकी परेशानी भाँपकर बोला।

“रौनक सिंह डॉक्टर को फ़ोन लगाओ, मुझे उनसे इसी वक़्त बात करनी है!”मंजरी ने बिना उसकी बात का जवाब दिए उसे अगला आदेश सुना दिया।

रौनक सिंह मंजरी का मूड भाँपते हुए किसी भी तरह की लापरवाही नहीं करना चाहता था। उसने बिना वक़्त गँवाए डॉक्टर का नंबर मिलाया और मोबाइल मंजरी के हाथ में थमा दिया।

“डॉक्टर अवस्थी एसीपी मंजरी गोपालगंज थाने से। वो कपूर विला केस के सिलसिले में आपसे मुलाक़ात हुई थी। अभी-अभी आपकी रिपोर्ट मिली है पर मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा की ये सब चल क्या रहा है?” उसकी आवाज़ में गुस्सा झलक रहा था।

“देखिये मैडम, जो पोस्टमॉर्टम में आया है वही उस रिपोर्ट में लिखा है। मैंने अपनी तरफ से तो कुछ लिखा नहीं है!” डॉक्टर अवस्थी ने गहरी साँस लेते हुए जवाब में कहा।

जवाब सुन कर मंजरी कुछ बौखला सा गयी।

“डॉक्टर अवस्थी देखिये ये एक बहुत हाई प्रोफाइल केस है। ये बात आप भी अच्छे से जानते हैं। वैसे ही मुश्किलें काफी हैं और अब अगर आपकी इस रिपोर्ट को आधार मान कर मैं इस केस में आगे बढ़ी तो हम सभी के लिए मुश्किलें और बढ़ जाएँगी।” मंजरी उसे हिदायत देती हुई बोली।

“मैं समझ नहीं आ पा रहा मैडम आप इतना परेशान किस चीज़ को ले कर हैं? हमारी टीम कोई पहली बार तो पोस्टमॉर्टम कर नहीं रही, हमारे यहाँ आये दिन ऐसी कितनी ही लाशें लायी जाती हैं… हाँ, ये अलग बात है की ये केस हाई प्रोफाइल है पर, यकीन मानिये हमारी तरफ से कोई भी कोताही नहीं बरती गयी है!” इस बात डॉक्टर की आवाज़ कुछ नरम थी।

“आपकी रिपोर्ट के मुताबिक़ इन तीनों की मौत दम घुटने से हुई है, इन सभी को इंटरनल ब्लीडिंग भी हुई है पर, यूँ अचानक एक के बाद एक तीनों को इंटरनल ब्लीडिंग हुई कैसे?” मंजरी ने सवाल दागा।

“देखिये मैं खुद आप ही की तरह हैरान हूँ, मुझे खुद समझ नहीं आ रहा की ऐसा कैसे हुआ? पर इतना ज़रूर है की इनके पेट के अंदरूनी हिस्से में घाव हैं जिनकी वजह से ब्लीडिंग हुई है। इन सभी की फ़ूड पाइप यानी खाने की नली पर भी घाव हैं पर ये किसी चीज़ से हुए, ये समझ नहीं आ रहा।”

“आपके हिसाब से ये क्या हो सकता है?” मंजरी माथे पर उँगलियाँ फेरती हुई बोली। उसकी परेशानियाँ बढ़ती ही जा रही थी।

“एसीपी मैम इन सभी के पेट में इतना एसिड मिला है कि सही से टेस्ट करना भी मुमकिन नहीं हो रहा था!” डॉक्टर अपनी मुश्किल बयाँ करता हुआ बोला।

“एसिड? कैसा एसिड?” मंजरी कुर्सी पर खड़ी होती हुई बोली।

“स्टमक एसिड यानी हमारे पेट में जो एसिड बनता है वो। अमूमन एसिड हम सभी के पेट में होता है पर जब ये बढ़ जाए तो दिक्कत होती है जैसे पेट में जलन, अपच ये सब प्रॉब्लम। पर इन तीनों लाशों में इस एसिड की मात्रा ज़रूरत से ज़्यादा दिख रही है और ये समझ नहीं आ रहा कि एक साथ इतना एसिड पेट में जमा कैसे हो गया?” डॉक्टर अवस्थी ने बात ख़त्म करते हुए कहा।

“डॉक्टर आपके मुताबिक़ आपको इस केस में कोई गड़बड़ नज़र आती है?” मंजरी का अगला सवाल तैयार था।

“मैडम मैंने अपने मेडिकल करियर में ऐसा केस पहले कभी नहीं देखा!” डॉक्टर अवस्थी ने अपनी मज़बूरी बताते हुए कहा।

मंजरी ने धीमे से सर हिलाया और बोली :

“ओके डॉक्टर! अगर कुछ और ज़रूरत हुई तो आपसे कॉन्टैक्ट करूँगी… थैंक यू!” कहते हुए उसने फ़ोन काट दिया।

फिर उसने एक नज़र उठा कर रौनक सिंह की ओर देखा। वो चुपचाप वहाँ खड़ा डॉक्टर और मंजरी की बातें सुन रहा था।

“मैडम, क्या पता ये फ़ूड पोइज़निंग का मामला हो?” रौनक सिंह ने डरते डरते अपनी तरफ से सुझाव दिया।

मंजरी ने उसकी बात ध्यान से सुनी और फिर कुछ सोचने लगी। उसके दिमाग में कई सारे सवाल एक बाद एक हलचल कर रहे थे।

“अगर एक मिनट के लिए हम ये मान भी लें की ये फ़ूड पोइज़निंग का मामला है तो भी एक सवाल है जो अपना जवाब ढूँढ रहा है और वो ये है कि कपूर विला में सिंक में मिली वो चौथी प्लेट और गिलास किसके लिए था? अभी तक हमें फॉरेंसिक रिपोर्ट भी नहीं मिली है!” मंजरी ने बात ख़त्म ही करी थी कि तभी केवल राम ने एक और लिफाफा उसकी तरफ बढ़ा दिया।

“मैडम आ गयी फॉरेंसिक रिपोर्ट भी!” उसने लिफाफा मंजरी को देते हुए कहा और वो भी वहीं खड़ा हो गया।

मंजरी ने जल्दी सी लिफाफा खोला और रिपोर्ट पढ़ने लगी।

हर बदलते पन्ने के साथ मंजरी के चेहरे के भाव भी बदलते जा रहे थे।

“लगता है अगाथा क्रिस्टी ने मेरा इम्तेहान लेने का पूरा इरादा बना लिया है!” मंजरी रिपोर्ट एक तरफ रखती हुई बोली।

“सब ठीक है ना मैडम?” रौनक सिंह केवल राम और मंजरी दोनों की तरफ देखते हुए बोला।

“अब क्या बोलूँ। रिपोर्ट के मुताबिक़ उस चौथे प्लेट और गिलास पर किसी के भी निशान नहीं मिले हैं!” मंजरी ने जवाब में कहा तो रौनक सिंह के साथ साथ केवल राम का भी चेहरा उतर गया।

“कोई निशान नहीं मतलब? ऐसा कैसा हो सकता है मैडम जी?”दोनों ने एक साथ सवाल किया।

“ये तो कुछ भी नहीं आगे सुनो, मिस्टर कपूर के बैडरूम में जो दरवाज़ा है उसके अंदर लगे हैंडल पर मनमोहन कपूर की ही उँगलियों के निशान हैं, और ऐसा ही कुछ सोनाली के बैडरूम के दरवाज़े पर भी है। यानी वहाँ भी दरवाज़े के अंदर की तरफ लगे हैंडल पर सोनाली की ही उँगलियों के निशान हैं!” मंजरी रिपोर्ट उठा कर हवा में लहराती हुई बोली।

“इसका मतलब कपूर साहब और सोनाली दोनों ने कमरा अंदर से बंद किया था और उसके बाद ही उनकी मौत हुई है!” केवल राम अपना दिमाग दौड़ाते हुआ बोला।

मंजरी के साथ साथ उन दोनों का भी दिमाग चकराने लगा था। केस शुरुआत से ही उलझता जा रहा था और उन्हें अभी तक कहीं कोई ऐसा सुराग भी नहीं मिल सका था जो इस केस की असलियत सामने रख सके।

“हम जहाँ से शुरू हुए थे वापस वहीं आ पहुँचे हैं। वो चौथी प्लेट और गिलास किसके लिए रखा गया था और उसपर उँगलियों के कोई निशान क्यों नहीं हैं?” मंजरी ने जैसे खुद से ही सवाल किया औरएक बार फिर फॉरेंसिक रिपोर्ट उठाकर उसे गौर से पढ़ने लगी।

□□□

अध्याय 6

शहर के बीचों बीच मौजूद एक तीन मंज़िला इमारत की सबसे ऊपर की मंज़िल पर था वकील इंद्रजीत चड्ढा का ऑफिस। इंद्रजीत चड्ढा शहर के जाने माने वकील थे और पिछले चालीस साल से इस पेशे में थे। अपने काम के लिए समर्पित और अपने पेशे को भगवान का दर्जा देने वाले वकील चड्ढा बहुत ही नरम दिल इंसान भी थे। लोग तो यहाँ तक बोलते थे की वो इस पेशे के लिए बने ही नहीं हैं क्यूँकि इस पेशे में थोड़ा चालाक और तेज़ व्यवहार वाला व्यक्ति ही उतर सकता है और इंद्रजीत चड्ढा में यह दोनों ही खूबियाँ नहीं थीं।

चमकदार सफ़ेद कमीज और काला कोट पहने वकील चड्ढा अपने ऑफिस में बैठे किसी फाइल में व्यस्त थे। उस समय उनके नीचे काम करने वाले दो युवा वकील सामने की कुर्सी पर बैठ कर उनसे डिक्टेशन ले रहे थे जब उनके दरवाज़े पर दस्तक हुई।

“यस कम इन!” उन्होंने अपना पेन फाइल पर टिकाते हुए ऊपर नज़र उठाई तो देखा सामने ऑफिस का चपरासी खड़ा था।

“सर एसीपी मंजरी गोपालगंज थाने से आयी हैं। वो आपसे मिलना चाहती हैं!”

“हाँ, अंदर बुलाओ उन्हें!” वकील चड्ढा ने दोनों युवा वकीलों को बाद में आने के लिए इशारा किया और अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए।

आगे ही पल मंजरी ने उनके ऑफिस में प्रवेश किया और ज़रूरी दुआ सलाम के बाद सामने की कुर्सी पर बैठ गयी।

“कहिये एसीपी मैडम मैं आपकी क्या हेल्प कर सकता हूँ!” वकील चड्ढा अपना काम छोड़ कर मंजरी की ओर देखते हुए बोले।

मंजरी ने एक नज़र ऑफिस की दीवारों पर घुमायी। हर तरफ वकील चड्ढा की तस्वीरें सजी हुई थीं। तकरीबन हर तस्वीर में वो किसी नामचीन हस्ती के साथ ही नज़र आ रहे थे।

“आप तो बहुत पहुँचे हुए लग रहे हैं चड्ढा साहब!” मंजरी ने मुस्कुराते हुए पूछा तो चड्ढा साहब झेंप गए।

“नहीं नहीं मैडम, ऐसी कोई बात नहीं। अब इतने सालों से इस पेशे में हूँ तो थोड़ी बहुत जान पहचान हो ही गयी है!” चड्ढा साहब मन ही मन फूले नहीं समा रहे थे पर, मंजरी के सामने अलग तरह से पेश आ रहे थे। वकील थे तो हर तरह का लबादा तो ओढ़ना ही था उन्हें भी।

“कपूर परिवार को कब से जानते हैं? क्या बता सकते हैं उनके बारे में?” मंजरी ने बिना बात घुमाये सवाल पेश किया।

वकील साहब कुछ देर के लिए सोच में पड़ गए। फिर हवा में ताकते हुए उन्होंने जवाब दिया:

“जी कोई बीस बाईस साल तो हो ही गए होंगे मनमोहन कपूर जी से मेरी पहली मुलाक़ात हुए।”

“और फिर ये दोस्ती इतनी गहरी हो गयी की कपूर साहब ने अपना वसीयतनामा बनाने की

ज़िम्मेदारी भी आप ही को सौंप दी!" मंजरी ने धीमे से सर हिलाते हुए कहा।

"जी हाँ, वो अपनी ज़मीन जायदाद से संबंधित ज़्यादातर फैसले मुझसे सलाह मशवहरा ले कर ही करते थे!" वकील चड्ढा की छाती ये बोलते हुए दो इंच चौड़ी हो चुकी थी।

"इसका मतलब नताशा को वसीयत से बाहर करने का फैसला भी उन्होंने आप ही पूछ कर लिया होगा?" मंजरी ने अपने तरकश का पहला बाण चलाया।

सवाल सुन कर वकील साहब कुछ देर के लिए चुप हो गए मानो जवाब हवा में तलाश रहे हों।

"जी ऐसी बात नहीं है पर, कपूर साहब ने मुझे पहले ही बता दिया था कि वो क्या करने जा रहे हैं!" वकील साहब को आखिर जवाब मिल ही गया।

"और क्या मैं जान सकती हूँ की ऐसा आखिर क्यों किया उन्होंने? क्यों अपनी ही बहू को अपनी वसीयत से बाहर कर दिया?" मंजरी के पास सवालों की झड़ी थी।

चड्ढा साहब ने सामने पड़े गिलास से पानी का एक घूँट अपने गले के नीचे उतारा और बोले:

"ध्रुव की मौत के बाद नताशा का उस परिवार से कोई वास्ता नहीं रह गया था!"

मंजरी ने अपनी कुर्सी पीछे खिसकायी और अपने पाँव सीधे करती हुई बोली:

"मैं कपूर परिवार के बारे में सब जानना चाहती हूँ!"

वकील साहब ने अपने चपरासी को अंदर आने के लिए बेल बजायी और दो कप चाय लाने का इशारा किया। वो अच्छे से समझ चुके थे की मंजरी वहाँ से जल्दी जाने वाली नहीं है।

"क्या जानना चाहती हैं आप कपूर परिवार के बारे में?" वकील साहब ने मंजरी की ओर देखते हुए पूछा।

"सब कुछ!" मंजरी ने नपा तुला जवाब दिया।

वकील चड्ढा ने अपनी कमीज का सबसे ऊपर का बटन ढ़ीला किया और एक लंबी साँस लेते हुए शुरू हो गए।

"मनमोहन कपूर ने पाई पाई जोड़कर पूरी ईमानदारी और मेहनत के साथ ये अपना साम्राज्य खड़ा किया था मैडम। कपूर साहब और भाभी जी मेरा मलतब उनकी धर्मपत्नी योगिता जी बहुत ही निश्छल स्वभाव के थे। दोनों ही छल कपट से दूर बस अपने काम से मतलब रखने वालों में से थे। योगिता भाभी ने कपूर साहब के लिए बहुत कुर्बानी दी। एक तरह से वो उनका साया बन के हर वक़्त उनके साथ रहीं। कपूर साहब और योगिता जी के चारों बच्चे ध्रुव, शिखा, शिप्रा और सोनाली भी बहुत तमीज़दार निकले। वो बड़ों का लिहाज़, छोटों से प्यार से पेश आते थे। कुल मिला कर परिवार में सभी लोग एक दूसरे से मिलजुल कर ही रहा करते थे। फिर ध्रुव की शादी के बाद सब कुछ बदल गया!"

वकील चड्ढा ने एक ही साँस में काफी कुछ बता दिया।

"बदल गया मतलब?" मंजरी ने पूछा।

"दरअसल ध्रुव ने अपने परिवार के ख़िलाफ़ जा कर नताशा से शादी करी थी। उसने नताशा को कहीं देखा था और तभी से वो उसका दीवाना हो गया था। पर नताशा के परिवार और कपूर खानदान की हैसियत में ज़मीन आसमान का फर्क था और यही फर्क मनमोहन कपूर को नापंसद था। ऐसा नहीं की उन्हें अपने से कम हैसियत वालों से कोई नफरत थी पर, वो अपनी बहू के रूप में नताशा जैसी लड़की को नहीं देखना चाहते थे।" वकील चड्ढा ने बात आगे बढ़ाते हुए जवाब दिया।

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

यदि आप दुर्लभ , प्रेरणादायक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों

और अनुवादित साहित्य की खोज में हैं,

तो हमारे विशेष 📲 टेलीग्राम चैनल से जुड़ें

और अनमोल साहित्य का आनंद लें।

📖 हमारे चैनल में आपको मिलेगा:

📚 अद्वितीय और दुर्लभ उपन्यास (Novels)

💡 प्रेरणादायक पुस्तकें (Motivational Books)

🕉️ धार्मिक ग्रंथ और किताबें

🌎 विभिन्न भाषाओं में अनुवादित साहित्य

📜 बेहतरीन पत्रिकाएं (Magazines)

🎁 और अन्य दुर्लभ साहित्यिक खज़ाने

🔔 कृपया "Join Now" बटन या लिंक पर Click करें!

HINDI BOOKS CHANNEL

Join Now▶️ (धार्मिक, आजादी, इतिहास...से सबंधित)

https://t.me/Hindi_Books_Library

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

(नई, पुरानी किताबों के लिए)

Join Now 📒

https://t.me/Book_Hindi

ENGLISH BOOKS CHANNEL

Join Now 📗

https://t.me/Google_Ebooks

Join Now 📙

https://t.me/English_Library_Books

(ALL CHANNEL LINKS)

Join Now 📘

https://t.me/Hindilibrary

"फिर?" मंजरी की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी।

"फिर वही हुआ जो होनी को मंज़ूर था! ध्रुव ने मंदिर में जा कर नताशा से शादी कर ली और बाद में कोर्ट मैरिज भी कर ली। और इस तरह नताशा कपूर परिवार की बहू बन ही गयी!" चड्ढा साहब ने एक बार फिर पानी का घूँट लिया और मंजरी को देखने लगे।

"नताशा के घर के बाकी लोगों के साथ कैसे रिश्ते थे?" मंजरी ने अगला सवाल दागा।

"देखिये जहाँ तक मैं जनता हूँ और जितना कपूर साहब ने मुझसे ज़िक्र किया था, नताशा का छोटे लोगों के साथ उठना बैठना किसी को भी पसंद नहीं था। वो अपना कोई डांसिंग स्कूल भी शुरू करना चाहती थी पर, कपूर साहब और भाभी जी दोनों ही इसके सख़्त ख़िलाफ़ थे।" चड्ढा ने बताया।

"आपको लगता है कि सिर्फ यही वजह है जिसके चलते मनमोहन कपूर ने नताशा को वसीयत से बाहर कर दिया?" मंजरी कुछ सोचती हुई बोली।

"लगभग डेढ़ साल पहले एक सड़क हादसे में हुई ध्रुव की मौत ने उन्हें बुरी तरह से तोड़ दिया था। ध्रुव की मौत के बाद नताशा एक बार अपने मायके क्या गयी फिर वापस आयी ही नहीं। बस तभी से इन लोगों का नताशा से मनमुटाव चल रहा था!" चड्ढा बोला।

"कपूर परिवार के बाकी सदस्यों के बारे में क्या जानते हैं?" मंजरी इत्मीनान से हर एक पहलु पर गौर करती जा रही थी।

चाय आ चुकी थी। चड्ढा ने चाय का गिलास उसकी तरफ बढ़ाया और साथ ही बिस्किट के प्लेट भी आगे सरकाते हुए बोले:

"लगभग दो साल पहले ही शिखा की शादी रणधीर से हुई है। रणधीर यूँ तो एक मध्यमवर्गीय परिवार का लड़का है पर मेहनती है और फिर शायद कपूर साहब ध्रुव और नताशा वाले किस्से को दोहराना नहीं चाहते थे इसलिए जब उन्हें वो रिश्ता आया तो वो मान गए। रणधीर अपना एक स्टार्टअप शुरू करना चाहता था जिसके लिये कपूर साहब उसकी मदद कर रहे थे।"

"हम्म!" मंजरी ने गर्मागर्म चाय का घूँट लिया और कुछ सोचने लगी ।

"दूसरी बेटी शिप्रा नज़दीक के शहर में एक कॉलेज में पढ़ाती है और अभी उसकी शादी नहीं हुई है!" चड्ढा ने आगे बताया।

"हम्म.... और सोनाली अभी कॉलेज में ही पढ़ रही थी, है ना?" मंजरी ने पूछा।

"जी पर आपको कैसे पता?" चड्ढा साहब के चेहरे पर हैरानी थी।

"उनके पड़ोसी ने बताया था!" मंजरी ने बात ख़त्म की और उठ खड़ी हुई।

"चलती हूँ चड्ढा साहब... थैंक यू सो मच! अगर और कुछ ज़रूरत हुई तो आपको दोबारा याद करूँगी!" मंजरी ने चड्ढा से हाथ मिलाया और कमरे से बाहर निकल आयी।

□□□

रात का दूसरा पहर चल रहा था जब कुलभूषण चावला का मोबाइल घनघना उठा। कुछ देर तक बेल बजती रही क्यूँकि चावला साहब उस वक़्त काले अँधेरे में मुँह छुपाये अपनी अन्य ज़रूरतों को पूरा करने में लगे हुए थे।

अक्सर ऐसे काले अँधेरे में चावला जैसे इंसानों का असली चेहरा सामने आ ही जाता है। वो युवती भी उस वक़्त चावला का ऐसा ही घिनौना चेहरा बहुत नज़दीक से देख रही थी। चावला

जिस बेदर्दी से उसके जिस्म से खिलवाड़ कर रहा था, ऐसा लग रहा था जैसे उसके सामने जीती जागती कोई लड़की नहीं बल्कि रुई की कोई गुड़िया हो। साथ के टेबल पर पाँच सौ के नोटों की दो गड्डियाँ पड़ी हुई थीं। चावला की नज़रों में उस लड़की की आबरू की वो कीमत बहुत थी। कुछ देर तक जब मोबाइल लगातार बजता रहा तो कुढ़ते हुए चावला बिस्तर से नीचे उतरा और साथ रखे टेबल पर हाथ मारते हुए मोबाइल उठा लिया।

"ये कोई टाइम है फ़ोन करने का? तुम लोग यार आदमी को चैन से सोने भी नहीं देते!" चावला ने फ़ोन पर किसी को झिड़कते हुए कहा तो दूसरी तरफ़ से किसी के हँसने की आवाज़ स्पीकर पर सुनाई पड़ी।

"रात के इस वक़्त में तुम कितने चैन से सो रहे होंगे मैं अच्छे से जानता हूँ चावला साहब। बिल्लू रामपुरिया से कुछ भी छुपा नहीं है!" एक बेहद गहरी आवाज़ ने चावला की बात का जवाब देते हुए कहा।

"फोन क्यों किया है, ये बोल?"चावला अपने जिस्म का पसीना पोंछते हुए बोला।

"मेरी बाकी की पेमेंट?" बिल्लू रामपुरिया अब संजीदा हो चला था।

"अरे, तो मैं कौन सा कहीं कोई भागे जा रहा हूँ। मिल जायेंगे तेरे पैसे… तू तो ऐसे बोल रहा जैसे पहली बार मैंने तुझे कोई काम दिया होगा!" चावला बिस्तर से उठा और खिड़की के पास चला आया। उसने नीचे नज़र डाली तो दूर-दूर तक नीम अँधेरे के सिवा उसे वहाँ कुछ भी नज़र ना आया।

"भागने तो बिल्लू रामपुरिया किसी को भी ना देता चावला साहब। मेरे रामपुरी चाकू की नोक का पता है ही तुमको!" बिल्लू ने एक बार फिर धमकी भरे लहज़े में कहा तो चावला का पारा चढ़ गया।

"तू चावला को धमका रहा है? चावला को? बिल्लू! ये मत भूल कि तेरे सर पर जिसका हाथ है ना वो मंत्री देवीप्रसाद, उसकी कुर्सी मेरे ही भेजे गए नोटों पर खड़ी है। दो चार एमएलए इधर उधर हुए और सरकार गिरी ना, तो मंत्री जी की कुर्सी भी जाएगी और तेरे सर से उनका हाथ भी!" चावला की आँखों में गुस्सा उतर आया था।

"हा हा हा हा! बड़े दूर चले गए चावला साहब तुम तो! बिल्लू को आज तक किसी ने धमकी नहीं दी है!" बिल्लू फ़ोन पर दहाड़ा।

"ये धमकी नहीं है बिल्लू, बस समझा रहा हूँ कि मुझमें और बाकी लोगों में बहुत फर्क है। कुलभूषण चावला आज जिस मुकाम पर है उस तक पहुँचने के लिए उसने बहुत सालों तक मेहनत और इंतज़ार किया है, तो मेरे साथ ऐसी बातें दोबारा मत करना। तुझे तेरा पैसा मिल जाएगा ज़रा रुक जा। ये मत भूल जो काम मैंने तुझे दिया था वो… "

बिल्लू उसकी बात बीच में ही काटते हुए बोल पड़ा:

"कपूर मर गया, तुम्हारा काम पूरा हो गया चावला बाबू। तुमने उसके नाम की सुपारी मुझे दी थी और तुम तो मेरा उसूल जानते ही हो, एक बार जो पैसा मेरे पास आ गया वो मेरा ही हो जाता है!" बबलू रामपुरिया एक बार फिर गरजा।

"बिल्लू इसके बाद मुझे फोन मत करना। तुझे तेरा बाकी का पैसा दो दिन में मिल जायेगा। याद रख जितनी ज़रूरत मुझे तेरी है, उतनी ही तुझे भी मेरी है इसलिए कायदे में रह कर फायदे

की बात सोच। कपूर के बाद अब मैं ही हूँ जो इस शहर का सबसे बड़ा कारोबारी है और हर बड़े इंसान के पास पैसा और ताक़त दोनों ही होती हैं।” कुलभूषण चावला ने इस बार आराम से अपनी बात बिल्लू के सामने रखते हुए जवाब दिया।

“ठीक है चावला साहब, परसों तक मुझे मेरे पैसे मिल जाने चाहिए वरना परसों एक बार फिर इसी वक़्त तुम्हें दोबारा फ़ोन करूँगा और तुम्हारा मज़ा खराब कर दूँगा! हा हा हा हा हा!” बिल्लू फ़ोन पर हँसता हुआ बोला और फिर उसने फ़ोन काट दिया।

अचानक कुछ सोचकर चावला दौड़ता हुआ एक बार फिर खिड़की के सामने पहुँचे और नीचे देखने लगा। नीचे सुनसान सड़क पर एक लैंप पोस्ट के नीचे बिल्लू रामपुरिया खड़ा ऊपर की तरफ देखते हुए उसे घूर रहा था। कुलभूषण चावला उसे वहाँ देख कर हैरान था। वहीं नीचे खड़े बिल्लू के मुँह पर कुटिल सी मुस्कान थी। बिल्लू ने नीचे खड़े-खड़े अपनी जेब से चमचमाता हुआ तीखी नोक वाला एक रामपुरी चाकू निकला और उसे हवा में ऊपर की ओर इशारा करते हुए लहराने लगा। चावला गुस्से भरी आँखों से उसे देखे जा रहा था। बिल्लू ने चाकू की नोक को अपने होंठों से चूमा और मुस्कुराता हुआ वहाँ से निकल गया।

□□□

अध्याय 7

“कुछ पता चला सुधीर चौधरी से कपूर परिवार के बाकी लोगों के बारे में?” रौनक सिंह और केवल राम को अपनी तरफ आता देख मंजरी ने टेबल पर रखी फाइल को किनारे किया और अपनी उँगलियाँ मोड़ती हुई बोली।

वकील इंद्रजीत चड्ढा से मिलने के बाद उसने मनमोहन कपूर के पड़ोसी से पूछताछ की ज़िम्मेदारी उन दोनों को सौंपी थी। हादसे के दो दिन बीत जाने के बाद भी उन्हें अब तक कोई ऐसा सुराग नहीं मिला था जिसके भरोसे वो आगे बढ़ सकते। सही मायने में पुलिस अभी तक अँधेरे में ही तीर चला रही थी।

“मैडम जी सुधीर चौधरी से बातचीत तो हुई पर ऐसा कुछ ख़ास मिला नहीं!” केवल राम रौनक सिंह की तरफ देखता हुआ बोला।

“जी मैडम जी। उसने बस यही बताया की कपूर साहब की बहू अब उनके साथ नहीं रहती!” रौनक सिंह ने बात आगे बढ़ाते हुआ कहा।

“ये तो हमें भी पता है इसमें नया क्या है?” मंजरी खीजती हुई बोली।

रौनक सिंह ने एक नज़र फिर से केवल राम की तरफ देखा और फिर बोला:

“हाँ मैडम जी। एक बात ज़रूर कही थी उसने कि एक रोज़ कुणाल वहाँ आया था। वो ही लड़का जो हॉस्पिटल में नताशा मैडम को देखने आया था। सुधीर चौधरी ने बताया की कुणाल बहुत गुस्से में था और कपूर साहब से उसका झगड़ा भी हुआ था!”

“हम्म... पता करो ज़रा इस कुणाल के बारे में। कौन है, कहाँ रहता है, क्या करता है? मुझे इसकी पूरी जन्म कुंडली ला कर दो!” मंजरी ने अगला आदेश जारी करते हुए कहा।

“ठीक है मैडम। मैं जल्दी से जल्दी आपको कुणाल के बारे में जानकारी ला कर दे दूँगा!” रौनक सिंह मंजरी की हाँ में हाँ मिलाता हुआ बोला।

“देखो, एक बात कान खोल कर सुन लो। हमारे ऊपर इस केस को लेकर बहुत दबाव है। क्यूँकि मनमोहन कपूर एक बड़ा नाम था इसलिए सभी की निगाहें इस केस पर लगी हुई हैं और हम अभी तक कुछ भी प्रोग्रेस नहीं कर पाएँ हैं इस केस को लेकर।” मंजरी की आवाज़ हल्का सा गुस्सा था।

वो अपनी कुर्सी से उठी और कमरे में चहलकदमी करने लगी। अचानक वो रुकी और उन दोनों की तरफ देखते हुए बोली:

“फॉरेंसिक टीम को उस चौथी प्लेट और गिलास पर कोई भी निशान नहीं मिले, पर वो वहाँ बिना वजह तो रखी नहीं गयी होगी? तीन लोगों के रात के खाने पर चार प्लेट कौन रखता है?” मंजरी उनसे ज़्यादा खुद से ये सवाल कर रही थी।

“कपूर विला का गेट भी पहले से खुला हुआ था। इसके दो मतलब हो सकते हैं। या तो मनमोहन कपूर, उनकी बीवी और उनकी बेटी गेट बंद करना भूल गए होंगे या फिर वो चौथा

शख़्स, जो कोई भी वो है, इस वारदात को अंजाम दे कर वहाँ से निकल गया और अपने पीछे गेट खुला छोड़ गया।" रौनक सिंह अपना दिमाग चलाते हुए बोला।

"हाँ, ऐसा हो सकता है। पर एक बात ये भी है रौनक सिंह जी कि हमें जब उन तीनों की लाशें मिली तो उनका कमर अंदर से बंद था। बंद कमरे से बाहर जाने के लिए जो जाली लगी खिड़की थी वो भी अंदर से बंद थी। अगर हम इस हादसे में किसी क़ातिल को ढूँढ रहे हैं तो फिर एक क़ातिल कैसे उस बंद कमरे में आ कर क़त्ल करके बाहर आ सकता है जबकि वो कमरा अंदर से बंद था और खिड़की भी अंदर से बंद थी?" मंजरी अपना सर हिलाती हुई बोली।

"आपका लगता है ये क़त्ल का केस हैं मैडम जी?" केवल राम की आँखें हैरानी से फ़ैल चुकी थी।

"दौलत, शोहरत और बड़ा नाम ये तीन चीज़ें काफी होती हैं अपने पीछे दुश्मनो की लंबी क़तार लगाने के लिए!" मंजरी मुस्कुराती हुई बोली।

"मैंने आस पास हर तरफ देखा था मैडम जी। वहाँ कहीं कोई सीसीटीवी कैमरा भी नहीं लगा था जिससे कि कुछ मदद मिल सके।" इस बार केवल राम ने बात शुरू करते हुए कहा।

"सुधीर चौधरी के मुताबिक़ घर का पुराना नौकर हादसे से तीन दिन पहले अपने गाँव चला गया था!" रौनक सिंह कुछ याद करते हुए बोला।

"तुम तो बोल रहे थे कि कुछ ख़ास बात हाथ नहीं लगी, रौनक सिंह। ये बात कोई मामूली तो नहीं है। क्या पता वो नौकर भी इस सब में मिला हुआ हो?" मंजरी रौनक सिंह को घूरती हुई बोली।

"मैडम जी मैं उस नौकर की भी कुंडली ले आया हूँ। वो यहीं पास के गाँव का रहने वाला है। उसके गाँव में कुछ बीमारी फैली हुई थी इसलिए वो अपने घरवालों को देखने वहाँ गया था।" रौनक सिंह ने मंजरी की बात का जवाब देते हुए कहा।

"पता करो वो अभी भी गाँव में ही है क्या? और हाँ, पूछताछ करो उससे भी!" मंजरी ने एक और आदेश पारित करते हुए कहा।

"ओके मैडम जी!" रौनक सिंह ने कहा और कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

मंजरी अभी भी कमरे में चहलकदमी कर रही थी। इस केस में कहीं तो कुछ ऐसा था जहाँ उसकी नज़र नहीं पड़ी थी। उसका शातिर दिमाग तेज़ी से चल रहा था। वो अंदर ही अंदर सभी तथ्यों को सामने रख गुणा भाग में लगी हुई थी।

केवल राम और रौनक सिंह अपनी अपनी कुर्सी पर चले आये थे। रौनक सिंह मंजरी के दिए हुए आदेश को पूरा करने की तैयारी में ही था कि मंजरी उसकी कुर्सी पर चली आयी।

"तुम भी यहाँ आओ!" उसने केवल राम की ओर इशारा करते हुए कहा।

केवल राम वहाँ चला आया।

"फोरेंसिक जाँच से तो हमें कुछ हाथ नहीं लगा। मैं सोच रही हूँ क्यों ना वहाँ मौजूद चीज़ों पर और तीनों लाशों पर डीएनए टेस्ट करवा के देखा जाए।" मंजरी की आँखों में अलग सी चमक थी।

ऐसा लग रहा था जैसे उसके हाथ कोई खजाना लग गया हो।

"और हाँ! वो मैंने तुम्हें सभी के कॉल रिकार्ड्स निकलवाने के लिए कहा था न, उनका क्या हुआ?" मंजरी यकायक पूछ बैठी।

“जी मैडम वो मैंने टेलीकॉम डिपार्टमेंट में बोला है कॉल डिटेल्स के लिए!” रौनक सिंह ने सफाई देते हुए कहा।

“रौनक सिंह जी ज़रूरत हमारी है उनकी नहीं, उन पर थोड़ा दबाव डालिये। हमारे पास इतना वक़्त नहीं की आराम से उनका इंतज़ार कर सकें!” मंजरी अपनी कुर्सी पर बैठती हुई बोली।

उसने एक बार फिर से मौक़ा-ए-वारदात की फोटो निकाली और उन्हें ध्यान से देखने लगी। उसके दिमाग में कुछ तो चल रहा था जिसने उसे परेशान कर रखा था।

□□□

मंजरी के कहे मुताबिक़ रौनक सिंह दो हवलदारों को साथ लिए गोपालगंज से चालीस किलोमीटर दूर सितारपुर के लिए रवाना हो गया। सर्दी की ठंडी हवाएँ उसके मुँह पर नश्तर सी चुभोती जा रही थीं। आगे की सीट पर बैठा रौनक सिंह इस वक़्त ख़ुशी से फूला नहीं समा रहा था। खुश होता भी क्यों ना, पिछले आठ बरस से पुलिस की नौकरी में जूते घिसते-घिसते अब जा कर उसे किसी ने कुछ ज़िम्मेदारी का काम सौंपा था। गोपालगंज के साथ लगते गाँव से ताल्लुक रखने वाले रौनक सिंह ने गुरबत के बहुत दिन देखे थे, इसलिए उसे पैसे की अहमियत पता थी। अपने काम के लिए ईमानदार रहना और अपने से बड़ों की हमेशा इज़्ज़त करना, ये दो बातें उसके पिता ने उसे बचपन से ही सीखा दी थी। चार भाई बहनों में सबसे बड़े रौनक सिंह ने पिता की दी हुई इस सीख को गाँठ बाँध कर अपना लिया था। अपनी मेहनत और लगन के बूते पर वो आज इस मुकाम तक पहुँचा था जहाँ मंजरी ने उसे एक केस के सिलसिले में किसी ज़रूरी काम की ज़िम्मेदारी सौंपी थी, और वो मंजरी को किसी भी कीमत पर निराश नहीं करना चाहता था।

गोपालगंज से सीतारपुर का सफर लगभग डेढ़ घंटे में पूरा करते ही पुलिस जीप सितारपुर बाज़ार पहुँच चुकी थी। पुलिस की जीप को देख कर वहाँ बाज़ार में खलबली सी मच गयी।

“ये सुधीर चौधरी जी ने जो पता बताया था, ज़रा पूछो जा कर कहाँ पर है ये शिव मंदिर!” रौनक सिंह ने एक हवलदार को नताशा का पता पूछने के लिए कहा।

वो मनमोहन कपूर की बहू यानी नताशा के घर के आसपास से कुणाल के बारे में पता करना चाहता था। सुधीर चौधरी के मुताबिक़ नताशा और कुणाल दोनों ही एक दूसरे के काफी करीब थे, तो ज़ाहिर सी बात थी दोनों का ही एक दूसरे के यहाँ आना जाना लगा ही रहता होगा। यही सोच कर रौनक सिंह ने हवलदार को नताशा के घर का पता पूछने के लिए कहा था।

कुछ ही देर में वो हवलदार नताशा के घर का पता लगा कर वापस लौट आया।

“साहब जी वो शिव मंदिर यहाँ कुछ ही दूरी पर है। बाज़ार से बाहर निकल कर लगभग आधा किलोमीटर आगे जा कर ही पड़ेगा।” हवलदार ने बताया तो रौनक सिंह ने जीप स्टार्ट करवाई और उस तरफ बढ़ चला।

कुछ ही देर में पुलिस जीप नताशा के घर से कुछ ही दूरी पर खड़ी थी। मंजरी की हिदायत के मुताबिक़ पुलिस को नताशा के घर नहीं जाना था। उन्हें सिर्फ कुणाल के बारे में जानकारी निकालनी थी।

रौनक सिंह जीप से उतरा और दोनों हवलदारों के साथ एक छोटी सी पान की दुकान पर जा पहुँचा।

“सुनो भाई ये सामने जो नताशा मैडम रहती हैं ये अभी मिलेंगी घर पे?” रौनक सिंह ने

पानवाले से जाते ही सवाल किया तो अपने सामने पुलिस को देख कर वो चौंक गया।
“साहब जी वो तो सुबह ही कहीं निकल गयीं। अभी तो उनके पिता जी होंगे घर पर!” पानवाला पान चबाते हुए बोला।
रौनक सिंह ने एक नज़र पानवाले पर डाली। सफ़ेद कुरता पायजामा, आँखों में सूरमा और मुँह में दबा के पान और गुटखा लिए वो पानवाला अपने पीले पड़ चुके दाँत दिखाते हुए उसी की ओर देख रहा था।
“क्या वो अकेली थी?” रौनक सिंह ने अगला सवाल किया।
पानवाले ने साथ रखी एक छोटी सी बाल्टी में पान की पिचकारी मारी और एक गमछे से अपना मुँह पोंछते हुए बोला:
“नहीं साहब जी, वो कुणाल बाबू थे साथ में!”
कुणाल का नाम सुन रौनक सिंह के कान खड़े हो गए।
“तुम कैसे जानते हो कुणाल को?” रौनक सिंह उसके करीब आता हुआ बोला।
“अरे बाबू जी, यहाँ का बच्चा बच्चा उन्हें जानता है। नताशा दीदी और कुणाल भैया तो बचपन के दोस्त हैं। बेचारी नताशा दीदी, बहुत बुरा हुआ उनके साथ... भरी जवानी में विधवा!” पानवाला आगे कुछ बोलता इससे पहले ही रौनक सिंह ने उसे टोक दिया।
“नताशा और कुणाल सिर्फ दोस्त हैं या आगे भी कोई चक्कर हैं उन दोनों का?” रौनक सिंह की आँखों में एक अलग सी चमक थी जैसे उसके हाथ कोई बहुत बड़ा सुराग लग गया हो।
पानवाले ने एक बार फिर पान की पिचकारी उड़ेली और नताशा के घर की तरफ देखते हुए जवाब दिया:
“मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखाता है साहब जी? अब ये उमर ही ऐसी होती है और फिर नताशा दीदी और कुणाल भैया तो बहुत पहले से एक दूसरे को जानते हैं!”
रौनक सिंह ने भी एक नज़र नताशा के घर पर डाली। बरगद का एक बड़ा सा पेड़ उसके छोटे से गेट के बाहर लगा हुआ था। पीली दीवारों वाले मकान पर बहुत समय से मरम्मत नहीं हुई थी।
“बेचारे कुणाल भैया का रो रो कर बुरा हाल था जब नताशा दीदी ने ध्रुव कपूर जी से शादी कर ली थी। रोज़ यहाँ घर के चक्कर लगाते। दाढ़ी बढ़ी हुई, चेहरा उतरा हुआ, बाल बिखरे हुए। बिलकुल देवदास जैसा हाल हो गया था उन दिनों कुणाल भैया का। वो तो अब जाकर वापस उनके चेहरे पर वही पुरानी वाली चमक लौटी है!” पानवाले ने बात आगे बढ़ाते हुए बताया।
“ये कुणाल कहाँ रहता है?” घर की ओर देखते हुए ही उसने पानवाले से अगला सवाल किया।
“जी कुणाल भैया पास में ही रहते हैं। यहाँ से कुछ आगे जा कर एक बड़ा सा मैदान है जिधर से नीचे को एक सड़क जाती है और वहीं कहीं उनका घर है!” पानवाला ने एक ही साँस में बताया।
रौनक सिंह कुछ देर यूँ ही वहाँ चहलकदमी करने लगा। वो ये बात अच्छे से जानता था कि अगर नताशा कुणाल के साथ निकली है तो ज़ाहिर सी बात हैं कुणाल और वो कहीं बाहर ही गए होंगे। उसने कुणाल के घर तक जाने का अपना इरादा वहीं छोड़ दिया।
“सुनो भाई तुम बड़े काम के आदमी लगते हो। ये पुलिस थाने का नंबर और ये मेरा मोबाइल नंबर दोनों रख लो। अगर कोई ज़रूरी बात हुई तो सबसे पहले मुझे फ़ोन करना और हाँ अपना नंबर भी मुहे दे दो!” कहते हुए रौनक सिंह ने जेब से एक छोटी सी पॉकेट डायरी निकाली और पानवाले का नंबर नोट करने लगा।

काम ख़त्म करने के बाद रौनक सिंह अभी जीप तक वापस लौटा ही था कि तभी उसका मोबाइल घनघना उठा। दूसरी तरफ से टेलीफोन एक्सचेंज से फ़ोन था।

“हाँ दाता राम बाबू क्या खबर है?” रौनक सिंह जीप में बैठा हुआ बोला।

“रौनक सिंह जी आपके कहे मुताबिक़ सभी की कॉल डिटेल्स निकल ली हैं, आप कहें तो आपको व्हाट्सअप कर दूँ?” दूसरी तरफ से आवाज़ आयी।

“हाँ हाँ जल्दी करो… कम से कम कुछ अच्छी चीज़ तो मैडम जी के लिए ले कर जाऊँ!” रौनक सिंह चहकता हुआ बोला।

□□□

अध्याय 8

रात के दस बज रहे थे। आसमान की काली मुट्ठियों की क़ैद में चाँद दम तोड़ रहा था। मंजरी अपनी टीम के साथ पुलिस स्टेशन में ही थी। उसकी टेबल पर कॉल्स डिटेल की लिस्ट थी, कपूर विला में हुई वारदात की तस्वीरें थी और साथ ही एक लिफ़ाफ़े में थी डीएनए रिपोर्ट। मंजरी बेहद संजीदा नज़र आ रही थी। रौनक सिंह और केवल राम उसके सामने चुपचाप बैठे हुए थे। दोनों ही उसे बस देखे जा रहे थे क्यूँकि मंजरी काफी देर से सर झुकाये, आँखें बंद करे कुछ सोच रही थी।

“कुछ ज़्यादा ही जासूसी किताबें पढ़ ली मैंने बचपन से शायद। पापा ठीक ही कहते थे। काश, उस वक़्त मैंने उनकी बातें सुन ली होतीं!” वो खुद से ही बड़बड़ाती हुई बोली।

रौनक सिंह और केवल राम ने एक दूसरे की तरफ देखा पर दोनों में हिम्मत न हुई की वो मंजरी से कुछ पूछ सकें।

“दिमाग में कुछ सीधा चल ही नहीं रहा। एक तरफ चलने लगती हूँ तो दूसरी तरफ चलने का मन करता है, वहाँ जाती हूँ तो फिर कोई और रास्ता दिखाई देने लगता है।” मंजरी खुद से ही लगातार बोलती जा रही थी।

उसके टेबल पर उन फैली हुई चीज़ों के साथ साथ चाय के दस खाली गिलास भी पड़े हुए थे जो अब पूरी तरह से सूख चुके थे। रौनक सिंह ने एक नज़र उन गिलास पर डाली और फिर केवल राम की ओर देखा। इससे पहले मंजरी कुछ और बोलती इस बार रौनक सिंह हिम्मत करके खुद ही बोल पड़ा:

“मैडम जी एक चाय और चलेगी?”

“एक नहीं रौनक सिंह जी तीन कप मँगवाइए मैं अकेली ही थोड़ी पियूँगी!” इस दफे मंजरी ने सर उठाया और आँखें खोलती हुई उसकी तरफ देख कर बोली।

रौनक सिंह ने एक नज़र केवल राम को देखा तो वो चुपचाप उठा और चाय लाने चल दिया। एक बार फिर वहाँ सन्नाटा पसर गया।

पर इस बार ये ख़ामोशी ज़्यादा देर की नहीं थी।

“कुछ समझ नहीं आ रहा रौनक सिंह जी कि आखिर माजरा है क्या?” मंजरी ने इस बार सीधे सीधे रौनक सिंह से सवाल किया।

“क्या हुआ मैडम जी सब ठीक तो है ना?” रौनक सिंह ने घबराते हुए पूछा। उसे डर था कि कहीं मंजरी का सारा गुस्सा उस पर ही न निकल जाए।

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। मंजरी ने इत्मीनान से एक गहरी साँस ली और फिर बोली:

“सब ठीक ही तो नहीं है रौनक सिंह जी! इस डीएनए रिपोर्ट ने तो दिमाग को और उलझा कर रख दिया है। ऊपर से कपूर साहब के परिवार वाले पीछे पड़े हुए हैं कि उन्हें तीनों बॉडी जल्द से जल्द चाहिए। खैर, वो भी अपनी तरफ से सही बोल रहे हैं। ऐसे हम कब तक उन्हें तीनों लाशों का अंतिम संस्कार करने से रोक सकते हैं? कोर्ट भी एक हद से ज़्यादा इस बात की इज़ाज़त नहीं

देगी।”

“डीएनए रिपोर्ट में क्या लिखा है, मैडम जी?” रौनक सिंह ने पूछा। तब तक केवल राम भी चाय के तीन गिलास ले कर वापस आ चुका था।

मंजरी ने लिफाफे में से वो रिपोर्ट निकली और एक बार फिर से उसे पढ़ने लगी।

“यहाँ वही लिखा है जिसका मुझे शक था। तीन प्लेट और गिलास पर मनमोहन कपूर, योगिता कपूर और सोनाली कपूर का डीएनए मिला है। यही नहीं उनके कमरे के दरवाज़े पर भी उन्हीं तीनों का डीएनए मिला है। पर उस चौथी प्लेट और गिलास पर जो डीएनए है वो किसी और का ही है!” मंजरी अपने माथे पर उँगलियाँ फेरती हुई बोली।

“इसका मतलब वो चौथा इंसान जो कोई भी है, उस रात वो कपूर विला में था और उसने वहाँ खाना भी खाया था!” केवल राम चाय का घूँट लेता हुआ बोला।

“पर मैडम जी एक बात अभी भी समझ नहीं आ रही। अगर एक मिनट के लिए हम ये मान भी लें कि वो चौथा शख़्स ही इस वारदात के पीछे है, तो उसने इतने आराम से उनके साथ बैठ के खाना कैसे और क्यों खाया?” रौनक सिंह ने मंजरी को देखते हुए कहा।

“यही बात तो मुझे भी परेशान कर रही है कि आखिर ये चल क्या रहा है? अगर ये क़त्ल का केस है तो क्या हम ये समझें की क़ातिल ने पहले अपने शिकारों के साथ आराम से रात का खाना खाया और उसके बाद एक-एक करके उन्हें मौत के घाट उतार दिया?” मंजरी सर हिलाती हुई बोली।

“और अगर मौत के घाट उतारा भी तो कैसे? वो दोनों कमरे जहाँ से ये तीन लाशें बरामद हुई थीं, वो तो अंदर से बंद थे और जैसा की अपने अभी बताया दरवाज़ों पर भी इन्हीं तीनों का डीएनए सैंपल मिला है!” रौनक सिंह केवल राम की ओर देखता हुआ बोला।

एक बार फिर वहाँ सन्नाटा पसर गया। किसी को भी कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वो लोग किसी बीहड़ में घने कोहरे के बीच रात के अँधेरे में बिना रौशनी के चलते जा रहे हों।

केवल राम ने टेबल पर पड़ी वो कॉल डिटेल्स की लिस्ट उठाई तो मंजरी का ध्यान उसकी तरफ गया।

“क्या कह रहे हैं तुम्हारी टेलीफोन विभाग वाले?” मंजरी ने रौनक सिंह की ओर देखते हुए पूछा।

“मैडम जी मैंने सभी की कॉल डिटेल्स निकलवाई थी। ऐसा कुछ अलग तो कुछ नहीं है पर हाँ, सोनाली के मोबाइल पर एक नंबर से ये लगातार कॉल दिखा रहा है!” रौनक सिंह ने लिस्ट में लाल गोला दिखाते हुए मंजरी को बताया।

“किसका नंबर ये है? पता किया कुछ?” मंजरी बोली।

“ये किसी नवीन मल्होत्रा का नंबर है!” रौनक सिंह ने बताया।

मंजरी ध्यान से उस नंबर को देखने लगी। फिर उसने डीएनए रिपोर्ट निकाली और उसे भी गौर से पढ़ने लगी।

“ये चौथा शख़्स जो कोई भी हो लेकिन इतना तो ज़रूर है कि कपूर साहब, उनकी बीवी और बेटी इसे अच्छे से जानते होंगे तभी इन चारों ने मिल कर एक साथ डिनर किया। अब किसी अनजबी के साथ बैठ कर तो कोई खाना खायेगा नहीं!” मंजरी ने सोचते हुए कहा।

वो कुर्सी से उठी और वहीं पर चहलकदमी करने लगी। जब ही उसे कोई बात परेशान करती थी तो वो ऐसा ही करती थी।

"एक काम करो इस नवीन के बारे में पता करो कि ये कौन है, कहाँ रहता है और क्या करता है? अगर कपूर साहब की सबसे छोटी बेटी सोनाली के फ़ोन पर इसका नंबर बार-बार आया है तो इसका मतलब ये सोनाली को जानता होगा!" मंजरी रौनक सिंह की तरफ देखती हुई बोली।

रौनक सिंह ने सर हिलाया और उठ खड़ा हुआ। केवल राम भी उसे देख कर उठ बैठा।

"बहुत लंबा दिन रहा है आज का... रात भी गहराने लगी है... आज के लिए फिलहाल इतना ही ठीक है। कल सुबह तरोताज़ा हो कर फिर से काम पर लगना है तो अब सुबह मिलते हैं, गुड नाइट!" मंजरी ने मुस्कुराते हुए कहा और उन दोनों से विदा ली।

□□□

ठंडी हवाओं ने शहर को अपनी गिरफ़्त में ले लिया था। छोटे शहरों में अक्सर सड़कें सर्द रातों में यूँ भी शाम से ही सूनी हो जाती हैं, और उस वक़्त तो रात अपने पूरे शबाब पर थी। शहर के पुराने बस अड्डे के साथ सटे हुए उस बाज़ार में घुसते ही छोटे-छोटे मकानों की क़तारें शुरू हो जाती थीं। शहर के ज़्यादातर लड़के लड़कियाँ जो दूसरी जगह से यहाँ पढ़ने आते थे, ये जगह उन सभी का ठिकाना थी। यहाँ कम कीमत पर सस्ते और छोटे कमरे किराए पर मिल जाते थे। ऐसे ही एक छोटे से मकान में किराये के एक कमरे में नवीन भी पिछले कुछ महीनों से रह रहा था।

उस कमरे में एक छोटा सा पीला बल्ब बासी सी रौशनी फेंक रहा था। कमरे में सामान इधर उधर बिखरा पड़ा था। उस छोटे से बिस्तर पर नवीन औंधा पड़ा हुआ था। उसका बायाँ हाथ बिस्तर से नीचे झूल रहा था और उसकी कलाई के पास एक ज़ख्म से ख़ून की बूँदें रिस-रिस कर नीचे गिर रही थीं।

'सोनाली' ये नाम उसकी कलाई पर गुदा था जिस पर वो अभी भी एक कैंची फेर रहा था। ज़ख्म ताज़ा दिखाई पड़ता था पर नवीन को तो जैसे दर्द की कोई परवाह ही नहीं थी।

वो बेसुध सा पड़ा खुद से ही कुछ बुदबुदाया जा रहा था।

"मैंने कहा था मेरे साथ चल। यहाँ से कहीं दूर चले जाते हम दोनों पर, मेरी बात नहीं सुनी ना तूने!" बोलते बोलते उसकी आँखों से आँसू बहे जा रहे थे।

"तेरी ज़िद ने तुझे मुझ से जुदा कर दिया सोनाली। मेरा कहा मान लिया होता तो ये नहीं होना था जो हुआ। तेरे पापा को भी कहा था मैंने हम दोनों के बीच में ना आएँ, अब देख लिया ना अंजाम! हा हा हा हा! मैंने पहले ही बोला था सबको, अगर तू मेरी ना हुई तो फिर किसी और की भी नहीं होगी! हा हा हा!"

वो पागलों की तरह हँसा जा रहा था। वो इतनी ज़ोर से हँस रहा था कि उसकी आँखों से आँसू और भी ज़्यादा बहने लगे थे।

उसके बिस्तर पर सोनाली की कई तस्वीरें फैली हुई थीं पर, उन सभी तस्वीरों में वो अकेली थी। वो तस्वीरें जिस तरह से ली गयी थीं उससे साफ़ पता चल रहा था कि किसी ने छुप कर ली हैं। कोई किसी पेड़ के पीछे से, तो कोई दीवार की आड़ से। कहीं पर सोनाली बाज़ार में चलती हुई नज़र आ रहा थी, तो किसी में कंधे पर बैग लटकाये कॉलेज जाती हुई। किसी सरफिरे आशिक़ की तरह नवीन ने सोनाली के हर लम्हे को कैमरे में क़ैद कर रखा था।

"क्या क्या ख़्वाब देखे थे मैंने हम दोनों के लिए। सबसे दूर एक पहाड़ी पर तुम्हारे साथ मेरा एक छोटा सा घर, जहाँ बस मैं और तुम होती। मैं तुम्हारे लिए खुद मेहनत करता, खूब सारे पैसे कमाता। तुम्हारे पापा ने कहा था न कि मैं तुम्हारे पीछे सिर्फ तुम्हारे पैसों के लिए पड़ा हुआ हूँ। हा..हा…हा! कितने बेवकूफ थे वो। मेरी प्यार की शिद्दत को पहचान ही न सके और तुम? तुम भी तो कितनी नादान थी सोनाली, तुम्हें भी मेरे प्यार की कोई कदर न हुई। देख लिया न अब उसका अंजाम? देख लिया न मेरी बातों को ठुकराने का अंजाम? तुम्हें पाने के लिए मैं हर क़यामत से टकराने को तैयार था और अब देखो क़यामत आ ही गयी! हा हा हा हा!"

वो पागलों की तरह सोनाली की तस्वीरों को चूमने लगा था। उसका जिस्म बुरी तरह से काँप रहा था। उसकी आँखें लाल हो चुकी थीं, माथे पर नसें फड़फड़ा रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे ज़माने भर का जूनून उसके अंदर समा चुका हो।

"तुम जानती हो सोनाली उस रात के बाद से आज तक लगातार हर रात मैं तुम्हारे घर के चक्कर लगा रहा हूँ, बस इसी उम्मीद में कि तुम शायद अपनी खिड़की पर खड़ी दिखाई दोगी। शायद तुम गुस्से की नज़र से नीचे देखोगी और मुझे वहाँ से चले जाने के लिए कहोगी। शायद तुम्हारे पापा दौड़ते हुए नीचे आएँगे और मुझे धमकाने लगेंगे।"

वो बोलता बोलता बिस्तर से लड़खड़ाता हुआ उठ खड़ा हुआ और कमरे में एक तरफ से दूसरी तरफ लगा। उसके हाथ में सोनाली की कोई तस्वीर थी जिसे वो बार-बार देखता और उसे अपने सीने से लगता रहता। अब उसके आँसू भी सूखने लगे थे। उसकी ज़ुबाँ काँपने लगी थी, वो सीधे खड़े होने की कोशिश कर रहा था पर उसके पाँव उसका साथ नहीं दे रहे थे।

चलते-चलते अचानक जाने उसे क्या सूझा कि वो वापस बिस्तर पर आ कर बैठ गया और अपने मोबाइल को खँगालने लगा। उसने वो फोल्डर खोला जिसमें सोनाली की कई सारी तस्वीरें थीं।

"तुम इस जन्म में तो मेरी न हो सकी सोनाली, पर अगले जन्म में तुम्हे मेरा होना ही पड़ेगा वरना मैं इस बार की तरह तब भी तुम्हारे आगे पीछे चक्कर काटता रहूँगा। अगर फिर भी तुम मेरी न हुई तो तुम्हें इस बार की ही तरह अगली बार भी, किसी और की नहीं होने दूँगा।" वो एक तस्वीर को घूरता हुआ बोला। एक बार फिर नवीन की आँखों में वही जूनून नज़र आ रहा था। पर इस बार जूनून के साथ साथ एक वहशीपन भी दिखाई दे रहा था।

□□□

अध्याय 9

मंजरी आगे दिन सुबह सुबह ही पुलिस थाने पहुँच चुकी थी। रौनक सिंह और केवल राम उसे इतनी जल्दी आता देख थोड़े हैरान ज़रूर हुए पर वो जानते थे कि इस केस को लेकर मंजरी के साथ-साथ पूरे पुलिस महकमे पर कितना दबाव था। मीडिया से लेकर मंत्रालय तक हर किसी की ज़ुबाँ पर इसी केस का नाम था।

“गुड मॉर्निंग मैडम जी, ये आपकी चाय!” गर्मागर्म चाय का एक प्याला उसकी तरफ सरकाते हुए रौनक सिंह ने सलाम ठोका।

“केस में कुछ आगे बढ़ेंगे तभी मॉर्निंग गुड होगी रौनक सिंह जी!” मंजरी ने मुस्कुराते हुए चाय का गिलास उठाया और फिर अपनी कुर्सी पर जा बैठी।

“इधर आईये आप दोनों वापस काम पर लगने का वक़्त आ गया है।” कहते हुए उसने रौनक सिंह और केवल राम को अपने पास आने का इशारा किया और एक बड़ा सा सफ़ेद कागज़ ले कर उस पर कुछ लिखने लगी।

नंबर १ : शिखा

नंबर २ : शिप्रा

नंबर ३ : रणधीर

नंबर ४ : नवीन

नंबर ५ : नताशा

नंबर ६ : कुणाल

“फिलहाल हमारे पास ये नाम हैं जिनके इर्द गिर्द ये सारा केस घूम रहा है। मतलब हमारी जो भी तहक़ीक़ात होगी वो इन्ही छह लोगों को ले कर होगी।” मंजरी ने उन सभी के नाम उस कागज़ पर लिखते हुए कहा।

“इसका मतलब इन लोगों में से ही किसी का डीएनए हमें मिला है उस चौथी प्लेट और गिलास पर!” केवल राम ने अपना सुझाव दिया।

“नहीं, यही तो बात है केवल राम जी। शिखा और शिप्रा मनमोहन कपूर की बेटियाँ हैं, इसका मतलब उन दोनों का डीएनए मनमोहन कपूर से मैच होना चाहिए, पर यहाँ ऐसा नहीं हुआ है। रिपोर्ट के मुताबिक़ मौक़ा-ए-वारदात पर मिलने वाला डीएनए मनमोहन कपूर से मैच नहीं होता। इसका मतलब ये है की फिलहाल शिखा और शिप्रा को इन से अलग रखना होगा।” मंजरी उन दोनों की तरफ देखते हुए बोली।

दोनों ने उसकी बात पर सहमति दर्शा कर सर हिलाया।

“नवीन के बारे में कुछ पता किया रौनक सिंह जी?” मंजरी कुछ याद करती हुई बोली।

“हाँ मैडम जी, नवीन मल्होत्रा उसी कॉलेज में पढ़ता है जहाँ सोनाली कपूर पढ़ती थी। मैंने कल रात ही उसका पता निकलवा लिया था पर, आज जब में उसके पते पर गया तो वो वहाँ नहीं

था। फिर उसके पड़ोस से पता चला वो महावीर कॉलेज यानी के उसी कॉलेज के स्टूडेंट है जहाँ सोनाली पढ़ती थी।” रौनक सिंह ने एक साँस में सब बयाँ कर डाला।

“कॉलेज गए?” मंजरी का अगला सवाल तैयार था।

“जी मैडम, वो मैं आपके आने की वेट कर रहा था। सोचा आगे का काम आपसे बिना पूछे…” रौनक सिंह ने झेंपते हुए अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

मंजरी के एक नज़र घड़ी की तरफ डाली। सुबह के साढ़े नौ बज रहे थे। वो आज जल्दी आ गयी थी।

“पहले जाने का फायदा भी नहीं था, कॉलेज इतनी जल्दी कहाँ खुला होता। पर एक बात समझ नहीं आ रही कि नवीन इतनी सबह-सुबह फिर कहाँ चला गया?” वो रौनक सिंह की और देखने लगी।

“मैडम जी, अब कॉलेज जा कर पूछताछ कर सकते हैं। अगर आप कहें तो मैं चला जाता हूँ!”रौनक सिंह कुर्सी से उठता हुआ बोला।

“हाँ, तुम कॉलेज जा कर पता करो और मैं कपूर विला जा कर वहाँ कुछ पूछताछ करती हूँ!” मंजरी अपनी कुर्सी से उठती हुई बोली।

“मैडम जी कपूर विला क्यों?” केवल राम उसे देखने लगा।

“कपूर साहब की दोनों बेटियाँ और दामाद वहीं रुके हुए हैं। जरा उनसे मिल कर आती हूँ!” कहते हुए मंजरी ने एक हवलदार को इशारा किया और गाड़ी निकालने के लिए कहा।

आधे घंटे के बाद मंजरी कपूर विला में उन सभी के सामने बैठी हुई थी।

“बताइये हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं?” शिखा अपने बालों को पोनी में बाँधती हुई बोली।

मंजरी ने देखा शिखा साँवले रंग की थी पर उसमें एक अलग ही कशिश थी। काजल लगी उसकी बड़ी-बड़ी आँखें उसे एक अलग ही खूबसूरती देती थी। पीले सलवार कमीज और उसी से मिलती जुलती गर्म शॉल ओढ़े शिखा उस वक़्त एक दम फ्रेश दिखाई दे रही थी।

“दरअसल इस केस की इंवेस्टिगेशन के दौरान हमें किसी नवीन मल्होत्रा का एक नंबर हाथ लगा है और ये लड़का सोनाली के कॉलेज में ही पढ़ता है!” मंजरी ने बात शुरू करते हुए कहा।

“तो इस लड़के से इस केस का क्या लेना देना?” इस बार शिप्रा ने सवाल किया।

मंजरी ने देखा शिप्रा खुद ही वहाँ आ कर बैठ गयी थी। शिप्रा का रंग थोड़ा साफ़ था और शिखा के मुक़ाबले वो थोड़ी ज़्यादा ख़ूबसूरत थी।

“लेना देना हो सकता है शिप्रा जी। सोनाली के कॉल डिटेल्स से हमें मालूम पड़ा की ये लड़का उसे बार-बार फ़ोन कर रहा था और खासकर क़त्ल… मेरा मतलब हादसे वाली रात भी उसने सोनाली के नंबर पर कई दफे कॉल किया था।”

मंजरी खुद को संभालती हुई बोली।

“क़त्ल? इसका मतलब आप के हिसाब से भी ये मामला क़त्ल का हो सकता है?” शिखा बीच में बोल पड़ी। उसकी आवाज़ से साफ़ ज़ाहिर था कि वो ये सुन कर कुछ परेशान सी हो गयी थी।

“क्यों आपको भी कुछ ऐसा ही लगता है क्या?” मंजरी ने उल्टा सवाल किया।

इससे पहले शिखा कुछ बोलती कमरे के अंदर से उसका पति रणधीर भी वहाँ चला आया और सब के साथ वहीं बैठ गया।

“पापा की यूँ तो किसी से भी कोई दुश्मनी नहीं थी पर हाँ, ध्रुव के जाने के बाद नताशा और हमारे परिवार के बीच सब कुछ सही से नहीं चल रहा है!” शिखा मंजरी की बात का जवाब देती हुई बोली।

“क्या कपूर साहब ने कभी कुछ ऐसा ज़िक्र किया था आप लोगों से कि उन्हें किसी से कोई धमकी मिली हो या कुछ भी ऐसी बात जो उन्हें परेशान कर रही हो?” मंजरी ने पूछा।

कुछ देर के लिए कोई कुछ न बोला। ऐसा लग रहा था जैसे वो तीनों अपने ही ख्यालों में गुम हों। फिर शिखा ने ही बात शुरू करते हुए कहा:

“नहीं, वो कभी भी ऐसी कोई बात हम लोगों से शेयर नहीं करते थे। जब तक पानी सर के ऊपर से न गुजर जाए तब तक वो अपनी परेशानियाँ अपने तक रखते थे।”

रणधीर शिखा की बात बड़े ध्यान से सुन रहा था। मंजरी तिरछी नज़रों से उसे देख रही थी। जैसे ही शिखा ने ये बात कही, रणधीर जो कुछ देर पहले तक अपनी उँगलियाँ मरोड़ रहा था, अब तस्सली से पीठ टिका कर सोफे पर जम गया।

“हम्म इसका मतलब आप में से कोई भी नवीन के बारे में कुछ नहीं जानता!” मंजरी की आवाज़ में थोड़ी हताशा थी।

“देखिये अगर कुछ भी ऐसा होता जो बेहद ज़रूरी होता तो पापा कुछ न कुछ तो हमें बताते ही, वरना जैसा शिखा दीदी ने कहा, पापा हर बात अपने तक ही रखते थे जब तक कि वो बहुत ही ज़रूरी न हो!” इस बार शिप्रा ने जवाब दिया।

“हाँ, जैसे मनोहर मामा जी के बारे में उन्होंने…” बोलते बोलते रणधीर चुप हो गया और शिखा और शिप्रा की तरफ देखने लगा।

मंजरी ने भाँप लिया की वो कुछ बोलना चाह रहा था पर बोल नहीं पा रहा था। वो अपना गला साफ़ करती हुई बोली:

“देखिये, अगर आप मुझे हर बात साफ़ साफ़ बता देंगे तो हो सकता है हम इस केस की तह तक जल्दी पहुँच जाएँ!”

रणधीर ने एक बार फिर से अपनी बीवी को देखा। शिखा ने धीमे से सर हिलाया तो वो बोलने लगा:

“शिखा के मामा मनोहर तेजपाल जी, इनकी मम्मी के रिश्ते के भाई हैं वो। अभी तक कुँवारे हैं और अकेले रहते हैं। उनके साथ कई बार…” रणधीर एक बार फिर चुप हो गया।

“मामा जी हमेशा मम्मी से पैसों की माँग करते रहते थे। वो कहीं नौकरी नहीं करते बस सारा समय जुआ और शराब में ही लगे रहते हैं। पापा के साथ कई बार उनका इसी बात को लेकर झगड़ा भी हुआ था। पिछली बार तो बात बहुत आगे बढ़ गयी थी, उन्होंने पापा के सिग्नेचर कॉपी कर के उनके अकॉउंट से पाँच लाख रूपये निकाल लिए थे!” शिप्रा बात को आगे बढ़ाती हुई बोली।

मंजरी ने देखा तीनों एक दूसरे को देखे जा रहे थे। जैसे एक दूसरे की सहमति से ही कोई बात बोलना चाह रहे हों।

“इतनी बड़ी बात हुई और उन्होंने पुलिस को इनफॉर्म भी नहीं किया?” मंजरी हैरान होती हुई बोली।

“मैडम जैसा मैंने बोला पापा बात को ज़्यादा बढ़ाना नहीं चाहते थे और फिर उनका बोलना था

की घर का मामला घर तक ही रहने देना चाहिए। उन्होंने इसलिए मनोहर मामा को हिदायत देते हुए छोड़ दिया!" शिखा बोली।

"हम्म... घर वालों के लिए वो हमेशा ही आगे रहते थे!" इस बार रणधीर की तरफ से बात शुरू हुई।

मंजरी ने देखा रणधीर अब थोड़ा सहज बैठा हुआ था। उसमें अब वो शुरआती असहजता नहीं थी। मंजरी कुछ पल के लिए चुप हो गयी और फिर यकायक कुछ सोचती हुई बोली:

"वैसे रणधीर जी उन कॉल डिटेल्स में आपका नंबर भी है। आपकी भी तो अपने ससुर जी से हादसे वाली रात काफी देर तक बात हुई थी?" मंजरी ने पूछा तो रणधीर फिर से तन कर बैठ गया।

"जी हाँ… वो…हाँ मुझसे तो उनकी बात होती ही रहती थी!" रणधीर शिखा की तरफ देखते हुए बोला।

मंजरी ने देखा शिखा सवालिया नज़रों से अपने पति की ओर देख रही थी।

"देखिये, ये बात सही है कि मेरी उस रात उनसे बात हुई थी, जैसे कि पहले भी हुआ करती थी!" रणधीर ने फिर से दोहराया।

"कॉल डिटेल्स के मुताबिक़ काफी लंबी बात हुई थी आपकी, तकरीबन चालीस मिनट!" मंजरी उसे याद दिलाती हुई बोली।

रणधीर इस बार अपना आप खो बैठा।

"आप कहना क्या चाहती हैं मैडम? मतलब, अब पुलिस की नज़रों में फ़ोन पर बात करना भी जुर्म है?" रणधीर की आवाज़ ऊँची होने लगी थी।

इस बार मंजरी भी अपनी जगह से उठ बैठी।

"मिस्टर रणधीर यहाँ पर एक इंवेस्टिगेशन चल रही है और इस इंवेस्टिगेशन को मैं लीड कर रही हूँ, लिहाज़ा मुझे पूरा हक़ है आपसे हर तरह के सवाल करने का?"

मंजरी ने जिस अंदाज़ में ये बात कही थी उसका ऐसा असर हुआ की रणधीर के साथ-साथ शिखा और शिप्रा भी बेजुबाँ से खड़े हो कर उसे एक टक देखने लगे।

"सॉरी, मेरा वो मतलब नहीं था!" रणधीर एक गहरी साँस लेता हुआ बोला।

"मैडम, दरअसल रणधीर एक स्टार्टअप शुरू करना चाह रहे हैं और पापा ही उसकी फंडिंग कर रहे थे!" शिखा बीच बचाव करती हुई बोली।

"ओके, स्टार्टअप की फंडिंग…" मंजरी उत्तर सुनकर एक बार फिर सोच में पड़ गयी।

□□□

गोपालगंज थाने में उस वक़्त कोई ख़ास चहलपहल नहीं थी। थाने में उस वक़्त चार हवलदार और मंजरी के अलावा केवल राम ही मौजूद था। रौनक सिंह नवीन मल्होत्रा से पूछताछ करने गया हुआ था। मंजरी रोज़ की तरह किसी फाइल में उलझी हुई थी जब उसका मोबाइल बज उठा।

"हेलो गुड आफ्टरनून सर!" पुलिस कमिश्नर का फ़ोन सुन मंजरी एकदम चौकस हो गयी।

"…"

"जी सर इंवेस्टगेशन चल ही रही है अभी!" कमिश्नर के किए सवाल पर मंजरी बोली।

"वो तो मैंने भी जानता हूँ ऑफिसर पर इंवेस्टिगेशन ख़त्म कितनी जल्दी होगी?" दूसरी तरफ

से कमिश्नर की आवाज़ गूँज उठी।

"सर, मैं एक एक पहलू पर काम कर रही हूँ, हर लीड को नज़दीकी से देख रही हूँ!" मंजरी जवाब में बोली।

"एसीपी मिश्रा मुझे रिजल्ट चाहिए और वो भी जल्दी से जल्दी। मीडिया वालों ने कोई कसर नहीं छोड़ी है इस केस को भुनाने में। आईजी पुलिस से होते होते ये बात मंत्रालय तक पहुँच चुकी है, तो प्लीज आप अपनी टीम और खुद को हर वक़्त फील्ड पर ही रखें तो बेहतर होगा। और हाँ, मुझे हर रात घर जाने से पहले दिन भर की तब तक रिपोर्ट भेजती रहिए जब तक कि ये केस सॉल्व नहीं हो जाता।" कमिश्नर ने हिदायती लहज़े में कहा और फ़ोन काट दिया।

"मैडम चाय!" केवल राम ने चाय का प्याला आगे सरकाते हुए कहा।

"केवल राम जी ये आपकी चाय ना हम दोनों की नौकरी पर भारी पड़ेगी एक दिन ज़रूर। कमिश्नर साहब ने देख लिया न तो बोलेंगे ये लोग सारा दिन काम छोड़ कर बस चाय ही पीते रहते हैं!" मंजरी ने मुस्कुराते हुए चाय का कप उठाया और उसे होंठों से लगाती हुई बोली।

"मैडम जी आप पर आँच आने से पहले हम खुद ही नौकरी छोड़ देंगे!" केवल राम ने बत्तीसी दिखाते हुए जवाब दिया।

"डायलॉगबाज़ी छोड़िये और ये बताइये कहाँ हैं आपके रौनक सिंह?" मंजरी चाय का घूँट लेती हुई बोली।

"अभी कुछ देर पहले बात हुई थी उनसे। बोल रहे थे कॉलेज के बाहर हैं और छुट्टी होने का इंतज़ार कर रहे हैं। जैसे ही नवीन आएगा उसे पकड़ कर यहाँ ले आएँगे!" केवल राम ने बताया।

"नवीन का मिलना बहुत ज़रूरी है केवल राम क्यूँकि कपूर विला के कंपाउंड में मुझे ये मिला है!"

कहते हुए मंजरी ने जेब से कुछ बाहर निकला।

"ये क्या है मैडम जी?" केवल राम ने ध्यान से देखते हुए पूछा।

"नवीन का आईडी कार्ड जो वो यूनिवर्सिटी पहन कर ले जाने के बजाये वहाँ गिरा आया होगा!" मंजरी ने बताया और ध्यान से उस आईडी कार्ड को देखती हुई बोली।

"इसका मतलब नवीन ही..." केवल राम बोलता बोलता रुक गया।

"अभी कुछ भी कहना जल्दबाज़ी होगी केवल राम, पर इतना ज़रूर है कि कपूर विला में उसके इस आईडी कार्ड का मिलना, उसके लिए कोई अच्छी ख़बर नहीं है!" मंजरी ने जवाब दिया और फिर कुछ सोचती हुई वहीं चहलकदमी करने लगी।

□□□

अध्याय 10

दोपहर के चार बज रहे थे। मंजरी बार-बार रौनक सिंह का नंबर मिला रही थी पर उससे कोई बात नहीं हो सकी थी।

“ये रौनक सिंह को नवीन का पता करने के लिए भेजा था, इनका तो अपना ही पता नहीं लग रहा!” मंजरी ने हताशा में मोबाइल टेबल पर फेंकती हुए कहा ही था कि तभी पुलिस थाने के गेट पर उसे कुछ शोर सा सुनाई दिया।

“ये आप मुझे ऐसे ज़बरदस्ती कैसे ला सकते हैं सर, प्लीज मेरी बात सुनिए!” एक लड़का ज़ोर ज़ोर से चिल्ला रहा था।

मंजरी अपनी सीट छोड़ कर बाहर की तरफ दौड़ी तो देखते ही समझ गयी कि रौनक सिंह के साथ लाया गया वो लड़का नवीन मल्होत्रा ही है।

“अंदर आ जाओ! बाहर शोर मत करो!” मंजरी ने रौबदार आवाज़ में उसे झिड़कते हुए कहा और रौनक सिंह को थम्स अप का इशारा करते हुए शाबाशी दी।

नवीन को मंजरी की कुर्सी के पास ले जाकर बैठा दिया गया। उसके माथे पर पसीना चमक रहा था। उसके बाल अभी भी बिखरे हुए थे और उसके मुँह से अजीब सी गंध आ रही थी।

“चुपचाप बैठ जाओ वहाँ! हमें मुँह खुलवाने के साथ साथ चुप कराने के भी बहुत से तरीके आते हैं!” रौनक सिंह उसके कंधे पर हाथ मारते हुए बोला।

नवीन चुप तो हो गया पर उसके चेहरे की बेचैनी बता रही थी कि वो बहुत परेशान था। मंजरी उसे कुछ देर तक चुपचाप घूरती रही। वो डर के मारे उससे नज़रें चुरा रहा था।

“सोनाली को कैसे जानते हो?” कुछ पल बाद मंजरी ने उससे बातचीत शुरू करते हुए पूछा।

“कौन सोनाली?”नवीन ने इस बार घूरते हुए जवाब में कहा।

मंजरी ने एक नज़र रौनक सिंह की तरफ देखा। वो देखते ही इशारा समझ गया और बीच में कूद पड़ा:

“मैडम जी जो पूछ रही हैं उसका सीधा-सीधा जवाब दे, समझा ना!”

“सोनाली को कैसे जानते हो?” मंजरी ने अपना सवाल दोहराया।

“मैं किसी सोनाली को नहीं जानता!” नवीन ने साफ़ झूठ बोला।

इस बार मंजरी को कोई इशारा करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी क्यूँकि इससे पहले ही नवीन के सर पर रौनक सिंह का ज़ोरदार थप्पड़ पड़ चुका था।

“बेटा! यहाँ बड़े बड़े क़ैदियों ने सच उगल दिए हैं तो तू चीज़ क्या है? सच बोल, वरना लॉकअप में डाल कर तेरी खाल उधेड़ दूँगा!” रौनक सिंह गरजा।

“मैं सच में सोनाली को नहीं जानता मैडम। आप किसके बारे में… आप क्या पूछ रही हैं?” नवीन की जुबाँ हकलाने लगी थी।

“अच्छा तुम सोनाली को नहीं जानते? तो फिर तुम्हारा ये आईडी कार्ड उसके घर के कंपाउंड में

खुद से उड़ते हुए पहुँच गया होगा, है ना?” मंजरी ने तंज कसा और नवीन के सामने उसका आईडी कार्ड लहराने लगी।

नवीन के चेहरे से रंग उतर गया। उसका चेहरा झक्क सफ़ेद पड़ गया। उसने घबराते हुए अपने गले पर अपना हाथ फेरा, वहाँ सच में उसका आईडी कार्ड नहीं था।

“वो मैडम… वो गिर गया शायद मैं नहीं जानता ये… मैं किसी सोनाली को नहीं जानता!” नवीन फिर से झूठ बोलने लगा ।

इस बार मंजरी ने कॉल डिटेल्स निकल कर उसके सामने रख दी।

“और तुम्हारे मोबाइल से उसके नंबर पर ये कॉल? ये भी अपने आप हो गये होंगे, है ना?” इस बार मंजरी की आवाज़ में गुस्सा था। साफ़ दिख रहा था की वो अब नवीन का झूठ और बर्दाश्त नहीं करेगी।

एक बार फिर नवीन हड़बड़ा उठा। उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। उसका सर चकराने लगा। वो उठा और वहाँ से जाने लगा।

“मैं… मैं…कुछ नहीं जानता! कौन सोनाली? मुझे जाने दो प्लीज मैडम मुझे!” वो ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

“चुपचाप बैठ यहाँ!” रौनक सिंह ने उसे दबोचा और उसके सर पर एक थप्पड़ और रसीद कर दिया।

मंजरी उठी और इस बार नवीन के पास आ कर खड़ी हो गयी।

“देखो नवीन, तुम नहीं जानते हो पर तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूँ कि तुम इस वक़्त एक बहुत बड़ी मुसीबत में फँस चुके हो। कपूर विला, जहाँ पर सोनाली और उसके माता पिता की लाशें मिली हैं, वहीं घर के कंपाउंड में हमें तुम्हारा ये आईडी कार्ड मिला है। तुम्हारे फ़ोन से सोनाली के फ़ोन पर हादसे वाली रात कई फ़ोन हुए हैं। अब अगर, मैं ये सबूत ले कर अदालत चली गयी तो फिर तुम्हें कोई भी नहीं बचा सकेगा। इसलिए बात को समझो, मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही बोल रही हूँ कि मुझे सब सच-सच बता दो।” मंजरी ने इत्मीनान से अपनी बात उसके सामने रखते हुए कहा।

नवीन रोता हुआ उसे देखने लगा। उसकी आँखों से आँसू लगातार बहते जा रहे थे। वो कुछ देर तक यूँही उसे देखता रहा। मंजरी ने केवल राम को एक गिलास पानी लाने का इशारा किया। अगले ही पल मंजरी वो पानी का गिलास नवीन को थमा रही थी।

“लो पानी पियो और ठंडे दिमाग से मुझे सब सच बताओ!” मंजरी बोली।

“मैडम, मैंने सोनाली को नहीं मारा। मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ, मेरा यकीन कीजिये!” इस बार नवीन के मुँह से निकल पड़ा।

“क्या रिश्ता था तुम्हारा सोनाली के साथ?” मंजरी ने उसके सामने ही कुर्सी रखी और अपनी पूछताछ शुरू कर दी।

नवीन कुछ देर के लिए चुप हो गया। उसकी आँखों में आँसू भरने लगे थे। उसकी शक्ल से दिख रहा था कि चोट उसके दिल के अंदर तक बहुत गहरी लगी थी।

“बहुत प्यार करता था मैं सोनाली से। उस जैसी लड़की मैंने आज तक नहीं देखी थी। ख़ूबसूरत थी, दिल भी बहुत साफ़ था उसका, पर बस मैं ही उसके दिल में अपने लिए जगह नहीं बना सका। मैं पागलों की तरह उसका पीछा करता रहता था, वो जहाँ जाती मैं वहीं पहुँच जाता।

परछाई बन चुका था मैं उसकी!” बोलते-बोलते नवीन की आँखें भीग गयीं।

उसने एक घूँट पानी पिया और फिर बोलना शुरू किया।

“मैं उसे पाने के लिए कुछ भी कर गुज़रने को तैयार था। हर उस चीज़ से लड़ने को तैयार था जो मुझे उससे दूर करती। मैं उसके घर जाकर उसके पापा से भी लड़ा था, बहुत लड़ा था उस रोज़। मुझे आज भी याद है उन्होंने मेरे सामने उसे नीचे बुलाया था और पूछा था की क्या वो मुझे प्यार करती है? और सोनाली... उसने.. उसने उस दिन मेरा दिल तोड़ दिया। वो बोली नहीं मैं नवीन को नहीं चाहती! पर मैं जानता था की वो झूठ बोल रही है, अपने माँ बाप के दबाव में आकर वो ये सब बोल रही है!”

“और इसी वजह से तुमने ना सिर्फ उसका, बल्कि उसके माँ बाप का भी ख़ून कर दिया!” मंजरी इत्मीनान से बात पूरी करती हुई बोली।

“मैडम मैंने नहीं मारा उन्हें, मेरा यकीन कीजिये मैंने उन्हें नहीं मारा। हाँ, मैं उसके घर के चक्कर लगाता रहता था। मैं उस रात भी गया था उसके घर जिस रात वो हादसा हुआ और कल रात भी मैं वहाँ गया था। मुझे लगता था शायद मेरी सोनाली मुझे वहीं कहीं मिल जाएगी पर, ऐसा हुआ नहीं। ये मेरा आई कार्ड भी कल रात वहीं गिर गया होगा। मैडम, मैं सच बोल रहा हूँ! हाँ, मैं पागल था उसके लिए। बहुत नाराज़ भी था उससे पर मैं उसकी जान नहीं ले सकता था। कभी नहीं!” नवीन फफक फफक कर रो पड़ा।

□□□

“क्या लगता है मैडम जी? लड़का सच बोल रहा है क्या?” नवीन को रिमांड रूम में बैठा कर मंजरी और रौनक सिंह कुछ देर के लिए बाहर चले आये थे। अक्सर किसी से उसका गुनाह कबूलवाना टेढ़ी खीर हुआ करता था। फिर यहाँ तो दिल का मामला लग रहा था। नवीन की आँखों में मंजरी को बेपनाह प्यार और दर्द दोनों ही नज़र आया था। बस वो ये पक्का करना चाहती थी कि इस दर्द के नीचे क्या उसका गुस्सा तो नहीं छुपा जिसका अंजाम इस हादसे के रूप में पेश आया।

“इसके मोबाइल से सोनाली की कई तस्वीरें मिली हैं रौनक सिंह जी। एकदम दीवाना सरफिरा आशिक़ था ये सोनाली का। और ऐसे सरफिरे लोग अक्सर कुछ ऐसा कर जाते हैं, जो हम जैसे लोग सोच भी नहीं सकते।” मंजरी उसका मोबाइल रौनक सिंह के सामने रखती हुई बोली।

“पर मैडम जी ये तो बोल रहा है की उस रात कपूर विला से वापस जाने के बाद ये अपने दोस्त के साथ कोई फिल्म देखने चला गया था? पोस्टमॉर्टेम रिपोर्ट के हिसाब से उन तीनों की मौत रात दस बजे से सुबह के चार बजे के बीच हुई है।” रौनक सिंह को अचानक जैसे कुछ याद आया था।

“क्या सबूत है इस बात का की ये उस रात फिल्म देखने गया था?” मंजरी ने सवाल किया।

“मैडम, इसके मुताबिक़ ये अपने किसी दोस्त के साथ अलंकार टॉकीज़ में रात का शो देखने गया था। क्या नाम बोला था इसने, हाँ याद आया, कपिल ठाकुर। कपिल के साथ ये रात साढ़े नौ का शो देखने गया था!” रौनक सिंह बोला।

“उस कपिल ठाकुर को थाने ले कर आओ। ज़रा मैं भी तो उससे फिल्म की कहानी सुनूँ!” मंजरी ने तंज कसा और अपनी सीट की तरफ बढ़ गयी।

नवीन से पता पूछ कर रौनक सिंह और केवल राम कपिल ठाकुर को लेने चल दिए। मंजरी

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

यदि आप दुर्लभ , प्रेरणादायक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों

और अनुवादित साहित्य की खोज में हैं,

तो हमारे विशेष 📲 टेलीग्राम चैनल से जुड़ें

और अनमोल साहित्य का आनंद लें।

📖 हमारे चैनल में आपको मिलेगा:

📚 अद्वितीय और दुर्लभ उपन्यास (Novels)

💡 प्रेरणादायक पुस्तकें (Motivational Books)

🕉️ धार्मिक ग्रंथ और किताबें

🌎 विभिन्न भाषाओं में अनुवादित साहित्य

📜 बेहतरीन पत्रिकाएं (Magazines)

🎁 और अन्य दुर्लभ साहित्यिक खज़ाने

🔔 कृपया "Join Now" बटन या लिंक पर Click करें!

HINDI BOOKS CHANNEL

Join Now▶️ (धार्मिक, आजादी, इतिहास...से सबंधित)

https://t.me/Hindi_Books_Library

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

(नई, पुरानी किताबों के लिए)

[Join Now 📒](https://t.me/Book_Hindi)

https://t.me/Book_Hindi

ENGLISH BOOKS CHANNEL

Join Now 📗

https://t.me/Google_Ebooks

Join Now 📙

https://t.me/English_Library_Books

(ALL CHANNEL LINKS)

Join Now 📘

https://t.me/Hindilibrary

वहीं बैठ कर उनके आने का इंतज़ार करती रही। रिमांड रूम के बाहर से वो नवीन पर बीच-बीच में एक नज़र डालती जा रही थी। नवीन कभी अपने नाख़ून चबाता तो कभी अपना चेहरा हाथों में छुपा कर सुबकने लगता। शीशे के इस तरफ़ से मंजरी उसकी सभी हरकतों पर नज़र रखे हुए थी। हर गुनेहगार अपने गुनाह को अपनी शारीरिक भाषा से बयाँ कर ही देता है। मंजरी नवीन को देख ऐसा ही कुछ ढूँढने की कोशिश में थी।

रौनक सिंह और केवल राम को गए पौने घंटा हो चुका था। अब मंजरी का सब्र जवाब देने लगा था। उसने अपने मोबाइल से रौनक सिंह का नंबर लगाया ही था कि तभी उसे बाहर से केवल राम के बोलने की आवाज़ सुनाई पड़ी। कुछ ही देर में कपिल ठाकुर मंजरी के सामने खड़ा था।

“देखो कपिल, जैसा की तुम जानते हो यहाँ तुम्हें क्यों बुलाया गया है। इसलिए मैं बिना वक़्त बर्बाद किये सीधे-सीधे कुछ पूछ रही हूँ। उसका मुझे सीधा सादा सच्चा जवाब चाहिए। ये बताओ कि दिसंबर सोलह की रात साढ़े नौ बजे के बाद क्या नवीन तुम्हारे साथ था?” मंजरी कपिल के इर्द गिर्द घूमती हुई बोली। उसकी आवाज़ में एक रौब था, एक खनक थी जिसे सुन कर कपिल हड़बड़ा सा गया।

“मैंने तो पहले ही इससे कहा था मैडम, उस छोकरी के चक्करों में ना पड़, पर ये बावला हुआ जा रहा था उसके इश्क़ में। अब इस साले की वजह से मैं भी!” कपिल गिड़गिड़ाने लगा।

“ऐ लड़के! जितना मैडम जी पूछ रही है उतना बता, फ़ालतू बात मत कर।” रौनक सिंह ने उसे डाँटते हुए कहा।

कपिल ने अपना गला साफ़ किया और डरते डरते बोला:

“उस रात ये कपूर विला से वापस आया तो बहुत गुस्से में था मैडम और ऊपर से इसने वो सस्ती वाली दारु भी ली हुई थी। मैंने इसका मन बहलाने को जल्दी से दो टिकट बुक किये और हम दोनों अलंकार टॉकीज़ में फिल्म देखने चले गए!” कहते हुए कपिल ने जेब से अपना मोबाइल निकाला और उसका एक फोल्डर खोलते हुए फिल्म के टिकट का स्क्रीन शॉट मंजरी के सामने रख दिया।

मंजरी ने एक नज़र स्क्रीन शॉट पर डाली। तारीख वो ही थी यानी सोलह दिसंबर और शो था रात साढ़े नौ बजे का।

“क्या सबूत है की तुम दोनों वहाँ पिक्चर हॉल गए थे फिल्म देखने?” मंजरी ने एक बार फिर पासा फेंका।

“मैडम अब ये क्या बात हुई? ये टिकट देखिये इससे बड़ा सबूत क्या होगा?” कपिल घबराते हुए बोला।

“टिकट होना इस बात सबूत नहीं कि तुम वाक़ई में वहाँ गए थे। ये भी तो हो सकता है कि तुमने टिकट लिया हो पर तुम लोग फिल्म देखने गए ही न हों?” मंजरी एक के बाद एक चाल चली जा रही थी। वो अपनी इंवेस्टिगेशन में किसी भी तरफ़ से कोई कमी नहीं रखना चाहती थी।

“मैडम हम ऐसा क्यों करेंगे?” कपिल गिड़गिड़ाने लगा।

“जब मामला क़त्ल का हो तो कुछ भी मुमकिन है कपिल! अच्छा एक बात बताओ कोई तो होगा जो तुम्हारे वहाँ होने की गवाही दे सके? पिक्चर हॉल का कोई आदमी, वहाँ का मैनेजर या कोई भी?” मंजरी के पास और भी पत्ते बाकी थे।

कपिल बेहद परेशान हो चुका था। उसकी हथेलियाँ ठंड में भी पसीने से भीगने लगी थीं।

“मैडम हो सकता है और नहीं भी! आप खुद ही पूछ लीजिये उनसे किसी से!” कपिल को जब कुछ न सूझा तो वो बोल पड़ा।

“ठीक है, चलो अलंकार टॉकीज़ इसी वक़्त!” कहते हुए मंजरी ने कपिल को कॉलर से पकड़ कर उठाया और थाने से बाहर चल दी।

आधे घंटे में वो लोग अलंकार टॉकीज़ के मैनेजर के कमरे में थे।

“एसीपी मैम ये रही शो शुरू होने से पहले की सीसीटीवी फुटेज। यहाँ जो भी लोग अंदर एंटर हो रहे हैं वो आपको दिखाई दे जायेंगे!” कहते हुए थिएटर के मैनेजर ने कंप्यूटर स्क्रीन मंजरी की ओर मोड़ दी।

मंजरी गौर से देखने लगी। वो हर एक चेहरे को एकदम करीब से देख रही थी। कुछ ही देर में कपिल और नवीन की झलक उसे स्क्रीन पर दिखाई पड़ी। कपिल ने नवीन को कंधे से संभाला हुआ था और नवीन लड़खड़ाता हुआ चला जा रहा था।

“और ये वाली फुटेज पूरे शो के दौरान की है।” कहते हुए मैनेजर ने एक और फुटेज मंजरी के सामने रख दी।

मंजरी के साथ साथ रौनक सिंह भी स्क्रीन पर नज़रें जमाये हुए था। फुटेज स्क्रीन नंबर १ के बाहर की थी जहाँ वो शो चल रहा था। पूरे शो के दौरान और यहाँ तक की इंटरवल में भी कपिल या नवीन में से कोई भी बाहर नहीं निकला था। लगभग सवा दो घंटे की उस फुटेज के आखिर में शो ख़त्म होने के बाद वो दोनों बाहर आते नज़र आये।

“हम्म! इसका मतलब नवीन सच बोल रहा है। इसके हिसाब से तो उस रात साढ़े नौ बजे से वो यहाँ फिल्म देख रहा था!” मंजरी की आवाज़ में हताशा साफ़ झलक रही थी। उसने मैनेजर का धन्यवाद दिया और चुपचाप वहाँ से बाहर चली आयी।

□□□

अध्याय 11

दरवाज़े पर हुई दस्तक ने उसे चौंका दिया। पिछले चार दिन से उस छोटे से कमरे में ही क़ैद हो कर रह गया था। कमरे की दीवारें सीलन से भरी हुई थीं और दरवाज़े और खिड़की के कोनों पर मकड़ी के जाले लटके हुए थे। उसके कमरे की ही तरह उसकी खुद की हालत भी कोई ज़्यादा अच्छी नहीं थी। बाल बिखरे हुए, कुर्ता उधड़ा हुआ, दाढ़ी बढ़ी हुई और शक्ल ऐसी मानो सालों से नहाया न हो।

"क….कौन है?" उसने डरते डरते आवाज़ लगाई।

जवाब में दरवाज़े पर एक और ज़ोरदार दस्तक हुई।

इस दफे वो उठा और दरवाज़े तक जा पहुँचा। उसने धड़कते हुए दिल से चिटकनी खोली तो देखा सामने दो लोग हाथ में प्लास्टिक का थैला लिए खड़े थे।

"मनोहर बाबू, क्या हो गया? आप तो गायब ही हो गये, सोचा हम ही आपसे मिल लें आ कर!" एक ने मुस्कुराते हुए कहा तो मनोहर ने दरवाज़ा पूरा खोल दिया।

"तुम ने मुझे डरा ही दिया!" मनोहर बोला और फिर दरवाज़े से बाहर झाँकते हुए वापस दरवाज़ा बंद कर दिया।

"क्या हुआ आप इतना डरे हुए से क्यों लग रहे हैं? सब ठीक तो है ना?" कमरे में आये दोनों में से एक आदमी ने प्लास्टिक का वो थैला ज़मीन पर रखते हुए पूछा।

"डर? न….नहीं मैं तो बस ऐसे ही…" मनोहर बिस्तर पर वापस बैठता हुआ बोला।

"और ये क्या हाल बना रखा है आपने अपना? शक्ल तो देखो शीशे में ज़रा। कौन कहेगा ये मनोहर बाबू कपूर विला के मालिक मनमोहन कपूर के साले साहब हैं!" दूसरे आदमी ने मनोहर की तरफ देखते हुए कहा और फिर साथ आये आदमी को देखने लगा।

"आप पिछले पाँच दिन से अड्डे पर आये भी नहीं, न कोई फ़ोन आया आपका। आप जानते हैं आपके बिना हमारी ताश की बाज़ी अधूरी ही रहती है!" कहते हुए उस आदमी ने अपनी जेब से ताश की नयी गड्डी निकाली और बिस्तर के पास रखे एक छोटे से टेबल पर फैलाता हुआ बोला।

मनोहर ने एक नज़र उस ताश की गड्डी की तरफ देखा। उसकी आँखों में एक चमक सी वापस आ गयी। उसके होंठ काँपने लगे। जुए और शराब का नशा था जैसे मनोहर को। मनमोहन कपूर की धर्मपत्नी योगिता के भाई मनोहर की ज़िंदगी में बस एक यही लत थी जिसका उन्हें जुनून था। पर उनका ये जुनून योगिता के लिए मुसीबत बनता जा रहा था क्यूँकि जुए और शराब की सभी ज़रूरतों को पूरा करते करते वो थक चुकी थी।

"अगर तुम मेरे भाई न होते तो मैं तुम्हे यहाँ से धक्के मार कर निकाल चुकी होती मनोहर!" एक बार तैश में आ कर योगिता ने मनोहर को ये बात बोल दी थी।

पर उसके बाद भी मनोहर हर हफ्ते दस दिन में पैसे लेने के लिए कपूर विला पहुँच ही जाता था। कुछ सालों तक तो मनमोहन कपूर को ये बात पता ही नहीं थी कि उनकी बीवी अपने भाई

की अय्याशियों पर पर्दा डालती आयी है।

पर फिर ये बात आखिर में उन तक पहुँच ही गयी।

“अगर ये तुम्हारा भाई न होता तो मैं इसे अब तक पुलिस लॉकअप में पहुँचवा चुका होता!” मनमोहन कपूर योगिता पर बहुत गुस्सा हुआ थे जब पहली बार उन्हें ये सच्चाई पता चली थी।

इस सबके बावजूद मनोहर किसी भी वक़्त शराब के नशे में कपूर विला धमक ही जाता था और योगिता को शर्मसार हो उसे पैसे देने ही पड़ते थे।

“क्या हुआ? कहाँ खो गए?” मनोहर के कमरे में आये उस आदमी ने उसे कंधे से पकड़ कर हिलाया तो मनोहर यादों के झरोखों से वापस बाहर निकल आया।

उसने धीमे से सर हिलाया और ताश के पत्ते अपने हाथ में उठा लिए। उसके हाथ काँप रहे थे। उसने पिछले पाँच दिन से न शराब चखी थी और न ही जुआ खेला था।

“सुना है पुलिस जी जान से कपूर विला वाले हादसे को सुलझाने के लिए दिन रात एक कर रही है!” कमरे में आये दूसरे आदमी ने मनोहर की ओर देखते हुए कहा।

मनोहर ने अपने काँपते हाथ को किसी तरह से रोका और एक नज़र उसकी तरफ मारी।

“पुलिस को अब क्या मिलेगा? जो होना था वो तो हो चुका!” मनोहर अपने पीले दाँत दिखाता हुआ बोला।

“जब से वो हादसा हुआ है, आप भी अड्डे पर नहीं आये!” पहले आदमी ने तंज कसा तो मनोहर का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

“बिना पैसे के जुआ और शराब क्या तेरा बाप ला कर देगा?” वो ज़ोर से चिल्लाया।

“मनोहर बाबू आराम से.... आराम से ज़रा। इतना गुस्सा होने की ज़रूरत नहीं है, और ये बाप तक जाने की भी नहीं। सब जानते हैं आप अपनी बहन के पैसों पर...” उस आदमी को भी गुस्सा आ गया। पर साथ वाले ने उसे बीच में ही रोक दिया।

“हाँ पलता था... मैं पलता था अपनी बहन के पैसों पर तो क्या? तेरे बाप से तो उधार नहीं लिया न मैंने?” मनोहर इस दफे अपना आप खो चुका था।

“साले! बहुत देर से तेरी उम्र का लिहाज कर रहा हूँ, और तू बात बार बाप पर जा रहा है?” इस बार वो आदमी भी गुस्से से आगबबूला हो उठा और तेज़ी से मनोहर पर लपका। उसने मनोहर को गिरेबान से पकड़ के खींचा और ज़मीन पर पटक दिया।

“सब जानते हैं तेरी औकात, साले! दूसरों की फेंकी हुई हड्डियों पर पलने वाला कुत्ता है तू! और मैं ये भी जानता हूँ कि तूने ही अपने मालिक को काटा होगा। मुझे यकीन है तूने ही कपूर विला में जा कर अपनी बहन, अपने जीजा और अपनी भाँजी को जान से मार डाला।” वो आदमी मनोहर पर घूँसे बरसाए जा रहा था।

“अरे छोड़ उसे, मर जायेगा वो!” दूसरा आदमी उसे रोकता हुआ चिल्लाया।

“साले! हमारे बीस हज़ार से ज़्यादा रूपये डकार चुका है तू अब तक। हमारे पैसे एक हफ्ते के अंदर वापस कर देना वरना तेरी सच्चाई पुलिस तक पहुँचा दूँगा!” पहले आदमी ने जाते जाते मनोहर के मुँह पर ठोकर मारी और उसे घूरता हुआ कमरे से बाहर चल दिया।

मनोहर कराहता हुआ ज़मीन पर काफी देर तक पड़ा रहा।

□□□

सर्दियों में अक्सर शामें बेहद ग़मगीन सी हो जाती हैं। हर तरह बेनूरी सी छाई रहती है। यूँ लगता है जैसे क़ायनात से सारा नूर ग़ायब हो गया हो।

कुछ ऐसा ही मंज़र गोपालगंज पुलिस थाने के बाहर भी बना हुआ था और अंदर भी। मंजरी के सामने बैठे थे पुलिस फॉरेंसिक टीम के एक्सपर्ट और मेडिकल एग्जामिनर।

“नवीन का डीएनए कपूर विला में मिले डीएनए सैंपल से मैच नहीं करता एसीपी मैडम।” मेडिकल एक्सपर्ट डॉक्टर अरुण ने मंजरी को रिपोर्ट थमाते हुए बताया।

मंजरी ने अनमने मन से रिपोर्ट पर एक सरसरी सी निगाह डाली और फिर उनकी तरफ़ देखती हुई बोली:

“क्या नवीन को इस बिना पर पूरी तरह से शक़ के दायरे से बाहर कर सकते हैं?”

“देखिये वो तो आपकी इन्वेस्टिगेशन पर निर्भर करता है पर, जहाँ तक मेडिकल इंवेस्टिगेशन की बात है तो मैं कह सकता हूँ की इस डीएनए रिपोर्ट से साफ़ ज़ाहिर है कि नवीन तो वो चौथा शख़्स क़तई नहीं हो सकता है जिसने मिस्टर कपूर और उनकी फैमिली के साथ बैठ कर डिनर किया और उसके बाद उनका क़त्ल करके वहाँ से निकल गया।” डॉक्टर अरुण ने बात ख़त्म करते हुए कहा।

“हम उन तीन बॉडीज़ को ज़्यादा टाइम तक मोर्चरी में रख भी नहीं सकते मैडम, ऊपर से बहुत दबाव बना हुआ है इस केस को लेकर!” उनमें से एक एक्सपर्ट ने अपनी राय जताई।

“हम्म! जानती हूँ सर कि इस केस में सभी की कितनी दिलचस्पी है। पर दिक्कत यही है कि बाहर से देखने पर ये केस जितना सिंपल दिखाई देता है उतना है नहीं।” मंजरी अपनी कुर्सी पर सीधी होती हुई बोली।

“हम तो पुलिस की तरफ से वेट कर रहे हैं कि कब आप लोग हुक्म करें और हम तीनों की लाशें उनके घरवालों को सौंप दें!” डॉक्टर अरुण ने आगे कहा।

“हम लोग अभी तक यही पता नहीं लगा सके हैं कि अगर ये क़त्ल है तो फिर क़त्ल हुआ कैसे? पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से भी कोई मदद नहीं मिल सकी।” मंजरी डॉक्टर अरुण की आँखों में झाँकती हुई बोली।

“एक काम कर सकते हैं मैडम और उम्मीद है इससे हमें कोई मदद मिल सकती है!” अचानक डॉक्टर अरुण की आँखों में चमक सी उभरी।

“क्या?” मंजरी ने पूछा। उसे भी उम्मीद की एक मद्धम सी किरण नज़र आने लगी थी।

“हम शवों का विसरा सुरक्षित रख सकते हैं। हमारा काम इससे चल जाएगा।” डॉक्टर अरुण बोले।

“इसका मतलब हम विसरा निकाल कर बाकी शव उनके परिवार को सौंप सकते हैं?” मंजरी बोली।

“जी हाँ!” डॉक्टर ने सहमति जताते हुए कहा।

“ठीक है डॉक्टर, तो आप प्लीज़ जल्दी से जल्दी ये काम कीजिये तब तक मैं भी एक काम करती हूँ। जो डीएनए सैंपल हमें मौक़ा-ए-वारदात से मिला है, उसे मैं हमारे डाटा बेस में डलवा कर मैच करवाती हूँ। जो डीएनए सैंपल हमारे रिकॉर्ड में हैं क्या पता ये उनमें कहीं किसी से मिल जाए!” मंजरी में एक नया उत्साह जाग चुका था। डॉक्टर अरुण और उनकी टीम के साथ हुई बातचीत ने केस में कुछ नए आयाम खोल दिए थे।

मेडिकल टीम के जाते ही मंजरी अपने काम में लग गयी। डीएनए सैंपल को मैच करवाने के लिए डाटा सेंटर में भेज दिया गया था। उधर मेडिकल टीम भी अपने काम में जुट गयी थी। उन तीनों लाशों में से विसरा निकाल कर उसकी जाँच के लिए ज़रूरी तैयारियाँ होने लगी थीं।

ये सभी चीज़ें मंजरी की निगरानी और दिशा निर्देश पर ही हो रही थीं। दिन भर इन्हीं सब चीज़ों में निकल गया। रात के तकरीबन साढ़े आठ बज रहे थे जब अचानक पुलिस थाने में एक शख़्स ने प्रवेश किया।

“ऐ! कहाँ जा रहे हो? किस से मिलना है?” हवलदार ने उसे रोकते हुए कहा।

उस आदमी के मुँह से शराब की बदबू आ रही थी और उसके कदम बुरी तरह से लड़खड़ा रहे थे।

“मैं मनोहर लाल हूँ। आपके अफसर से बात करना चाहता हूँ।” मनोहर ने कहा और आगे बढ़ चला।

मंजरी ने उसे देखा और सामने बैठने का इशारा किया।

“कहिये मनोहर जी कैसे आना हुआ?” वो एक फाइल पर काम करती हुई बोली।

“मैडम मेरा नाम मनोहर लाल है और मैं…” उसने बोलना शुरू किया ही था कि मंजरी ने उसे बीच में टोका।

“जानती हूँ आप कौन हैं। आपकी सारी कुंडली है मेरे पास। मनोहर लाल यानी योगिता कपूर के भाई। आपके बारे में आपकी भाँजियों ने भी बताया था।” मंजरी उसकी ओर देखती हुई बोली।

मनोहर उसे एक टक देखता रहा। उसने सोचा नहीं था कि पुलिस के पास उसकी सारी जानकारी पहले सी ही होगी।

“मैडम मेरा इस केस से कोई लेना देना नहीं है। हाँ, मैं मानता हूँ मुझे जुए और शराब की लत है और मैं अपनी बहन से पैसा ले कर अपनी अय्याशियों पर उन्हें उड़ाता रहता था। पर मेरा यकीन मानिये मैंने उन में से किसी को भी नहीं मारा।” मनोहर हाथ जोड़ता हुआ बोला।

“हादसे वाली रात आप कहाँ थे?” मंजरी उसकी बात को नज़रअंदाज़ करती हुई बोली।

“मैडम, मैं हर रात पुराने बस अड्डे के पीछे बनी बस्ती में जाता हूँ। वहाँ हमारी जुए और शराब की महफ़िल जमती है!” वो नज़रें झुकाये हुए बोला।

“तुम्हारा अपने जीजा मनमोहन कपूर से झगड़ा हुआ था और फिर तुम्हारी बहन योगिता ने भी तुम्हें पैसे देने से मना कर दिया था। बस इसी बात से नाराज़ तुमने उन्हें जान ने मार डाला।” इस बार मंजरी ने गुस्सा दिखाते हुए कहा।

“नहीं, मैंने किसी को नहीं मारा मैडम। मैं लाख बड़ा शराबी और जुआरी सही, पर मैंने किसी को जान से कभी नहीं मारा!” मनोहर की आँखों से आँसू गिरने लगे।

“हर गुनाहगार यही बोलता है!” मंजरी गरजी।

“मैडम मैं खुद चल कर आपके पास आया हूँ, अगर मैं गुनाहगार होता तो कब का यहाँ से दूर भाग चुका होता!” मनोहर अपने आँसू पोंछता हुआ बोला।

□□□

अध्याय 12

शहर का पुराना बस अड्डा अब वाक़ई में पुराना हो गया था। जहाँ बाकी की जगहों पर बदलते वक़्त की छाया पड़ने लगी थी वहीं यहाँ पर अब भी गुज़रे ज़माने की धूल पड़ी दिख ही जाती थी। पुराने ठेले वाले जो अब भी पहले की तरह फल और सब्ज़ियाँ ले कर दिन भर एक तरफ से दूसरी तरफ घूमते रहते। चाय और ब्रेड पकोड़ों के छोटे-छोटे स्टॉल जहाँ जंग लगी स्टील की केतली पर से भाप उठती तो आस-पास के लोग वहीं गप्पे मारने के लिए जमा हो जाते। दिन भर में गिनी चुनी लोकल बसों के अलावा वहाँ लोगों की भीड़ ही ज़्यादा दिखाई देती थी। गोपालगंज आने वाली बाहर की बसें नये बने बायपास रोड से ही शहर से बाहर चली जाती थीं।

रौनक सिंह ने जीप को वहीं एक जगह रुकवाया और केवल राम और दो हवलदारों को ले कर नीचे उतरा।

“वाह, इमरती की खुशबू आ रही है यहाँ तो! मम्म... मुँह में पानी आ गया इधर आते ही!” एक हवलदार अपने साथ आये दूसरे हवलदार के कान में फुसफुसाया। पर रौनक सिंह जो साथ ही चल रहा था उसके कानों तक ये बात पहुँच ही गयी।

“हलवदार रतन सिंह हम यहाँ इमरती का स्वाद लेने नहीं आये हैं, समझे ना। अपने काम पर ध्यान लगाओ। कहीं अगर मैडम ने सुन लिया ना तो तुम्हारी ऐसी क्लास लेंगी की इमरती की जगह तुम एक खंडहर इमारत से दिखाई देने लगोगे!”

रौनक सिंह ने जिस अंदाज़ में ये बात कही उसे सुन कर न सिर्फ साथ चल रहे केवल राम बल्कि दूसरे हवलदार की भी हँसी छूट गयी।

“जाओ जा कर मालूम करो ये मनोहर लाल कहाँ पर अपनी ये जुए की पार्टी करता है!” रौनक सिंह एक बार फिर गरजा।

उस हलवदार ने चुपचाप हुक्म का पालन करने में ही अपनी भलाई समझी और उन लोगों को वहीं छोड़ आगे बढ़ चला।

रौनक सिंह ने एक नज़र चारों तरफ दौड़ाई। आसपास के दुकानदार बड़े ध्यान से उन्हें ही देख रहे थे। उनके चेहरे बता रहे थे की वो भी अपनी रोज़ की दिनचर्या से थोड़ा सा ऊब चुके थे और उस पुराने बाज़ार में पुलिस की गाड़ी को देख उनकी बोझिल ज़िंदगी में कुछ देर के लिए ही सही थोड़ी सी उत्सुकता जगी थी।

“साहब, उधर कुछ सीढ़ी नीचे उतर के एक छोटा सा स्टॉल है, वहीं पर मनोहर लाल अक्सर बैठा करता है!” हवलदार ने वापस आ कर जानकारी दी तो रौनक सिंह और केवल राम दोनों चौकन्ने हो गए।

“चलो, देखें ज़रा ये मनोहर लाल आखिर कितना सच बोल रहा है!” कहते हुए रौनक सिंह सबसे आगे चलता हुआ हलवदार के बताए स्थान की तरफ चल दिया।

सड़क के साथ ही छोटी-छोटी दुकानें सटी हुई थीं और उन्ही दुकानों के बीच से कुछ सीढ़ियाँ

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

यदि आप दुर्लभ उपन्यासों, प्रेरणादायक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों और अनुवादित साहित्य की खोज में हैं तो हमारे विशेष टेलीग्राम चैनल से जुड़ें और अनमोल साहित्य का आनंद लें।

हमारे चैनल में आपको मिलेगा :

- ★ अद्वितीय और दुर्लभ उपन्यास (Novels)
- ★ प्रेरणादायक पुस्तकें (Motivational Books)
- ★ धार्मिक ग्रंथ और किताबें
- ★ विभिन्न भाषाओं में अनुवादित साहित्य
- ★ बेहतरीन पत्रिकाएं (Magazines)
- ★ और अन्य दुर्लभ साहित्यिक खज़ाने

साहित्य और ज्ञान की इस अनोखी दुनिया का हिस्सा बनने के लिए

नीचे दिए गए Link पर Click करें !

HINDI BOOKS CHANNEL

(धार्मिक, आज़ादी, इतिहास...उपन्यास से संबंधित)

https://t.me/Hindi_Books_Library

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

(नयी, पुरानी किताबों के लिए)

https://t.me/Book_Hindi

ENGLISH BOOKS CHANNEL

https://t.me/Google_Ebooks

https://t.me/English_Library_Books

(ALL CHANNEL LINKS)

https://t.me/Hindilibrary

नीचे की तरफ उतरती थीं।
रौनक सिंह और केवल राम सीढ़ियाँ उतरते हुए आखिर उस छोटे से स्टॉल तक आ ही गए। स्टॉल की हालत कुछ अच्छी नहीं थी। एक पुरानी सी जगह-जगह से फटी हुई पीली तिरपाल से उस स्टॉल की छत बनाई गयी थी। वहीं एक कोने में एक जगह पर स्टोव के ऊपर एक केतली में चाय उबल रही थी। उसी की बगल में दो छोटे छोटे प्लास्टिक के बर्तनों में चाय और पत्ती रखी दिखाई दे रही थी।
स्टॉल में उस वक़्त दो लोग बैठे हुए थे जो रौनक सिंह और केवल राम को पुलिस की वर्दी में वहाँ देख अपनी-अपनी बीड़ी बुझाने लगे। ये वो ही दो लोग थे जो मनोहर के घर पर आकर उसे धमका के गए थे।
“मैं गोपलगंज थाने से आया हूँ। मनोहर लाल के बारे में पूछताछ करनी है।” रौनक सिंह ने एक छोटे से स्टूल पर बैठते हुए कहा। केवल राम उसी की बगल में चुपचाप खड़ा हो गया।
“मन… मनोहर… जी… जी… वो तो मैं किसी को नहीं जानता साहब मैं तो…!” लाल स्वेटर पहने हुए उस आदमी की आवाज़ मनोहर लाल का नाम सुनते ही थर्रा उठी थी।
“देखो घबराने की कोई बात नहीं है। मुझे सिर्फ मनोहर लाल के बारे में कुछ पूछना है तुमसे इसलिए डरो मत और सब सच सच बोल दो!” रौनक सिंह उस आदमी के कंधे पर हाथ रखता हुआ बोला।
उस आदमी ने एक नज़र रौनक सिंह पर मारी फिर केवल राम को देखने लगा। वहाँ से होते हुए उसकी नज़र साथ बैठे अपने दूसरे साथी पर गयी।
“साहब! हमने कुछ नहीं किया साहब। वो मनोहर लाल हमारे पैसे नहीं लौटा रहा था तो इसलिए हम उसके घर गए थे!” लाल स्वेटर वाला आदमी गिड़गिड़ाने लगा।
“हाँ साहब, माँ कसम पूरे बीस हज़ार ले चुका है वो हमसे और अब साला लौटाने का नाम….” बोलते बोलते वो रुक गया।
“माफ़ करना साहब मुँह से निकल गया साला!” वो घबराते हुए बोला।
“सोलह दिसंबर की रात को वो कहाँ था?” रौनक सिंह ने यूँ पूछा मानो उसे उनकी निजी बातों में कोई दिलचस्पी न हो।
“सोलह दिसंबर? साहब वो तो हर रोज़ यहीं आता है रात को। अब तो पता नहीं कितना टाइम हो गया उसे यहाँ आते हुए। हाँ, बस पिछले पाँच छ: दिनों से वो यहाँ नहीं आ रहा इसलिए हम उसके घर गए थे साहब। बीस हज़ार कोई छोटी रकम नहीं होती ना साहब!” पहले वाला आदमी बुदबुदाया।
“मुझे बाकी दिनों से कोई मतलब नहीं! सोलह दिसंबर की रात को साढ़े नौ बजे वो कहाँ था?” इस बार रौनक सिंह ने कड़क आवाज़ में पूछा।
“सोलह दिसंबर!” इस बार दूसरा शख़्स अपने दिमाग पर ज़ोर देता हुआ कुछ सोचने लगा।
“हाँ, सोलह दिसंबर!” रौनक सिंह को अब खीज होने लगी थी। वो जल्द से जल्द उस छोटी सी जगह से खुली हवा में आ कर ताज़ा साँस लेना चाहता था।
“साहब जी, उस दिन तो मेरा जन्मदिन होता है और हम सब ने यहीं मनाया था। मनोहर लाल भी यहीं था उस रात हमारे साथ!” उस आदमी ने याद करते हुए बताया।
“क्या तुम पूरे यकीन के साथ कह सकते हो ये बात?” रौनक सिंह ने ज़ोर दिया।

“जी साहब, मुझे पक्का याद है उस रात उसने मेरे मुँह पर केक भी मला था। मैं मना करे जा रहा था पर वो रुका नहीं। उसके बाद उसने मेरे सर पर शराब उढ़ेल दी थी और फिर देर तक नाचता रहा था।” उस आदमी ने सारी बात बताते हुए जवाब दिया।

“क्या तुम यही बात बयान के तौर पे दर्ज करवाओगे?” रौनक सिंह ने पूछा।

“बयान! मतलब कहीं जाना होगा मुझे?” वो आदमी डर गया।

“हाँ, हमारे साथ थाने चलना होगा, वहाँ पर एसीपी मैडम के सामने तुझे ये बयान देना होगा। समझ गया?” रौनक सिंह ने एक बार फिर उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

“साहब, मैं सच बोल रहा हूँ। वो सिर्फ बीस हज़ार रुपए के लिए हमने उसे धमकाया था। इससे ज़्यादा और कुछ नहीं किया हमने!” पहले से ही डरा हुआ वो आदमी और भी गिड़गिड़ाने लगा।

“तूने बीस हज़ार के किये उसके साथ क्या किया क्या नहीं किया हमें उससे कोई मतलब नहीं, तू बस पुलिस थाने में चल और अपना ये बयान दर्ज करवा!” कहते हुए रौनक सिंह ने उसे गिरेबान से पकड़ कर उठा लिया।

□□□

मंजरी के सामने बैठा वो आदमी अभी भी थरथर काँप रहा था। दूसरी तरफ मनोहर लाल भी सर झुकाये चुपचाप वहीं बैठा हुआ था। मंजरी के सामने किसी की भी कोई हरकत करने की जुर्रत नहीं हो रही थी।

“मनोहर को आखिरी बार किसने देखा था उस रात और कितने बजे?” मंजरी ने सवाल किया तो वो दोनों सर उठा कर उसकी तरफ देखने लगे।

मंजरी कुछ देर के लिए ख़ामोशी से उन्हें देखती रही। पर रौनक सिंह समझ गया था कि ये तूफ़ान के आने से पहले की ख़ामोशी है। इस केस ने बहुत तहलका मचा रखा था और मंजरी अब इस तहलके को जल्द से जल्द ख़त्म करना चाहती थी।

“यूँ बुत बन के क्यों बैठे हो? जवाब दो मुझे। किसने देखा था उस रात मनोहर को आख़िरी बार और कब?” इस बार मंजरी इतनी ज़ोर से चिल्लाई कि उसकी आवाज़ यकीनन पुलिस थाने के बाहर तक गयी होगी।

“ज ...जी मैडम वो मैं और ये... हम इस को छोड़ के आये थे इसके कमरे तक!” लाल स्वेटर वाले आदमी ने बोलना शुरू किया।

“क्यों ये खुद क्यों नहीं गया?” मंजरी ने सवाल पूछा।

“वो जी सस्ती वाली दारु बड़ी बुरी चढ़ती है जी। इसने वही बहुत पी ली थी उस रात। इधर-उधर गिर पड़ रहा था जी। फिर इसलिए हम दोनों इसको पकड़ के ले गए थे!” आदमी ने डरते डरते जवाब दिया।

“अच्छा? तूने कहा था कि तेरा जन्मदिन था उस दिन, तो तूने शराब नहीं पी?” मंजरी उसके करीब आती हुई बोली।

मंजरी को इतना करीब देख के उस आदमी के होश फ़ाख्ता हो गए। वो एक कदम पीछे हटा और फिर हाथ जोड़ के खड़ा हो गया।

“हमने भी लगाई थी जी पर इससे कम। ये तो जब एक बार शुरू हो जाता तो फिर रुकने का नाम ही नहीं लेता। इसकी इसी आदत की वजह से इसके ऊपर हमारी देनदारी है मैडम जी बीस

हज़ार की!” वो आदमी रिरियाने लगा।

“क्या टाइम था उस वक़्त जब तुम इसे इसके कमरे में छोड़ने गए थे?” मंजरी हाथ मलती हुई बोली।

वो दोनों कुछ देर के लिए सोच में पड़ गए। फिर अगले ही पल उनमें से एक बोला:

“यही कोई रात के डेढ़ या पौने दो बज रहे होंगे मैडम जी। पर जब हम इसके कमरे में इसको इसके बिस्तर तक पहुँचा कर वापस लौट रहे थे जी तो इसके कमरे में छोटी सी घड़ी है जी, उसमें दो बजे थे!”

“इसके कमरे तक वहाँ से आने में पंद्रह मिनट लगते हैं?” मंजरी की तहक़ीक़ात जारी थी।

“मैडम जी वो इसने इतनी पी रखी थी इसको संभालना मुश्किल था जी। बड़ी मुश्किल से किसी तरह से इसको कमरे तक पहुँचाया था उस रात। ये तो दो कदम चलते ही गिर जा रहा था।” इस बार साथ आया दूसरा आदमी बोला।

“हम्म ठीक है! अपना बयान दर्ज करवाओ और ध्यान रहे, जब भी पलिस थाने में बुलाएँगे चुपचाप चले आना। और हाँ… तुम दोनों में से कोई भी अभी ये शहर छोड़ कर कहीं नहीं जायेगा समझे ना?” मंजरी ने उन्हें हिदयात दी और रौनक सिंह को बयान दर्ज करने का इशारा किया।

कुछ ही देर में वो तीनों यानी वो दो आदमी और मनोहर लाल चुपचाप अपना अपना बयान दर्ज करवा कर पुलिस थाने से बाहर निकल आये।

मंजरी अब अपनी टीम के साथ बैठी थी। वो एक बार फिर से किसी सोच में गुम थी।

“रौनक सिंह अपना एक हलवदार अभी कुछ दिनों के लिए उस पुराने बस अड्डे पर लगवा दो। उसको कहना इन तीनों पर नज़र रखे और हाँ, उसे बोलना सिविल ड्रेस में रहे ताकि किसी को कोई शक न हो।” मंजरी आँखें बंद किये हुए कुछ सोचते हुई बोली।

“ओके मैडम!” कहते हुए रौनक सिंह ने अपने अफसर की बात का संज्ञान लिया और अपनी डायरी में नोट कर लिया।

“मैडम, ये भी नवीन की तरह अपने ठिकाने पर था जिस रात क़त्ल हुआ!” उन तीनों के जाने के कुछ देर बाद रौनक सिंह ने चाय का कप मंजरी को थमाते हुए बात शुरू की।

“जब तक डीएनए रिपोर्ट नहीं आ जाती रौनक सिंह जी तब तक हमारी नज़रों में कोई भी बेगुनाह नहीं है। चाहे वो नवीन हो, मनोहर हो या कोई भी और!” मंजरी अभी भी अपनी ही सोच में गुम थी।

“मैंने यहाँ आने से पहले मेडिकल सेंटर में फ़ोन किया था तो डॉक्टर अरुण ने बताया कि रिपोर्ट शाम तक मिल जानी चाहिए। डाटा बेस से डीएनए सर्च करने में तो ज़्यादा टाइम नहीं लगता होगा मैडम जी?” रौनक सिंह ने बात को आगे बढ़ाते हुए पूछा।

“थोड़ा टाइम लग ही जाता है। इतने सारे डाटा में से सर्च करना इतना आसान भी नहीं। हमें बस अपना काम मुश्किल दिखता है रौनक सिंह जी, दूसरों का नहीं। खैर, ये तो अब सिस्टम का हिस्सा ही बन चुका है। इसमें कोई भी कुछ नहीं कर सकता। वो अपना काम कर रहे हैं और हम अपना। बस इतना है कि सभी को अपना अपना काम ईमानदारी और लगन से करना चाहिए।” मंजरी बोली और चाय का घूँट लेने लगी।

रौनक सिंह ने सहमति में सर हिलाया ही था की केवल राम पूछ बैठा:

“मैडम जी वो विसरा रिपोर्ट कब आएगी? उसमें भी टाइम लगता है क्या?”

“अब मैं डॉक्टर तो हूँ नहीं तो इसलिए ज़्यादा तो नहीं जानती, पर हाँ इतना कह सकती हूँ की ये सारी प्रक्रिया मुश्किल ज़रूर होती है और इसे बड़ी सावधानी से करना पड़ता है। क्यूँकि एक ज़रा सी गलती भी सारे किये कराये पर पानी फेर सकती है।” मंजरी ने चाय ख़त्म करते हुए जवाब दिया।

“और अगर इतना सब करके भी हमें कुछ हाथ न लगा तो?” रौनक सिंह मंजरी की तरफ किसी मासूम बच्चे की तरह देखते हुए बोला।

“शुभ शुभ बोलो रौनक सिंह जी। वैसे आज तक तो कभी हुआ नहीं है कि इतना सब कर के भी किसी केस में कुछ हाथ न लगा हो। मेडिकल साइंस ने बहुत तरक्की कर ली है आजकल। अब देखो न पहले तक सिर्फ फिंगर प्रिंट्स के ज़रिये ही गुनाहगार तक पहुँचा जा सकता था, पर अब डीएनए के ज़रिये न सिर्फ हम गुनाहगार तक पहुँच सकते हैं बल्कि उसके बारे में काफी कुछ जानकारी इकट्ठा कर सकते हैं।” मंजरी उसे जानकारी देती हुई बोली।

“तो इसका मतलब अगर हमें उनके विसरा में या डीएनए सैंपल सर्च में कुछ भी ऐसा मिला जिससे हमारी कोई मदद हो सके, तो फिर हम इस केस में आगे बढ़ सकेंगे और असली गुनाहगार तक पहुँच सकेंगे।” रौनक सिंह के चेहरे पर पहली बार उत्साह नज़र आ रहा था।

“उम्मीद तो यही है। बस अब जल्दी से रिपोर्ट आ जाये तो फिर कुछ आगे बढ़ें।” मंजरी ने एक नज़र दिवार घड़ी पर डालते हुए कहा जो शाम के साढ़े सात बजने का इशारा कर रही थी।

□□□

अध्याय 13

रात के साढ़े आठ बज रहे थे जब अचानक मंजरी के मोबाइल पर एक मैसेज आया। बीप की आवाज़ सुन मंजरी ने एकदम से मोबाइल खोला तो डॉक्टर अरुण की ओर से मैसेज देख उसका दिल धड़क उठा।

"विसरा रिपोर्ट भेज रहा हूँ। इस केस में कुछ बहुत ही अजीब बात पता लगी है। आप पढ़ लीजिये!" इस एक लाइन ने मंजरी की पेशानी पर एक साथ कई बल डाल दिए।

"क्या हुआ मैडम जी?" रौनक सिंह मंजरी का चेहरा देख उसकी सीट पर दौड़ा आया। केवल राम भी इस दफे खुद को न रोक सका।

जब तक वो दोनों वहाँ पहुँचते तब तक मंजरी व्हाट्सएप पर आयी उस रिपोर्ट को पढ़ने में लगी हुई थी। वो दोनों उसे यूँ ही देखते रहे। मंजरी एकदम संजीदा हो चार पन्ने की उस रिपोर्ट को पढ़ने और समझने में लगी हुई थी। हर एक पन्ने के साथ साथ उसके चेहरे का रंग ज़रूर फीका पड़ता जा रहा था।

करीब पाँच से दस मिनट के बाद मंजरी ने अपनी नज़रें मोबाइल से हटाई और आँख बंद कर के सोच में डूब गयी। रौनक सिंह और केवल राम अब भी चुपचाप बस उसे ही निहार रहे थे। इतना तो वो दोनों समझ ही चुके थे कि रिपोर्ट में जो कुछ भी लिखा है वो उनकी मुश्किलें कम करने के बजाये बढ़ाने ही जा रहा होगा।

"ये केस इतनी बुरी तरह से उलझता जा रहा है की कुछ समझ नहीं आ रहा क्या किया जाए!" मंजरी धीमे से बुदबुदाती हुई कुर्सी से उठ खड़ी हुई और आदत के अनुसार वहीं कुर्सी के चारों तरफ चहलकदमी करने लगी।

उन दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा पर दोनों में हिम्मत न हुई कि अपनी सीनियर अफसर से इस बाबत कुछ पूछ सकें। मंजरी कुछ देर तक यूँ ही चलती रही। वो दोनों टकटकी लगाए उसे घूरते रहे।

"ऐसा कैसे हो सकता है? कोई ऐसे भला किसी को कैसे मार सकता है?" मंजरी मुँह में पेन दबाती हुई वापस कुर्सी पर आ बैठी और इस बार उसने रौनक सिंह की ओर एक नज़र डाली।

वो सकपका सा गया। उसे कुछ भी समझ न आया के वो इस बात का क्या जवाब दे। उसने घबरा कर केवल राम की ओर देखा जो उसी की तरह चेहरे पर बड़ा सा शून्य लेकर मंजरी को घूर रहा था।

"कुछ समझ नहीं आ रहा। ये क़त्ल करने का कौन सा नया तरीका है?" मंजरी इस बार सीधे रौनक सिंह की आँखों में झाँक रही थी।

"क्या हुआ मैडम जी? कैसे हुआ क़त्ल?" रौनक सिंह बस इतना ही बोल सका।

"ब्लेड के टुकड़े!" मंजरी के मुँह से निकला।

"ब्लेड के टुकड़े? कहाँ पर? उन तीनों के शरीर पर तो खरोंच का एक भी निशान नहीं था?"

केवल राम की आँखें भी फ़ैल गयी थीं ये बात सुन कर।

मंजरी ने एक गहरी साँस अंदर खींची और फिर बाहर करती हुयी बोली:

"उन तीनों की विसरा रिपोर्ट में ये बात सामने आयी है कि उनके खाने में ब्लेड के छोटे-छोटे टुकड़े मिले हुए थे जिनकी वजह से उनकी आँतों में और पेट के अंदरूनी हिस्सों में घाव हो गया। इंटरनल ब्लीडिंग की वजह से और पेट के एसिड की वजह से उनका दम घुट गया और वो मर गए!"

मंजरी ने अपनी बात ख़त्म करी और उन दोनों के चेहरे पढ़ने लगी। वो दोनों अभी भी उसकी तरफ़ हैरत से देखे जा रहे थे। उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

"पेट में ब्लेड के टुकड़े? खाने में ब्लेड के टुकड़े? ऐसे भला कोई किसी को कैसे मार सकता है?" रौनक सिंह और केवल राम की सवालिया आँखें अगर बोल पातीं तो ज़रूर मंजरी से यही सवाल करतीं।

"सिर्फ वही जो बहुत शातिर हो और जिसके मन में इनके लिए नफरत भरी हुई हो।"मंजरी ने भी जैसे आँखों ही आँखों में उन्हें जवाब देते हुए कहा।

"उन लोगों ने हादसे वाली रात... नहीं अब उसे क़त्ल वाली रात कहना ज़्यादा मुनासिब होगा, क़त्ल वाली रात डिनर में मटन खाया था और इसी मटन के टुकड़ों में किसी ने ब्लेड के छोटे छोटे टुकड़े मिला दिए जिनसे इन तीनों की मौत हुई!" मंजरी उन्हें जानकारी देती हुई बोली।

कुछ देर के लिए वहाँ नीम ख़ामोशी पसर गयी। ऐसी ख़ामोशी जो चीख-चीख कर उनसे क़ातिल का नाम पूछ रही थी। पर वो उस नाम से अब और भी दूर हो चले थे।

"पर मैडम जी ऐसे कैसे मुमकिन हुआ की खाने वालों को मालूम ही नहीं पड़ा की उनके खाने में ब्लेड के टुकड़े मिले हुए हैं ?" केवल राम की आवाज़ में हैरानी साफ़ दिख रही थी।

"ये देखो इस फोटो में देखा जा सकता है कि उस शातिर क़ातिल ने ब्लेड के कितने छोटे छोटे टुकड़े किये थे। ये इतने छोटे थे कि वो मटन के टुकड़ों में इस तरह मिल गए की खाने वालों को कोई शक तक न हुआ। ये जो कोई भी है इसने इतनी प्लानिंग के साथ ये काम किया है कि ब्लेड के टुकड़ों को नाख़ून बराबर तोड़ के इनके खाने में मिलाया।" मंजरी एक बार फिर उन दोनों की आँखों में झांकती हुई बोली।

"कितना घटिया इंसान, कितना पत्थर दिल, कितना निर्दयी होगा वो इंसान जिसने पहले उन बेचारों के साथ बैठ कर खाना खाया और फिर ये जानते हुए कि उनके खाने में उसने ब्लेड के ये टुकड़े मिला दिए हैं चुपचाप वहाँ से निकल गया।" रौनक सिंह की आवाज़ में गुस्सा भरा हुआ था।

"निकल गया या निकल गयी!" मंजरी उसे टोकती हुई बोली।

मंजरी की ये बात सुन कर रौनक सिंह और केवल राम दोनों एक दूसरे को देखने लगे।

"मतलब आप ये कहना चाहती हैं कि इस क़त्ल में किसी लड़की का भी हाथ हो सकता है?" रौनक सिंह पूछ बैठा।

"बिल्कुल! इस में इतना हैरान होने वाली क्या बात है? मत भूलो कि मनमोहन कपूर ने अपनी वसीयत से नताशा को बेदखल कर दिया था, और आज के टाइम में तो लोग थोड़े से पैसों के लिए एक दूसरे की जान ले लेते हैं, यहाँ तो मामला करोड़ों का है!" मंजरी के चेहरे पर काफी समय बाद ही सही पर एक हल्की सी मुस्कान देखी जा सकती थी।

केवल राम ने धीमे से सहमति में सर हिलाया। रौनक सिंह को भी मंजरी की बात में दम नज़र

आया। उस रोज़ हॉस्पिटल में नताशा के साथ कुणाल की मौजूदगी ने वैसे ही लोगों को बातें बनाने के लिए मसाला दे ही दिया था।

ये तीनों अपनी अपनी बातों पर गौर कर ही रहे थे कि तभी मंजरी के मोबाइल पर एक और मैसेज आया। उसने लपक कर मोबाइल उठा लिया।

“डॉक्टर अरुण का मैसेज है। डाटाबेस से डीएनए मैचिंग प्रोसेस से कोई सफलता हाथ नहीं लगी।” मंजरी ने वो रिपोर्ट मोबाइल में पढ़ते हुए कहा।

“यानी वह डीएनए जिस किसी का भी है उसका कोई क्रिमिनल रेकॉर्ड नहीं है।” रौनक सिंह बोला।

“ऐसा ही लग रहा है।” मंजरी हताश स्वर में बोली।

□□□

सड़क पर सन्नाटा पसरा हुआ था। ठंड ऐसी थी की आवारा कुत्ते भी नज़र नहीं आ रहे थे। रुक रुक कर हो रही बारिश ने ठंड और बढ़ा दी थी। शहर भर के लोग उस वक़्त अपने अपने घरों में गर्म कंबल, रज़ाइयों में गर्म पानी की बोतल या इलेक्ट्रिक कंबल लिए मज़े से सो रहे थे, पर मंजरी और उसकी टीम के नसीब में ये कहाँ था।

बाहर पड़ती ठंड ने जहाँ जिस्म कँपकँपा दिए थे, वहीं इस केस ने उन तीनों के दिमाग की नसों को झनझना कर रख दिया था।

“ये केस तो बुरी तरह से उलझा हुआ है। मुझे याद है रिटायर्ड कमिश्नर साहब ने मुझे एक केस के बारे में बताया था जो पुलिस फाइल्स में कोल्ड केस[1] के तौर पर दर्ज है। मुझे लग रहा है कहीं ये केस भी हमारी फाइल्स में एक कोल्ड केस बन के क़ैद न हो जाए!” मंजरी रौनक सिंह की तरफ देखती हुई बोली। उसकी आवाज़ में निराशा घर कर चुकी थी।

कभी हार ना मानने वाली मंजरी को फिलहाल तो हर तरफ बस अँधेरा ही नज़र आ रहा था।

“ये एक ऐसी गुत्थी है जो फिलहाल तो सुलझती नज़र नहीं आ रही!” वो अपना हाथ ज़ोर से टेबल पर मारती हुई बोली।

रौनक सिंह और केवल राम चुप रहे। वो जानते थे कि सही में ये क़त्ल का केस नहीं बल्कि ऐसी गुत्थी बन गया था जिसका सुलझना नामुमकिन लग रहा था।

मंजरी आँखें बंद कर अपना चेहरा अपने हाथों से ढँके गहरी सोच में गुम थी।

“कहीं ऐसा तो नहीं कि ये कोई आत्मा-वात्मा का खेल हो?” केवल राम अपना दिमाग दौड़ाते हुए बोला।

“क्या बकवास कर रहे हो?” मंजरी जैसे गहरी सोच से बाहर आती हुई बोली।

“नहीं मैडम जी, आप नहीं जानती होंगी। हमारे गाँव में इसे छल कहते हैं। कहा जाता है कि जब कोई मुनष्य अपनी इच्छाएँ पूरी करे बिना समय से पहले मर जाता है, तो उसकी आत्मा भटकती रहती है। वो आत्मा एक शरीर के लिए बेचैन यहाँ से वहाँ तब तक घूमती रहती है जब तक उसे एक स्वस्थ शरीर न मिल जाए। उसके बाद वो उस शरीर के ज़रिये अपने अधूरे काम पूरे करती है।” केवल राम अपनी ही धुन में बोले जा रहा था।

“तुम्हारा दिमाग ख़राब हो गया है केवल राम? कुछ भी बके जा रहे हो?” मंजरी अपना आपा खो बैठी। एक तो वैसे ही केस में उन्हें कुछ खास हासिल हुआ नहीं था, ऊपर से अब उनकी टीम

में ये आत्मा और भूतप्रेत जैसी बातें उठने लगी थी।

“आज के टाइम में भी तुम इन दकियानूसी बातों पर विश्वास करते हो केवल राम? पुलिस वाले हो कर तुम ऐसी बेबुनियाद बातें कर रहे हो? अपना दिमाग लगाने के बजाय, एक सही और पुख़्ता सुबूत ढूँढने के बजाय तुम ये कह रहे हो कि ये काम किसी आत्मा का है?” मंजरी बुरी तरह से बिफर गयी थी।

“मैडम जी वो इसका मतलब... शायद ये कहना चाहता है कि हो सकता है कोई जादू टोना या...!” रौनक सिंह की ज़ुबान सूखने लगी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो अब इस स्थिति को कैसे संभाले। उसे केवल राम की बात सही लग भी रही थी, पर खुले तौर पर मंजरी के सामने उसे स्वीकार करने की उसकी हिम्मत नहीं थी।

रौनक सिंह उसका ये रूप देख कर डर गया। एक तो आज तक उन दोनों ने किसी महिला अफसर के नीचे कभी काम नहीं किया था, ऊपर से केवल राम की बात ने मंजरी को बुरी तरह से बौखला दिया था।

“आप भी रौनक सिंह जी?” मंजरी को अपने कानों पर विश्वास न हुआ। रौनक सिंह केवल राम से सीनियर था इसलिए मंजरी को उससे तो ऐसी उम्मीद नहीं थी।

वो सर हिलाते हुए कुर्सी से उठ खड़ी हुई। रौनक सिंह और केवल राम भी देखा देखी उठ खड़े हुए।

□□□

अध्याय 14

नताशा और कुणाल उस छोटी सी कॉफ़ी शॉप में एक किनारे सबसे दूर बैठे हुए थे। भीड़ में होते हुए भी भीड़ से एकदम अलग। कुणाल एकटक नताशा को ही निहारे जा रहा था।

"ऐसे क्या देख रहे हो? कभी देखा नहीं है क्या?" नताशा सबसे नज़रें चुराती हुई उसे देख कर बोली।

"क्यों अब तुम्हें देख भी नहीं सकता क्या?" कुणाल संजीदा हो चला था।

"तुम जानते हो कुणाल लोग तुम्हें और मुझे ले कर क्या क्या बातें बनाते हैं!" नताशा बोली।

कुणाल ने जवाब में उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। नताशा ने एक नज़र दाएँ बाएँ दौड़ायी और फिर हाथ छुड़ाती हुई बोली:

"कुणाल प्लीज़! एक तो हमें आजकल ऐसे मिलना नहीं चाहिए। फिर भी मैं तुम्हारे कहने पर तुमसे मिलने आती हूँ!"

"एक्सक्यूज़ मी? मेरे कहने पर मिलने आती हो? इसका मतलब तुम्हारा मिलने का मन नहीं करता?" कुणाल उसकी आँखों में झाँकते हुए बोला।

"मेरा वो मतलब नहीं है कुणाल। मैं बस इतना कह रही हूँ कि बस ये केस ख़त्म हो जाने दो। मैं नहीं चाहती की बेवजह हम दोनों को लेकर...." कुणाल ने एकदम से अपनी उँगलियाँ उसके होंठों पर रख दी।

"नताशा तुम अच्छे से जानती हो कि मैंने कभी तुम्हें खुद के लिए पाने की कोशिश नहीं करी। पहले तो तुम इस बात से भी अनजान थी की मैं तुम्हें कॉलेज के दिनों से चाहने लगा था।बचपन की हमारी दोस्ती कब प्यार में बदल गयी ये मैं खुद नहीं जानता। पर जब तक समझ सका तब तक तुम ध्रुव के साथ शादी कर के मुझसे दूर चली गयी थी।" कुणाल एक ही साँस में अपने दिल के जज़्बात बयाँ कर रहा था।

नताशा इस बार उसे बड़े ध्यान से देख रही थी।

"मैंने उसके बाद भी तुम्हारा इंतज़ार किया, चुपचाप। हर रोज़ तुम्हारे घर के चक्कर लगाता रहता। दिल के किसी कोने में पता नहीं क्यों, पर एक उम्मीद थी कि तुम वापस आओगी। और मेरे प्यार की शिद्दत देखो, तुम वापस आयी। तुम हमेशा के लिए मेरे पास वापस चली आयी नताशा।" बोलते बोलते उसका गला रुंध गया और उसकी आँखों से कुछ बूँदें टपक गयी।

नताशा ने उन बूँदों को अपने हाथों में समेट लिया। उसकी आँखें भी भीग गयी थीं।

"मैंने हमेशा तुम में एक सच्चा और प्यारा दोस्त देखा है कुणाल। मैं अपनी ज़िंदगी के इस मोड़ पर अगर किसी पर पूरी तरह से भरोसा कर सकती हूँ वो तो सिर्फ तुम्हीं हो। मुझे नहीं पता मैं इस रिश्ते को क्या नाम दूँ और सच कहूँ तो शायद मैं हमारे इस रिश्ते को कोई नाम देना भी नहीं चाहती। पर बस इतना जानती हूँ कि तुम मेरी ज़िंदगी का एक बहुत बड़ा हिस्सा हो, जिससे मैं अब अलग नहीं रह सकती। मैं तुम्हारे लिए परेशान रहती हूँ कुणाल, और तुम्हें किसी भी तरह की

परेशानी में नहीं देख सकती। इसलिए चाहती हूँ की जब तक ये कपूर विला वाला केस ख़त्म नहीं होता, हमें थोड़ा कम मिलना जुलना चाहिए।” नताशा की आवाज़ में एक सच्चाई थी। एक दर्द था।

“हम साथ हैं ये बात सब जान चुके हैं नताशा। उस दिन भी हॉस्पिटल में सब ने हमें साथ देख तो लिया है, फिर डर कैसा?” कुणाल बोला।

“वही तो डर है कुणाल। मैं नहीं चाहती कि बात और आगे बढ़े। वो एसीपी मंजरी हमें जिस तरह से उस दिन देख रही थी, मुझे साफ़ नज़र आ रहा था कि वो इतनी आसानी से हमारा पीछा नहीं छोड़ेगी। और मैं उसे कोई ऐसा मौका नहीं देना चाहती।” नताशा ने अपने दिल की बात उसके सामने रखते हुए कहा।

“बात आगे बढ़ चुकी है नताशा। ये देखो!” कहते हुए कुणाल ने अपने मोबाइल की गैलरी खोल एक तस्वीर उसके सामने रखते हुए जवाब दिया।

“ये? ये कब? किसने ली ये तस्वीर?” नताशा तस्वीर देख बुरी तरह से चौंक गयी थी।

“मेरे सारे दोस्त जानते हैं की मैं तुमसे बेपनाह मोहब्बत करता हूँ। ये तस्वीर पिछले महीने की है जब हम लोग पुरानी पहाड़ी पर गए थे एक संडे को। वहाँ तुम थक कर जब मेरे काँधे पर सर रख के कुछ देर के लिए सुस्ता रही थी तब ये तस्वीर मेरे दोस्त वैभव ने ली थी। मैं जब भी अकेले बेचैन होता हूँ ना, तो ये तस्वीर देख कर दिल को एक सुकून मिल जाता है नताशा!” कुणाल मुस्कुराते हुए बोला।

नताशा कुछ पल के लिए यकायक चुप हो गयी जैसे वो किसी गहरी सोच में डूब गयी हो।

“ओह शिट!” अचानक वो बोली। उसके चेहरे के भाव बदल चुके थे। उसकी आँखों में एक ख़ौफ़ सा नज़र आ रहा था।

“क्या हुआ?” कुणाल बोला।

“याद है तुमने एक बार ऐसी कुछ तस्वीरें एक एनवेलप में डाल कर मुझे दी थीं। कुछ तस्वीरें हमारे कॉलेज टाइम की थीं और कुछ ऐसी ही किसी जगह की जहाँ हम पिछले दो तीन महीनों में गए थे। वो एनवेलप मुझसे जल्दीबाज़ी में वहीं कपूर विला में ही छूट गया है। अगर वो एनवेलप किसी के हाथ लग गया तो…” नताशा के होंठ काँपने लगे थे।

“अरे तो इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है नताशा? तुम्हारी कुछ तस्वीरें हैं मेरे साथ और उनमें ऐसा कुछ भी ग़लत नहीं है।” कुणाल उसे समझाते हुए बोला।

“तुम समझ नहीं रहे हो कुणाल, अगर वो तस्वीरें पुलिस या फिर शिप्रा या शिखा में से किसी के भी हाथ लग गयी तो बहुत बड़ा बवाल खड़ा हो जायेगा। वैसे ही वो लोग मुझे अच्छा नहीं मानते। वो तुम्हारे और मेरे रिश्ते को लेकर पहले ही बहुत कुछ सोचते हैं। ऊपर से अगर वो तस्वीरें उन्हें मिल गयीं तो उनका शक और भी पुख़्ता हो जायेगा।” नताशा बुरी तरह से बौखला चुकी थी।

कुणाल कुछ देर तक सोच में डूब गया। वो जानता था कि नताशा जो भी कुछ बोल रही है वो सही है। उन तस्वीरों से बहुत कुछ बयाँ हो सकता था।

“तुम्हें पूरा यकीन है कि वो एनवेलप कपूर विला में ही है?” कुणाल ने पूछा।

“हाँ, मैं जब वो घर छोड़ के आयी थी तब उस जल्दबाज़ी में वो वहीं रह गया। तब तक मैंने उसे अपने कमरे के ड्रेसिंग टेबल के नीचे बनी जगह में छुपा दिया था।” नताशा ने जवाब दिया।

“ठीक है तुम घबराओ मत। मैं वो एनवेलप वहाँ से ले आऊँगा।” कुणाल ने इत्मीनान से जवाब

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

यदि आप दुर्लभ , प्रेरणादायक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों

और अनुवादित साहित्य की खोज में हैं,

तो हमारे विशेष 📲 टेलीग्राम चैनल से जुड़ें

और अनमोल साहित्य का आनंद लें।

📖 हमारे चैनल में आपको मिलेगा:

📚 अद्वितीय और दुर्लभ उपन्यास (Novels)

💡 प्रेरणादायक पुस्तकें (Motivational Books)

🕉️ धार्मिक ग्रंथ और किताबें

🌎 विभिन्न भाषाओं में अनुवादित साहित्य

📜 बेहतरीन पत्रिकाएं (Magazines)

🎁 और अन्य दुर्लभ साहित्यिक खज़ाने

🔔 कृपया "Join Now" बटन या लिंक पर Click करें!

HINDI BOOKS CHANNEL

Join Now▶️ (धार्मिक, आजादी, इतिहास...से सबंधित)

https://t.me/Hindi_Books_Library

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

(नई, पुरानी किताबों के लिए)

Join Now 📒

https://t.me/Book_Hindi

ENGLISH BOOKS CHANNEL

Join Now 📗

https://t.me/Google_Ebooks

Join Now 📙

https://t.me/English_Library_Books

(ALL CHANNEL LINKS)

Join Now 📘

https://t.me/Hindilibrary

दिया।

"क्या? तुम्हारा दिमाग तो सही है कुणाल? तुम कपूर विला कैसे जा सकते हो?" नताशा को अपने कानों पर यकीन न हुआ।

"तुमने उस दिन बताया था न कि कपूर विला की एक चाबी अब भी तुम्हारे ही पास है।" कुणाल ने जवाब दिया।

उसके चेहरे पर एक शैतानी मुस्कान नाच रही थी।

□□□

कपूर विला पर जैसे मनहूसियत का साया मंडराने लगा था। उस वक्त रात के ढाई बज रहे थे जब कुणाल सड़क की दूसरी तरफ से कपूर विला को निहारे जा रहा था। अँधेरे में उसे वो किसी भयावह खंडहर सा नज़र आ रहा था। वक्त वक्त की बात है उसने सोचा। जो विला कभी रोशनी से नहाया हुआ रहता था वही आज उदासी से ढँका हुआ अँधकारमय खड़ा था। वहीं खड़े खड़े कुणाल को उस वक़्त वो दिन याद आने लगा जब वो पहली बार कपूर विला आया था। नताशा के कहने पर पहली बार उसने उस घर में कदम रखा था। नवहींताशा ने बहुत ज़िद की थी इसलिए उसे वहाँ आना ही पड़ा था। नताशा का जन्मदिन था उस रोज़ और शादी के बाद अपना पहला जन्मदिन वो ध्रुव और अपने कुछ ख़ास दोस्तों के साथ मनाना चाहती थी। ध्रुव के कहने पर नताशा अपना जन्मदिन घर पर ही मनाने के लिए तैयार हो गयी थी। तब पहली बार कुणाल और ध्रुव का आमना सामना हुआ था।

नफरत थी उसे ध्रुव से, उसके नाम तक से भी। अगर ध्रुव नताशा की ज़िंदगी में ना आया होता तो नताशा आज उसकी होती। एक तेज़ ठंडी हवा के झोंके ने कुणाल की सोच पर कुछ देर के लिए लगाम लगाई। वो अभी भी कपूर विला को घूरे जा रहा था और पुरानी यादों के समंदर में गोते लगा रहा था। ध्रुव का ख्याल आते ही कुणाल का मन खट्टा हो चला था।

'काश मैंने अपने दिल की बात नताशा को पहले ही बोल दी होती!'

'काश उस वक़्त मैं थोड़ी सी हिम्मत जुटा का उसको अपने दिल का हाल बयाँ कर देता!'

'काश मेरी नौकरी लग गयी होती तो मैं नताशा के पापा से उसका हाथ कब का माँग लेता!'

पर अफ़सोस ऐसा कुछ हो न सका और कुणाल के दिल में उठते ये अरमान वहीं धरे के धरे रह गए। अब कई ऐसे काश थे जो बेताल बने उसकी पीठ पर सवार थे और वो उन्हें ढोने को मजबूर था। नताशा की ध्रुव से बढ़ती नजदीकियों ने उसे कुणाल से दूर कर दिया और फिर वो दिन भी जल्द ही आ गया जब नताशा कुणाल से हमेशा हमेशा के लिए बहुत दूर चली गयी थी।

कुणाल उस रोज़ बहुत देर तक रोता रहा था। उसका दिल इतनी बुरी तरह से टूटा था उसमें साँस लेने तक की आरज़ू नहीं बची थी। उसने किसी तरह से अपने टूटे दिल के टुकड़ों को इकट्ठा कर के ज़िंदगी जीनी शुरू कर दी थी। पर उस बेनूर ज़िंदगी में रौशनी की कोई उम्मीद दूर दूर तक नहीं थी।

कहते हैं ऊपर वाले के खेल भी बड़े अजीब से होते हैं। वो कब किस मोहरे से कौन सी नई चाल चल दे, कोई नहीं जानता। कुछ ऐसा ही कुणाल के साथ भी हुआ जब ध्रुव एक सड़क हादसे का शिकार हो इस दुनिया से चल बसा। वो अलग बात है कि उस हादसे का जितना दर्द कुणाल को होना चाहिए था, उसका एक क़तरा भर भी उसे न हुआ। बल्कि वो तो दिल से खुश था क्यूँकि अब

नताशा वापस उसकी ज़िंदगी में आ सकती थी। कम से कम अब उसके पास जीने की एक नयी उम्मीद तो थी।

ठंडी हवा के एक और थपेड़े ने कुणाल को वापस पुरानी यादों से बाहर फेंक दिया। उसने आस पास नज़र दौड़ाई। दूर-दूर तक अँधेरा फैला हुआ था और आदमज़ात का कहीं कोई अतापता भी नहीं था।

कुणाल ने एक गहरी साँस ली और अपने हाथ पर पहले गर्म दस्तानों को ऊपर तक खींचते हुए कपूर विला की दीवार फाँदने के लिए आगे बढ़ा। 'अच्छा हुआ कपूर साहब ने अपनी ज़िंदगी में कोई चौकीदार नहीं रखा वरना उसके लिए ये काम मुश्किल हो जाता। लेकिन होता तो शायद उनका कत्ल भी न हुआ होता।', ये ख्याल चलते चलते उसके मन में आए बिना न रह सका। आसपास सफ़ेद कोहरा बढ़ता जा रहा था पर इस सबसे बेपरवाह वो दीवार पर चढ़ ही गया और अगले ही पल उसने नीचे कूद लगा दी। नीचे घास की मोटी परत थी इस वजह से आवाज़ ज़्यादा नहीं हुई। अब कुणाल पोर्च से होता हुआ कपूर विला के मुख्य दरवाज़े पर पहुँच चुका था।

उसने नताशा की दी हुई चाबी से दरवाज़ा खोलने की कोशिश करने के लिए चाबी की-होल में डाली। ठंड की वजह से उसके हाथ काम नहीं कर रहे थे, हालाँकि उसने गर्म दस्ताने भी पहने हुए थे। कुछ देर की कोशिश के बाद आखिर वो दरवाज़ा खुल ही गया और कुणाल दबे पाँव कपूर विला के अंदर घुस गया।

अंदर आते ही उसने अपनी जेब से छोटी सी पेंसिल टोर्च निकाली और उसकी नीली रौशनी में दबे पाँव वो नीचे हॉल से ऊपर को जाती सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। वो ये बात अच्छे से जानता था कि कपूर विला में मनमोहन कपूर की दोनों बेटियाँ शिखा और शिप्रा अभी भी रह रही थीं। जब से वो हादसा वहाँ पेश आया था तभी से वो दोनों बहने वहाँ रुक गयी थीं।

कुणाल दबे पाँव सीढ़ियों से होता हुआ ऊपर की मंज़िल में चला आया। वहाँ सबसे पहले सोनाली का कमरा था और उसके कुछ आगे जाकर नताशा और ध्रुव का कमरा हुआ करता था। कुणाल ने महसूस किया उसके माथे पर उस सर्दी के बावजूद पसीने की बूँदें उभरने लगी थीं। शायद माहौल ही कुछ ऐसा था। उसे अपने दिल की धड़कने साफ़ साफ़ सुनाई दे रहीं थीं। वो ये काम जल्द से जल्द ख़त्म करके वहाँ से निकल जाना चाहता था।

आखिरकार वो नताशा के कमरे तक पहुँच ही गया। उसने नताशा से ली हुई की-रिंग से दूसरी चाबी आगे करी और दरवाज़े में बने उस की-होल में उसे डाल दिया। पल में ही दरवाज़ा खुल गया और कुणाल अब नताशा के कमरे के अंदर जा घुसा था। अंदर आ कर उसे टोर्च की रौशनी में ड्रेसिंग टेबल ढूँढने में कोई दिक्कत नहीं हुई। वो सीधे ड्रेसिंग टेबल के नीचे झुका और वहाँ कुछ ढूँढने लगा। उसका दिल धाड़-धाड़ करके उसकी पसलियों में बज रहा था। माथे का पसीना टपकते हुए उसके गालों पर से होता हुआ नीचे गिरता जा रहा था। तभी नताशा के कमरे के ठीक नीचे वाली मंज़िल पर उसे कुछ आहट सुनाई पड़ी। कहीं से कोई दरवाज़ा खुलने की आवाज़ ने कुणाल को बुरी तरह से चौंका दिया। उसने झट से पेंसिल टोर्च बंद कर दी। वो किसी भी तरह का कोई खतरा नहीं उठाना चाहता था। कोई था जो रात के उस वक़्त जाग गया था। कुणाल कुछ देर के लिए वहीं दुबका रहा। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था। उसके माथे का पसीना बढ़ता ही जा रहा था।

वो साँस थामे यूँ ही बैठा रहा। कुछ देर के बाद नीचे से आवाज़ें आनी बंद हो गयीं। कुणाल ने

पसीना पोंछा और फिर अपने काम में जुट गया।

अचानक कुणाल के हाथ में एक छोटा सा बैग लग गया। उसने झट से उसे बाहर खींचा और टॉर्च की रौशनी में देखने लगा। वो एक भूरे रंग का पुराना सा बैग था। कुणाल ने उसकी ज़िप खोली और अंदर से एक लिफाफा बाहर खींच लिया। लिफाफे के अंदर से उसे नताशा की वही तस्वीरें मिली जिनको चुराने के लिए उसने इतना बड़ा ख़तरा उठाया था। कुणाल के चेहरे पर अब एक मुस्कराहट तैर रही थी। वो जानता था की नताशा को बचाने के लिए वो कुछ भी कर सकता था। किसी भी हद तक जा सकता था।

तभी बाहर जैसे किसी के कदमों की आवाज सी आई और कुणाल हड़बड़ाते हुए वहाँ से निकल गया।

□□□

अध्याय 15

कपूर विला में अगले रोज़ हड़कंप मचा हुआ था। शिखा रोज़ की तरह सुबह जल्दी उठ गयी थी। घर में लगे पौधों को पानी डालती हुई जब वो ऊपर की मंज़िल पर पहुँची तो नताशा के कमरे के बाहर मिट्टी लगे जूतों के निशान देख उसका माथा ठनका।

एक अनहोनी की आशंका से उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा था। उसके पास हमेशा से एक मास्टर की रहती थी और उसी से जब उसने नताशा के कमरे का दरवाज़ा खोला तो सामने का मंज़र देख उसके होश फ़ाख्ता हो गए। ड्रेसिंग टेबल के आसपास सामान बिखरा हुआ था।

“शिप्रा.....शिप्रा!” वो चिल्लाती हुई ड्रेसिंग टेबल तक दौड़ी हुई आयी। कुछ ही देर में वो दोनों वहाँ का माज़रा देख ये समझ चुकी थीं की नताशा के कमरे से उसकी कुछ निजी तस्वीरें गायब हुई हैं, क्यूँकि पिछली रात कुणाल से अँधेरे और जल्दबाज़ी के कारण एक तस्वीर वहीं गिर गयी थी। उस तस्वीर में कुणाल और नताशा एक साथ नज़र आ रहे थे।

“मैं तो उसी दिन उसे वहाँ देख के समझ चुकी थी कि दोनों के बीच में बात बहुत आगे तक पहुँच गयी है।” शिप्रा मुँह बनाती हुई बोली।

“मुझे तो वो कुणाल शुरू से ही पसंद नहीं था। ध्रुव के जाने के बाद से उसका नताशा की ज़िंदगी में आना जाना कुछ ज़्यादा ही बढ़ गया लगता है। ये काम पक्का उसी का होगा क्यूँकि और कोई दूसरा ऐसी हिम्मत नहीं कर सकता।” शिखा अपने आप को संयत करती हुई बोली।

“मतलब नताशा यहाँ आयी और अपनी तस्वीरें चुरा कर ले गयी?” शिप्रा उसकी तरफ देखती हुई बोली।

“नहीं, नताशा नहीं। मुझे नहीं लगता वो ये सब कर सकती है। ये काम कुणाल का होगा।” शिखा ने जवाब दिया।

दोनों कुछ देर के लिए वहीं कमरे में ही बैठ गयीं।

“पापा ने जब से नताशा को वसीयत से बाहर किया है तभी से वो अपने रंग दिखाने लगी है।” शिप्रा ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा।

“मुझे तो अभी भी ध्रुव के एक्सीडेंट पर शक ही है।” शिखा के मुँह से निकल गया। ये वो एक बात थी जो वो काफी समय से अपने दिल के तहखाने में छुपाये बैठी थी।

“मतलब? तुम क्या कहना चाहती हो?” शिप्रा उसे घूरती हुई बोली।

शिखा कुछ देर चुप रही और फर्श को घूरने लगी। मानो उस शून्य में से उसे कोई जवाब मिलने की उम्मीद हो। शिप्रा को उसकी ये चुप्पी बुरी तरह से चुभ रही थी। वो झल्ला उठी।

“अब बोलोगी भी क्या बात है? ये आज ध्रुव के एक्सीडेंट का ज़िक्र कैसे?” उसने शिखा को कंधे से पकड़ते हुए सवाल किया।

“शिप्रा, ध्रुव जिन हालात में मारा गया उनसे क्या तुम्हें नहीं लगता कि वो एक एक्सीडेंट नहीं था?” कहते हुए शिखा की आँखें भर आयी थीं।

“ये क्या बोल रही हो तुम? सब जानते हैं कि ध्रुव की कार एक शराबी की गाड़ी से ठुकने के बाद बेकाबू हो कर सड़क के किनारे लगे एक डिवाइडर से टकरा कर कई फ़ीट हवा में उछलती हुई ज़मीन पर जा गिरी थी।” शिप्रा ने हैरानी जताते हुए कहा।

“सब तो ये भी जानते हैं कि नताशा का मन इस घर में शुरू से ही नहीं लगता था। वो तो पापा ने ध्रुव की ज़िद के आगे हार मानते हुए दोनों की शादी करवा दी थी। जानते तो सब ये भी हैं की ध्रुव कभी भी गाड़ी तेज़ स्पीड में ड्राइव नहीं करता था। फिर क्या असल में कोई शराबी था या पुलिस ने ऐसे ही मान लिया था?” शिखा के आँसू बहने लगे।

शिप्रा भी इस बार खुद को न रोक सकी। उसका गला रुंध गया था।

“पर पुलिस ने तो हर तरह से तहक़ीक़ात कर के ही वो केस बंद किया था!” वो बोली।

“पुलिस ने केस बंद कर दिया होगा शिप्रा, पर मैं अपने भाई के क़ातिल को आज भी ढूँढ रही हूँ, और जहाँ तक मेरा अंदाज़ा है वो और कोई नहीं नताशा ही है।” शिखा की आँखें अंगार उगल रही थीं।

शिप्रा अपने आँसू पोंछते हुए उसके करीब चली आयी और उसके कंधे पर हाथ रखती हुई बोली:

“अगर ऐसा है तो तुमने पुलिस को क्यों नहीं कुछ बताया? अगर तुम्हें इतना ही भरोसा है अपनी बात पर तो फिर अब तक चुप क्यों रही तुम?”

“क्यूँकि मेरे पास अब तक कोई ठोस सबूत नहीं था शिप्रा। पर अब लगता है पुलिस से अपने दिल की बात ज़ाहिर करनी ही होगी, अब तो ये सबूत भी है हमारे पास। इस कमरे से नताशा की कुणाल के साथ ये तस्वीर अब सब साफ़ साफ़ बयाँ कर रही है कि इस मिलीभगत में वो दोनों ही शामिल हैं।” शिखा अपनी बहन की तरफ देखती हुई बोली।

दोनों कुछ देर तक उस तस्वीर को लिए बैठी रही। उन दोनों की आँखों में नताशा के लिए नफरत साफ़ देखी जा सकती थी। शिखा अपनी ही सोच में गुम थी। वो एसीपी मंजरी के पास जाने का इरादा भी कर चुकी थी।

“तुम मंजरी के पास जाने की सोच रही हो ना?” शिप्रा उसका दिमाग पढ़ती हुई बोली।

“हाँ, मैं मंजरी को जा कर सब बता दूँगी। हमें अब इस मामले में ज़्यादा देर नहीं करनी चाहिए। नताशा को उसकी किये की सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिए।” शिखा ने उसकी तरफ देखते हुए कहा।

“ठीक है! मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ। देखते हैं इस बार ये नताशा कैसे खुद को निर्दोष साबित करती है!” शिप्रा उठी और कमरे से बाहर आती हुई बोली।

शिखा वहीं बैठी रही। उसके दिमाग में बहुत कुछ चल रहा था। उसे अब लगने लगा था कि गुस्से में उसने काफी कुछ कह तो दिया, पर क्या सही में उसके पास कोई ठोस सबूत है जो नताशा को गुनाहगार साबित कर सके? कुणाल और नताशा के रिश्ते को कुछ देर के लिए नज़रअंदाज़ कर भी दें तो क्या सच में नताशा का हाथ ध्रुव के एक्सीडेंट में हो सकता है? क्या ध्रुव का एक्सीडेंट हुआ भी था या वो सब एक सोची समझी साज़िश का हिस्सा था?” ऐसे कई सवाल शिखा के मन में हिचकोले खा रहे थे। पर उनके जवाब में उसके दिल के समंदर में कहीं खो गए थे, जिन्हे चाह कर भी वो ढूँढ नहीं पा रही थी।

□□□

“मैडम प्लीज़ मेरी बात मानिये और उन दोनों को यहाँ थाने में बुलाइये!” शिखा मंजरी के

सामने बैठ उसे गुज़री रात का वाकया बताने के बाद बोली। शिप्रा साथ बैठी उसे बड़े ध्यान से देखी जा रही थी।

"आपके हिसाब से कुणाल वहाँ आया और अपनी और नताशा की तस्वीरें चुरा कर ले गया?" मंजरी ने उसकी बता दोहराते हुए कहा।

"जी हाँ!" शिखा ने सहमति में सर हिलाते हुए कहा।

"एक बात बताइये उस रोज़ तो हॉस्पिटल में कुणाल सबके सामने ही वहाँ आया था ना, इसका मतलब उन दोनों को अब एक साथ दिखने में कोई दिक्कत नहीं है। फिर कुणाल सिर्फ कुछ तस्वीरें चुराने के लिए इतना बड़ा जोखिम क्यों लेगा?" मंजरी शिखा की ओर देखती हुई बोली।

"मैडम देखिये, मैं कुणाल को ज़्यादा नहीं जानती पर नताशा को फिर भी जानती हूँ, क्यूँकि वो कभी हमारे परिवार का हिस्सा थी।" बोलते बोलते शिखा की आँखों में आँसू भर आये। शिप्रा ने एक रुमाल उसकी तरफ सरकाया तो वो आँसू पोंछती हुई आगे बोली:

"नताशा शुरू से ही कपूर विला के तौर तरीकों में खुद को ढ़ाल नहीं पायी थी। उसकी कई दफे मम्मी और पापा से बहस हो चुकी थी!"

"आप क्या कहना चाहती हैं? साफ़-साफ बोलिये!" मंजरी ने पूछा।

"मैडम, डेढ़ साल पहले ध्रुव जिस हादसे में मारा गया था, वो दरअसल एक एक्सीडेंट नहीं था!" शिखा उसके करीब आती हुई बोली। उसकी आवाज़ काँप रही थी, उसकी ज़ुबान सूख रही थी।

शिप्रा उसे अभी भी घूरे जा रही थी।

"व्हाट? आप जानती है ना आप क्या कह रही हैं?" मंजरी हैरान होती हुई बोली।

"देखिये मेरे पास अभी इस बात का कोई पुख्ता सबूत तो नहीं है पर ये जो कल कुणाल ने हरकत की है उसके चलते मुझे तो पूरा शक है कि उस हादसे के पीछे भी नताशा और कुणाल का ही हाथ था!" शिखा ने अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा।

मंजरी कुछ देर चुप रही। वो लगातार शिखा को देखे जा रही थी। शिखा की आँखों में एक दर्द था, अपने भाई के गुनाहगार और अपने माँ बाप और बहन के क़ातिल को ढूँढने की इच्छा की सच्चाई भी थी।

"देखिये मुझे आप के साथ पूरी हमदर्दी है पर ऐसे बिना किसी सबूत के आप कैसे किसी पर इतना बड़ा इलज़ाम लगा सकती हैं? और वो भी तब जब पुलिस उस केस को कब का बंद कर चुकी है।" मंजरी ने उसे समझाया।

"मैडम, सच मानिये हमें तो ये भी पता नहीं था कि नताशा के कमरे में उसकी कुछ तस्वीरें रखी हुई हैं। क्यूँकि वो जब ध्रुव की मौत के बाद घर छोड़ के गयी थी तो अपनी सभी चीजें अपने साथ ले गयी थी। वो तो कल जब उसके कमरे का दरवाज़ा खुला मिला और अंदर जा के देखने पर वो एक तस्वीर गिरी हुई मिली, तो हमें सारा माज़रा समझ आया। क्या आप प्लीज़ एक बार मेरे कहने पर ध्रुव का केस नहीं खोल सकतीं? क्या पता उस केस से हमें इस केस में कोई मदद मिल जाए?" शिखा हाथ जोड़ती हुई बोली।

मंजरी ने एक नज़र अपने दोनों सहयोगियों की तरफ घुमाई। वो दोनों चुपचाप काफी देर से ये वार्तालाप सुन रहे थे। पर दोनों मंजरी के वहाँ रहते खुद भला क्या फैसला लेते।

"ठीक है, मैं देखती हूँ क्या हो सकता है। मुझे इसके लिए ऊपर से परमिशन लेनी होगी। मैं

आपसे वादा तो नहीं कर सकती पर सिर्फ इतना कह सकती हूँ कि मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूँगी!" मंजरी शिखा की आँखों में झाँकती हुई बोली।

मंजरी ने उसी पल रौनक सिंह को कुणाल और नताशा को थाने में लेकर आने का आदेश दिया। आदेश मिलते ही रौनक सिंह दो हवलदारों के साथ उन दोनों के लेने निकल गया।

"कपूर विला में जो हादसा हुआ है वो एक बेहद सोची समझी चाल का हिस्सा है। जिस तरह से उन तीनों के खाने में ब्लेड के टुकड़े मिलाये गए थे, लगता है कोई उन्हें बेहद ख़ौफ़नाक और दर्दनाक मौत देना चाहता था।" मंजरी रौनक सिंह के जाने के बाद शिखा और शिप्रा से मुख़ातिब होती हुई बोली।

मंजरी का इतना कहना ही था कि शिप्रा फफक फफक कर रो पड़ी। शिखा ने अपनी बहन का हाथ थामा और उसे चुप कराने लगी।

"मंजरी जी हम बस इतना चाहते हैं कि गुनाहगार को उसके किये की इतनी कड़ी सजा मिले कि उसकी रूह तक काँप जाए। बस वो कहीं बच के न निकल पाए!" शिखा एक बार फिर मंजरी के सामने गुहार लगाती हुई बोली।

"हम अपनी तरफ से कोई भी कमी नहीं रखेंगे शिखा जी, आप बेफिक्र रहिये। हालाँकि ये केस एक ऐसी गुत्थी बन चुका है जिसने हम सभी को बुरी तरह से उलझा रखा है, पर हमें उम्मीद है कि बस एक गाँठ खुलने की देर है और फिर ये गुत्थी खुद-ब-खुद सुलझ जाएगी।" मंजरी ने उसे आश्वासन देते हुए कहा।

"वैसे आपको किसी पर शक है?" इस बार शिप्रा ने बात आगे बढ़ाई। वो काफी देर से खुद को रोके हुए थी। उसकी आँखें रोने की वजह से लाल हो चली थीं और उसका काजल भी फ़ैल गया था।

"जब तक असली गुनाहगार पकड़ा नहीं जाता शिप्रा जी, तब तक हमें सभी पर शक़ है?" मंजरी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

शिप्रा ने जवाब सुन कर शिखा की ओर देखा। दोनों ने एक दूसरे का हाथ पकड़ कर एक दूसरे को आश्वासन सा दिया।

"नताशा और कुणाल के यहाँ आते ही मैं उन का डीएनए टेस्ट भी करवाऊँगी। अभी तक हमें नहीं पता की कपूर विला में मिलने वाला वो डीएनए किसका है। मैं अपनी तरफ से हर वो पैंतरा आजमाऊँगी जिससे मुझे क़ातिल तक पहुँचने में मदद मिल सके। क्या पता नताशा और कुणाल में से किसी एक का डीएनए कपूर विला से मिले डीएनए के साथ मैच हो जाए?" मंजरी मुस्कुराती हुई बोली। उसकी आँखों में उम्मीद की किरण नज़र आ रही थी। वो अब रौनक सिंह के लौटने का इंतज़ार करने लगी।

□□□

अध्याय 16

“मैडम ये डीएनए रिपोर्ट!” एक हवलदार ने वो लिफाफा मंजरी के टेबल पर रखते हुए कहा। सामने दो कुर्सियों पर नताशा और कुणाल पिछले छह घंटे से बैठे हुए थे। उनके चेहरे पर थकावट और झुँझलाहट साफ दिख रही थी।

मंजरी ने झट से वो लिफाफा खोला और रिपोर्ट को पढ़ना शुरू किया। वो रिपोर्ट नताशा और कुणाल के डीएनए टेस्ट की थी जिसे मंजरी ने वहाँ आते ही करवाया था। मेडिकल टीम को सख़्त निर्देश थे कि रिपोर्ट उसी रोज़ मिलनी चाहिए और फिर छह घंटे बाद अब जाकर वो रिपोर्ट उसके हाथ लगी थी। मंजरी ने पूरी रिपोर्ट इत्मीनान से पढ़ी और फिर उन दोनों की तरफ देखने लगी। इस बार उसके चेहरे पर न कोई हैरानी थी और न कोई परेशानी।

“मुझे उम्मीद तो यही थी पर फिर सोचा क्या पता शायद इस बार किस्मत हम लोगों पर मेहरबान हो जाये। कपूर विला में जिस चौथे शख़्स का डीएनए मिला था, वो तुम दोनों में से किसी से भी मैच नहीं करता!” मंजरी ने बड़े आराम से अपनी बात सुनाते हुए कहा।

रौनक सिंह और केवल राम खुले मुँह से मंजरी की तरफ देख रहे थे। उन्हें यकीन नहीं हो रहा था की मंजरी ने इतनी बड़ी बात इतने आराम से कैसे बोल दी।

“अगर ये दोनों भी नहीं हैं तो फिर कौन है?” केवल राम के मुँह से बात खुद-ब-खुद निकल गयी। मंजरी ने घूर कर उसकी तरफ देखा तो वो एक कदम पीछे हट गया। मंजरी के चेहरे पर मुस्कान नाच रही थी। आज वो सच में बड़े ही अच्छे मूड में नज़र आ रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसे इस केस में होने वाली नई नई घटनाओं से अब कोई फर्क ही नहीं पड़ रहा था।

“चलो, इससे एक चीज़ तो साफ़ हुई कि कपूर विला में हुए क़त्ल में तुम दोनों सीधे तौर पर शामिल नहीं हो। पर इसका मतलब ये नहीं की तुम निर्दोष हो!” मंजरी कुणाल और नताशा की ओर देखती हुई बोली।

“मैडम मैं आपसे पहले भी बोल चुका हूँ कि उस केस से हमारा कोई लेना देना नहीं है। हम दोनों.... मेरा मतलब मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता!” कुणाल बात को संभालता हुआ बोला।

नताशा ने घूर कर उसकी तरफ देखा। कुणाल ने जिस तरह से इस बार खुद को उससे अलग कर लिया था ये बात नताशा को कुछ अच्छी नहीं लगी थी।

“कुणाल तुम क्या कहना चाहते हो? तुम्हें लगता है वो सब मैंने किया है?” नताशा खुद को काबू में नहीं रख सकी।

“मेरा वो मतलब नहीं था नताशा मैं बस यही बोल रहा हूँ कि....” कुणाल सकपका सा गया।

सामने बैठी मंजरी अभी भी उन दोनों को ही बड़े ध्यान से देख रही थी।

“टीम वर्क! हम्म...नताशा शायद तुम्हें लगता है की सारी दुनिया अंधी है, वो देख नहीं सकती। तुम्हारे और कुणाल के बीच क्या रिश्ते हैं या थे ये सभी जानते हैं नताशा। हम पुलिस वालों ने कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं। तो तुम जितना मासूम दिखने की कोशिश कर रही हो ना,

उतनी हो नहीं।” मंजरी ने नताशा को फटकारा।

“देखिए मैडम मैं सच बोल रही हूँ, उस क़त्ल से मेरा कोई लेना देना नहीं है। हाँ, मैं मानती हूँ कि मेरी कुछ तस्वीरें वहाँ रह गयी थीं जो मैं नहीं चाहती थी कि किसी के सामने आएँ। बेशक कुणाल और मुझे सब ने एक साथ कई बार देखा है, पर फिर भी मैं ऐसा कुछ भी और नहीं दिखाना चाहती थी जिससे ये बेवजह का शक़ मुझ पर... हम दोनों पर किया जाए!” नताशा कुणाल की तरफ़ देखती हुई बोली।

“हमने तुम्हारी पूरी कुंडली निकाल रखी है नताशा। हमें सब मालूम है इसलिए हमसे कुछ भी छुपाने की कोशिश मत करो। मैं अपना होमवर्क अच्छे से करती हूँ।” मंजरी मुस्कुराते हुए बोली।

नताशा अपने नाख़ून चबाने लगी। कुणाल भी कुछ असहज महसूस कर रहा था। रौनक सिंह और केवल राम उन दोनों को ध्यान से देख रहे थे।

“मुझे पता है ये क़त्ल तुम दोनों में से किसी ने भी नहीं किया है।” मंजरी ने अचानक कुर्सी से खड़े होते हुए अपना फरमान सुनाया।

नताशा और कुणाल एक दूसरे की ओर देखने लगे। उनके हाव भाव से साफ़ दिख रहा था कि उन्होंने यह सुनकर चैन की साँस ली थी। मंजरी उन दोनों की कुर्सी के पीछे आ कर खड़ी हो गयी।

“पर ये मत भूलो की अब मैं सिर्फ कपूर विला में हुए क़त्ल की ही नहीं, बल्कि आज से डेढ़ साल पहले हुए ध्रुव कपूर के एक्सीडेंट की भी तफ्तीश कर रही हूँ!” मंजरी ने अचानक जैसे एक बम सा फोड़ा।

ध्रुव का नाम सुनते ही नताशा को जैसे कोई झटका सा लगा। उसने एक दम से पलट कर मंजरी की तरफ़ देखा।

“ध्रुव? उसका तो एक्सीडेंट...” वो बोलते बोलते रुक गयी। या यूँ कहा जाए रोक दी गयी।

“उसका एक्सीडेंट हुआ था ये सब जानते हैं, पर कैसे हुआ था ये कोई नहीं जानता। और अब मैंने उसी एक्सीडेंट की फाइल दोबारा खोल दी ही। ध्रुव की कार सरकारी गोडाउन में अभी भी पुलिस कस्टडी में ही है। मैंने उस पर भी डीएनए टेस्ट करवाया है, रिपोर्ट आती ही होगी।” मंजरी मुस्कुराते हुए बोली।

“पर ध्रुव की मौत से इस केस का क्या लेना देना मैडम?” कुणाल ने पलट कर मंजीर की ओर देखा और बोला।

“लेना देना है... बिल्कुल लेना देना है!” मंजरी चिल्लाते हुए बोली।

वो बहुत देर से अपने अंदर का गुबार संभाले हुए थी।

“तुम हमेशा से नताशा को पाना चाहते थे कुणाल। लेकिन जब इसने ध्रुव से शादी कर ली तो तुमने अपने इश्क़ को खो दिया। तुम अकेलेपन की आग में जलने लगे। फिर उसी आग में तुमने धृव को जलाने का भी इरादा कर लिया।” मंजरी की आवाज़ में अभी भी गुस्सा था।

“ये आप क्या बोल रही हैं? मैंने ध्रुव को नहीं मारा!” कुणाल चिल्ला उठा।

“चिल्लाओ मत!” मंजरी अपना आपा खो बैठी। नताशा का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। उसके पाँव काँपने लगे थे।

“ध्रुव की गाड़ी से लिए गए डीएनए की रिपोर्ट आती ही होगी। अभी दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा!” मंजरी खुद पर काबू पाती हुई बोली।

“ओह! मैं सब समझ गयी। मुझे पता है ये सब आपने किसके कहने पर किया है। ध्रुव के एक्सीडेंट को लेकर ज़रूर शिखा और शिप्रा ने आपके कान भरे होंगे। उन्हीं के कहने पर आपने उस केस को दोबारा ओपन किया है।” नताशा ने हिम्मत दिखाते हुए अपनी बात मंजरी के सामने रखी।

“नताशा! मुझे कब क्या करना है उसके लिए मुझे किसी की सलाह की ज़रूरत नहीं है। मैंने पहले भी कहा था और अब फिर दोहरा रही हूँ, पुलिस ने कच्ची गोलियाँ नहीं खेली।” मंजरी घायल शेरनी की तरह नताशा पर टूट ही पड़ती पर उससे पहले एक हवलदार ने आकर बात संभाल ली।

“मैडम ये एक और डीएनए रिपोर्ट!” हवलदार ने चुपचाप एक और लिफाफा मेज़ पर रखते हुए कहा।

मंजरी ने खुद को संभालते हुए लिफाफा उठाया और उससे रिपोर्ट निकाल कर पढ़ने लगी। पढ़ते पढ़ते वो बार-बार नताशा और कुणाल की ओर भी देखे जा रही थी।

“व्हाट इस दिस?” मंजरी झुँझलाती हुई बोली।

“क्या हुआ मैडम?” रौनक सिंह आगे बढ़ता हुआ बोला।

“ध्रुव की कार पर जो डीएनए मिला है वो उसी डीएनए से मैच करता है जो हमें कपूर विला में मिला।” मंजरी ने नताशा और कुणाल की तरफ देखते हुए जवाब दिया।

□□□

“ना नताशा, न कुणाल और तो और मनोहर लाल भी नहीं। तो फिर क़ातिल है कौन?” रौनक सिंह और केवल राम चाय की चुसकियाँ लेते हुए पुलिस थाने के बाहर खड़े आपस में बतिया रहे थे। मंजरी को हेडक्वार्टर्स में मीटिंग के लिए बुलाया गया था इसलिए वो वहाँ नहीं थी।

“लगता है आज मंजरी मैडम की क्लास लगने वाली है उधर!” केवल राम चुटकी लेता हुआ बोला। उसकी आँखों में शरारत सी तैर रही थी।

“अगर मैडम जी की क्लास लगी तो इसका मतलब हमारी भी लगेगी। समझा ना? इसलिए ज़्यादा खुश होने की ज़रूरत नहीं है!” रौनक सिंह ने उसकी पल भर की ख़ुशी को काफूर करते हुए जवाब दिया तो केवल राम मुँह बना कर रह गया।

“वैसे आपको क्या लगता है साहब जी? क़ातिल कौन हो सकता है?” केवल राम बात बदलते हुए बोला।

“पता नहीं केवल राम। यहाँ तो साला जिस पर भी शक जा रहा है वो ही बेक़सूर निकल जाता है। ये केस है की भूलभुलैया। साला, हर तरफ रास्ते बंद ही नज़र आ रहे हैं।” रौनक सिंह ने चाय का घूँट लेते हुए जवाब दिया।

दोपहर होने लगी थी। आसमान में छाए काले बादल किसी भी वक़्त बरसने को जैसे तैयार बैठे थे। वो दोनों कुछ देर सुस्ताने के लिए बाहर खड़े हुए थे पर दोनों के दिमाग में कपूर विला केस ही दौड़ रहा था। कितनी मुश्किल होती है न पुलिसवालों की ज़िंदगी भी। हर वक़्त सभी को शक की निगाह से देखते देखते एक दिन खुद के सपनों पर भी शक ही होने लगता है। केवल राम अपने गाँव से पढ़ लिख कर एक अफसर बनना चाहता था। फिर पुलिस की नौकरी लग गयी और अब उसे अपनी हसरतों पर ही शक सा होने लगता है।

“पता नहीं साहब ये सब कब तक चलेगा। कब तक हम लोग ऐसे ही गुनाहगारों के पीछे

भागते रहेंगे? कब तक हम हर किस्म के लोगों से अलग अलग तरह की जिरह करते रहेंगे? कब तक बस एक सच की तलाश में झूठ पर झूठ का बोझ ढ़ोते रहेंगे?" उस रोज़ पहली बार केवल राम की आवाज़ रुँधी हुई सी लग रही थी।

"क्या हुआ केवल राम यूँ अचानक तुम ये सब क्या बोलने लगे?" रौनक सिंह चाय का गिलास एक तरफ रखता हुआ बोला।

केवल राम कुछ देर चुप रहा। शायद अपनी हर बात को उसे तोल मोल के बोलने की इतनी आदत हो चुकी थी की सीधी बात करने में भी उसे डर लगने लगा था।

"नहीं साहब, यूँ ही बस कई दिनों से सोच रहा था कि ज़िंदगी कब तक बस ऐसी ही चलेगी?" उसने सर झुकाते हुए जवाब दिया।

"यहाँ सभी का ऐसा ही हाल है केवल राम। तुम्हें क्या लगता है मंजरी मैडम बहुत मज़े में हैं? ऐसा नहीं होता दोस्त। हमें अपने से हर ऊँची कुर्सी वाले को देख कर यही लगता है कि वो बहुत मज़े में है और हमारे लिए ही ज़िंदगी मुश्किल है। लेकिन ऐसा नहीं है केवल राम। कुर्सी जितनी ऊँची होती है ना, उसके नीचे आग भी उतनी ही ज़ोर की लगी होती है। मंजरी मैडम के सर पर भी अफसर लोग हैं जो दिन रात उनकी जान खाते रहते हैं। इन ऊँची कुर्सी वालों को बस परिणाम चाहिए और वो भी जल्द से जल्द। और ऐसा भी नहीं है कि ये लोग हमारी दिक्कतें नहीं जानते। अरे ये लोग भी तो इसी सिस्टम का ही एक हिस्सा हैं, और ये सभी लोग भी कभी हमारी ही तरह निचले पायदान पर खड़े थे। पर ऊपर पहुँच कर इन्हें भी अपने से और ऊपर वालों को जवाब देना होता है केवल राम।" रौनक सिंह ने एक साँस में जैसे अपनी ज़िंदगी का सारा सार उसके सामने रख दिया था।

अभी इन दोनों की ये बातें चल ही रही थीं कि तभी सामने से देवीदत्त नाम का वो नया हवलदार एक लड़के को कॉलर से पकड़ कर घसीटता हुआ तेज़ी से थाने की तरफ ले आया।

"साहब माफ़ कर दो अब नहीं होगा ऐसा!" वो लड़का गिड़गिड़ा रहा था। पर देवीदत्त उसे धक्का मारते हुए वहाँ से थाने के अंदर ले जाने की कोशिश में लगा हुआ था।

"अरे! ये तो वही लड़का है। साला फिर अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आया देखा ना!" रौनक सिंह दौड़ता हुआ देवीदत्त के करीब आया और लड़के को बालों से जा पकड़ा।

"साले! पिछली बार तुझे समझाया था ना की दोबारा मत करना। तुम साले पता नहीं किस मिट्टी के बने हुए हो, किसी के बोलने समझाने का तुम लोगों पर कोई असर ही नहीं होता। पिछली बार तो वो मंजरी मैडम के कहने पर तुझे छोड़ दिया था, इस बात देख मैं तेरा क्या हाल करता हूँ।" रौनक सिंह उसके गाल पर ज़ोरदार चपत लगाते हुए बोला।

कुछ ही देर में रौनक सिंह और केवल राम दोनों ही थाने के अंदर चले आये।

"हाँ भाई, कहाँ है वो चोर?" रौनक सिंह ने देवीदत्त को घूरते हुए पूछा।

"अंदर डाल दिया है साहब, आगे आप जो हुक्म दें!" देवीदत्त ने जवाब में कहा।

"हम्म! रुको ज़रा मैं भी उसकी थोड़ी खातिरदारी कर लूँ!"कहते हुए रौनक सिंह उस छोटे से सेल की तरफ बढ़ चला जहाँ वो लड़का बंद था।

वो लड़का रौनक सिंह को अंदर आता देख काँप गया।

"साहब मारना नहीं... मारना नहीं साहब! मैं माँ कसम खाता हूँ साहब सब दे दूँगा!"वो हाथ जोड़ता हुआ बोला।

“साले! वो तो हम तुझसे वैसे भी वसूल ही लेंगे पहले तू ये बता कि तुझे शर्म है या नहीं? पिछली बार भी तू कसम खा के गया था कि अब चोरी नहीं करेगा लेकिन इस बार फिर अपनी हरकत पर उतर आया। क्या किया है रे इसने इस बार?” रौनक सिंह ने उस लड़के को एक थप्पड़ मारा और फिर देवीदत्त को आवाज़ लगाते हुए पूछा।

“साहब जी किसी की पॉकेट मार के आया है। इसके पास से एक बटुआ, एक कीमती लाइटर और मोबाइल मिला है साहब!” देवीदत्त ने बताया।

“तूने इसे पकड़ा कहाँ?” रौनक सिंह ने वापस सवाल किया।

“साहब ये साला मुझे देखते ही भागने लग गया उधर बाजार में। मुझे शक हुआ तो मैं इसके पीछे दौड़ा और फिर इसको दबोच ही लिया।” देवीदत्त ने जवाब में कहा।

अपनी बात खत्म करते ही देवीदत्त एक छोटा सा थैला ले आया। उसी थैले में से निकाल कर उसने एक लाइटर, एक बटुआ और एक मोबाइल रौनक सिंह के हाथ में थमा दिया।

“ये चीज़ें मारी है इसने किसी की जेब से!” देवीदत्त बोला।

रौनक सिंह ने एक नज़र उन चीज़ों पर डाली।

“हम्म... लगता है किसी मोटी आसामी की जेब काटी है इस बार तूने!” वो उस लड़के को एक और थप्पड़ मारता हुआ बोला।

रौनक सिंह ने बाकी चीज़ें एक कोने में रख दी और उस मोबाइल को ध्यान से देखने लगा।

“साला सैमसंग का इतना महँगा वाला फ़ोन! यहाँ हम साले ईमानदारी की नौकरी करते हुए एक पंद्रह बीस हजार तक का फोन नहीं ले सके और ये लोग इतने महँगे फ़ोन ले कर घूमते हैं, और ये साले हरामज़ादे भी इतने महँगे फोन वालों की ही जेब काटते हैं!” कहते हुए उसने उस लड़के के कान के नीचे एक और थप्पड़ रसीद कर दिया।

लड़का चुपचाप एक कोने में बैठा सुबकने लगा। उसी दौरान रौनक सिंह उस फ़ोन को खोल कर देखने लगा। अचानक उसकी नज़र गैलेरी में वॉयस रिकॉर्डिंग के किसी फोल्डर पर पड़ी और जिज्ञासावश उसने वो फोल्डर खोल दिया। वहाँ किसी कॉल की रिकॉर्डिंग थी जिसे रौनक सिंह ने चला भी दिया।

“बिल्लू रामपुरिया एक बार पैसे ले ले तो फिर वापस नहीं करता कुलभूषण चावला साहब! मनमोहन कपूर को मारने के लिए जो रकम आपने दी थी वो तो अब मेरी है और फिर आपका काम तो हो ही गया न, इसलिए अब पैसों को ले कर दिमाग मत ख़राब करना मेरा!”

ये आवाज़ सुन कर रौनक सिंह बुरी तरह से चौंक गया। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो वहाँ मंजरी खड़ी थी और वो भी उस रिकॉर्डिंग को सुन रही थी। मंजरी ने उसे चुप रहने का इशारा किया और रिकॉर्डिंग आगे सुनाने को कहा।

“तुम्हें पैसे तुम्हारे काम के हिसाब से दिए जा चुके हैं बिल्लू! वो अलग बात है की मेरा काम...”

मोबाइल रिकॉर्डिंग में कुलभूषण चावला की आवाज़ साफ़ सुनी जा सकती थी। वो बोलते बोलते रुक गया था।

“आपका काम हो गया ना बस। आपको काम से मतलब था और मुझे पैसों से। और अब मुझे अलग से भी कुछ पैसों की ज़रूरत है जिस जरूरत को आप पूरी करेंगे!” बिल्लू धमकी भरी आवाज़ में बोला।

“मैं तुझे एक पाई भी नहीं देने वाला बिल्लू! भूल मत तुझे मैंने ही खड़ा किया है। एक बार मंत्री

पद मिल गया तो ऐसी जेल में पटकूँगा न कि तू बाहर का सूरज देखने के लिए तरस जायेगा!” चावला ने भी तैश में आ कर जवाब दिया।

“चावला साहब! मत भूलो कि मैं तुम्हारे हर काले काम से वाक़िफ़ हूँ। मुझे मेरे पैसे जल्द से जल्द मिल जाने चाहिए वरना मुझे अपना मुँह खोलना ही होगा!” बिल्लू ने जवाब दिया।

इसके बाद उसने फ़ोन काट दिया था। रिकॉर्डिंग ख़त्म हो चुकी थी पर मंजरी के हाथ इस बार एक और नया सुराग लग गया था। उसका चेहरा बता रहा था की वो बिल्लू रामपुरिया और कुलभूषण चावला को थाने में ला कर तलब करने का मन बना चुकी थी।

□□□

अध्याय 17

झक्क सफ़ेद कमीज़ और भूरे रंग की पैंट पहने बिल्लू रामपुरिया पान चबाता हुआ अपनी ही अकड़ में जीप से नीचे उतरा। उसने अपनी गर्दन पर लाल रंग का एक रुमाल बाँधा हुआ था। बिल्लू ने पान की पीक वहीं ज़मीन पर थूकी और हवलदार देवीदत्त को देख गुर्राया–

"इस थाने में आने वाला तुम्हारा हर अफसर बिल्लू को अच्छे से जानता है। लगता है ये तुम्हारी नई मैडम को मेरे बारे में किसी ने अभी तक कुछ बताया नहीं, तभी उसने मुझे यहाँ थाने में ऐसे बुला लिया। चलो कोई बात नहीं आज तुम्हारी मैडम से मुँह दिखाई भी हो जाएगी।" बिल्लू पान से रंगे अपने दाँत दिखाता हुआ गुर्राया।

मंजरी और उसकी टीम के बाकी लोग वहीं बैठे उसका इंतज़ार कर रहे थे। बिल्लू ने एक ही नज़र में मंजरी को पहचान लिया और एक बार फिर रौबदार आवाज़ में बोला:

"मंजरी... हम्म... नाम तो बहुत प्यारा है, चलो अब तुम कितनी प्यारी हो ये भी देख लेते हैं!" अपनी तेज़ आवाज़ में ये भद्दी सी बात बोलते हुए बिल्लू मंजरी के ठीक सामने आ कर खड़ा हो गया और उसे सर से लेकर पाँव तक घूरने लगा। रौनक सिंह और केवल राम उसे बड़े ध्यान से देख रहे थे और मर्द होने की वजह से वो उसकी निगाहों को भी पढ़ पा रहे थे। मंजरी ने तो सबसे पहले ही उसे देखते ही उसकी गंदी निगाहों को भाँप लिया था।

वो चुपचाप एक एक कदम आगे होती हुई उसके एकदम करीब आ कर खड़ी हो गयी और उसकी आँखों में आँखें डाल झाँकने लगी।

"उफ़! इतना करीब मत आओ मैडम, कहीं इस दिल से कोई गुस्ताख़ी हो गयी तो फिर इलज़ाम मत देना!" बिल्लू ने एक बार फिर पान और कत्थे से भरा अपना मुँह खोला और अपनी ही कही बात पर बेशर्मों की तरह हँसने लगा।

इससे पहले की वो इससे आगे कुछ और बोल पाता, उसके कान के नीचे एक झन्नाटेदार तमाचा पड़ा जिसकी आवाज़ सारे थाने में गूँज उठी।

"ताड़ लिया मुझे अच्छे से?" मंजरी अपना कान सहलाते बिल्लू के और करीब आती हुई बोली।

बिल्लू का चेहरा तमतमाया हुआ था। उसकी आँखों में ज़माने भर का गुस्सा उतर आया था।

"बिल्लू पर हाथ उठा कर तूने अच्छा नहीं किया मंजरी मिश्रा। तू यहाँ नयी नयी आयी है, यहाँ के क़ायदे कानून तुझे पता नहीं है!" बिल्लू की अकड़ अभी तक कायम थी।

जवाब में मंजरी ने एक बार फिर एक ज़ोरदार थप्पड़ उसके गाल पर रसीद कर दिया। बिल्लू के गाल पर तीन उँगलियाँ छप चुकी थीं। इस बार वो कुछ लड़खड़ा सा गया और दो कदम पीछे चल दिया।

"बिल्लू रामपुरिया! तेरा पाला आज तक गीदड़ों से पड़ा होगा। कभी किसी शेरनी से तू आज तक मिला नहीं है, मिला होता तो यूँ भौंकना कब का भूल चूका होता!" मंजरी ने इस बार उसे

गिरेबान से धर लिया।

“ले चलो इसे सेल के अंदर और आराम से खातिरदारी करो इसकी।” कहते हुए उसने बिल्लू को धक्का मारा और रौनक सिंह की तरफ फेंक दिया।

बिल्लू ना जाने किस मिट्टी का बना हुआ था। इतना सब हो जाने के बाद भी उसकी अकड़ अभी तक बरक़रार थी।

“अपनी गलियों में तो हर कोई शेर या शेरनी बन जाता है मंजरी मिश्रा। असली हिम्मत तो बाहर खुले जंगल में लड़ने में है!” बिल्लू की आँखों में अब ख़ून उतर आया था।

पर इस बार मंजरी के बजाय रौनक सिंह ने उसकी इस बात का जवाब दिया। रौनक सिंह ने अपनी कुहनी उसके पेट में दे मारी और उसे धकेलता हुआ उस छोटे से सेल के अंदर डाल दिया।

“बेटा जिस जंगल की तू बात कर रहा है ना, उस जंगल में अब मंजरी मैडम का राज चलता है।” रौनक सिंह अपने गुस्से पर किसी तरह से काबू पाता हुआ बोला। वो अपने सामने किसी महिला की बेइज़्ज़ती बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

“मंजरी मैडम ये तुम ठीक नहीं कर रही हो!” बिल्लू के मुँह से इस बार ‘मैडम’ लफ़्ज़ भी निकल गया। उसका चेहरा अभी भी गुस्से से तमतमाया हुआ था। सेल के अंदर वो दीवार पर पीठ टिकाये उन सभी को घूर रहा था।

“अब तू बताएगा कि क्या ठीक है और क्या ग़लत? सबसे पहले तो ये बता की तूने मनमोहन कपूर का ख़ून क्यों और किसके कहने पर किया?” मंजरी अपनी मुट्ठी बंद करती हुई बोली। वो बिल्लू पर टूट पड़ने के लिए एकदम तैयार थी।

“ख़ून? मनमोहन कपूर का?” बिल्लू उसकी तरफ देख चौंकते हुए बोला।

“क्यों मनमोहन कपूर का नाम पहली बार सुन रहा है क्या?” मंजरी ने इस बार उसका गिरेबान पकड़ लिया। उसने रौनक सिंह को इशारा किया और वो मोबाइल कॉल रिकॉर्डिंग चलाने के लिए कहा।

रौनक सिंह ने तुरंत वो रिकॉर्डिंग मोबाइल पर चला कर बिल्लू को सुना दी। अपनी आवाज़ सुनते ही उसका चेहरा सफ़ेद हो गया।

“बोल अब क्या कहना है तेरा? अब भी यही कहेगा की कपूर विला में जो मौत का तांडव हुआ है, उसमें तेरा कोई हाथ नहीं है?” मंजरी उसके मुँह पर घूँसा जड़ती हुई बोली। मंजरी की आँखें गुस्से से उबल कर बाहर हो चली थीं।

बिल्लू के होंठ के किनारे से ख़ून की एक लकीर फूट पड़ी। उसने अपनी गर्दन पर लिपटे रुमाल से उसे पोंछा और मंजरी की तरफ देखता हुआ बोला:

“मैंने मनमोहन कपूर को नहीं मारा!”

मंजरी के साथ साथ रौनक सिंह और केवल राम भी उसकी तरफ गौर से देखने लगे। वो मन ही मन उसकी हिम्मत की मानो दाद दे रहे थे कि पुलिस के पास इतना बड़ा सबूत होने के बावजूद वो ये सब बोल रहा था।

“बिल्लू! मेरी बात ध्यान से सुनो। मैं तुम्हारे बारे में बहुत अच्छे से जानती हूँ। तुम्हारी अगली पिछली सारी कुंडली निकलवाने में मुझे ज़्यादा देर नहीं लगी। मैं जानती हूँ कि तुम पैसों के लिए कुछ भी कर सकते हो। तुम एक पेशेवर अपराधी हो जिसके नाम अनगिनत केस पहले से ही यहाँ दर्ज़ हैं। पर क्या करें हमारी ही कुछ कमियों की वजह से तुम आज तक ऐसे खुलेआम घूमते रहे

हो। पर अब मैं आ गयी हूँ और मेरे रहते तुम अपनी मनमानी नहीं चला सकते। मुझे मजबूर मत करो कि मैं तुम पर थर्ड डिग्री का इस्तेमाल करूँ, क्यूँकि अगर अपनी करनी पर उतर आयी तो फिर तुम्हारा वो हाल करुँगी कि तुम्हें दोबारा अपने पैरों पर भी खड़े होने के लिए कई बार सोचन पड़ेगा!" मंजरी ने उसी के रुमाल से उसके होंठ के किनारे बहते ख़ून को पोंछा और इत्मीनान से अपनी बात सुनाई।

"मैं सच बोल रहा हूँ मैंने कपूर विला में कुछ नहीं किया। हाँ, मुझे मनमोहन कपूर को मारने के लिए कुलभूषण चावला ने सुपारी दी थी पर मेरे काम पूरा करने से पहले ही कोई उसका पत्ता साफ कर गया।" इस बार बिल्लू रामपुरिया की आवाज़ में संजीदगी थी।

□□□

"मैं इस शहर का एक इज़्ज़तदार आदमी हूँ एसीपी और इस तरफ से मुझ पर किसी के खून का बेबुनियाद इलज़ाम के मामले में मैं तुम पर केस भी कर सकता हूँ!" कुलभूषण चावला अपनी सोने की अँगूठी को उँगली में घुमाते हुए बोला। मंजरी के कहने पर वो पुलिस थाने आ तो गया था पर उसकी हर अदा, उसके बोलने चलने के अंदाज़ से बेअदबी की बू आ रही थी।

"फिलहाल तो मैं आप पर एक पुलिस अफसर को धमकाने के आरोप में केस कर सकती हूँ चावला साहब!" मंजरी ने कुलभूषण की बात का उसी की भाषा में जवाब देते हुआ कहा।

मंजरी के ये तेवर देख कर रौनक सिंह और केवल राम ने चुपके से एक दूसरे से नज़रें मिलायी और मन ही मन उसकी हिम्मत की दाद देने लगे।

"तुम मुझ पर बेकार का इलज़ाम लगा रही हो एसीपी। मेरा मनमोहन कपूर के क़त्ल से कोई लेना देना नहीं है!" कुलभूषण चावला फड़फड़ाने लगा।

"तुम्हारा ख़ास आदमी बिल्लू रामपुरिया इस वक़्त हमारी हिरासत में है। उसी को दी थी न तुमने मनमोहन कपूर और उसके परिवार को ख़त्म करने की सुपारी?" मंजरी चिल्लाती हुई बोली।

कुलभूषण चावला ये सुन के सकपका सा गया। सोने की अँगूठी हिलाते हिलाते उसका हाथ वहीं रुक गया।

"तु… तुम कैसे ये सब?" उसके मुँह से इतना ही निकला।

मंजरी ने एक बार फिर वही कॉल रिकॉर्डिंग चला कर कुलभूषण चावला को भी सुना दी। रिकॉर्डिंग ख़त्म होते ही चावला की शक्ल देखने लायक थी। वो मंजरी से नज़रें भी नहीं मिला पा रहा था।

"अब क्या कहना है चावला साहब? क्या अब भी यही कहेंगे कि कपूर विला मर्डर केस में आपका कोई हाथ नहीं है?" मंजरी के चेहरे पर मुस्कान थी। शिकार सामने ही तो बैठा था। बस उसे दबोचने की बारी थी।

कुलभूषण चावला ने मंजरी की बात का जवाब देने के बजाये अपनी आँखें मूँद लीं। जैसे वो किसी गहन सोच में डूब गया हो।

"पचास लाख… सिर्फ पचास लाख की ही तो बात थी। पर उस कपूर ने मुझे बेइज़्ज़त करके अपनी पार्टनरशिप से हटा दिया था। मुझे कुछ साल के लिए जेल भी हुई और बस वहीं से मेरे मन में उसके लिए नफ़रत के बीज पड़ गए। मैं रात दिन इसी सोच में लगा रहने लगा की किस तरह

से मनमोहन कपूर से अपनी बेइज़्ज़ती का बदला लूँ।"

कुलभूषण चावला ने आँखें खोलते हुए अपनी बात शुरू करी। मंजरी और उसकी टीम बड़े ध्यान से उसकी बात सुनने लग गए।

"मैं उसे तहस नहस कर देना चाहता था। मैंने अगले साल के चुनाव में उतरने का मन बना लिया था और बस एक सही मौके के इंतज़ार में था जब मैं उस पर अपना आखिरी वार कर सकूँ।" कुलभूषण चावला मंजरी की और देखता हुआ बोला। उसकी आँखों और उसके बोलने के अंदाज़ से, मनमोहन कपूर के लिए उसके अंदर पल रही नफ़रत साफ देखी जा सकती थी।

"और इसलिए तुमने इतनी बेरहमी से उनके खाने में ब्लेड के टुकड़े मिला कर उन तीनों का खून कर दिया!" मंजरी बात पूरी करते हुए बोली।

"व्हाट? ब्लेड के टुकड़े?" कुलभूषण चावला हैरान होता हुआ बोला।

"हाँ, ब्लेड के टुकड़े। तुम क्या समझे थे तुम्हारा प्लान कामयाब हो जायेगा और तुम पकड़े भी नहीं जाओगे?" मंजरी ने उसे घूरते हुए कहा।

"तुम ये क्या बोले जा रही हो एसीपी? देखो मैं तुम्हें एक चीज़ साफ़ साफ़ बता दे रहा हूँ। मैंने मनमोहन कपूर को मारने के लिए सुपारी ज़रूर दी थी, सिर्फ मनमोहन को मारने की। उसकी बीवी और बेटी की मौत से मेरा कोई लेना देना नहीं है। पर बिल्लू वो एक काम भी कर नहीं पाया। उस रात मैं और बिल्लू साथ ही थे। ये मेरी ही गाड़ी में शहर में वापस आया था।" कुलभूषण चावला ने उस रात की कहानी बयाँ करते हुए कहा।

"आप और वो साथ में क्या कर रहे थे?" मंजरी ने अलग प्रश्न किया।

"यहाँ का मौसम थोड़ा सुहावना हो रखा था तो घूमने निकले थे।" कुलभूषण मुस्कराता हुआ बोला।

मंजरी समझ गई थी कि वो इससे ज्यादा उसे बताने नहीं वाला था। लेकिन उसकी बात सुन कर मंजरी एक बार फिर सोच में पड़ गयी।

उसकी बात सुन कर मंजरी एक बार फिर सोच में पड़ गयी। कुलभूषण चावला ने जिस तरह से अपनी बात रखी थी, उससे साफ़ ज़ाहिर था कि उसकी बात में सच्चाई थी। पर मंजरी अपने हर पत्ते को सोच समझ कर सामने रख रही थी।

"क्या सबूत है तुम्हारे पास कि उस रात तुम दोनों एक साथ थे और कपूर विला गए ही नहीं थे?" मंजरी कुलभूषण के करीब आती हुई बोली।

उसकी बात सुन कर कुलभूषण कुछ देर के लिए चुप हो गया। वो अपनी उँगलियों को इस बार अपने माथे पर फेरने लगा। मंजरी उसकी हर एक बात पर गौर कर रही थी। कुछ देर की ख़ामोशी के बाद कुलभूषण के चेहरे पर अचानक एक चमक सी लौट आयी।

"सबूत है। उस रात शहर से बाहर टोल नाके के पास वाले पेट्रोल पंप से हमने गाड़ी में पेट्रोल भरवाया था। उसकी पर्ची मेरे ड्राइवर ने संभाली होगी।" कुलभूषण ने एक गहरी साँस लेते हुए कहा।

"अच्छा? ठीक है, चलो दिखाओ मुझे कहाँ है वो पर्ची!" कहते हुए मंजरी उठी और कुलभूषण चावला को भी साथ चलने का इशारा किया।

"तुम करना क्या चाहती हो?"कुलभूषण परेशान होता हुआ बोला।

"शहर से बाहर वाले चेक नाके और उसी के पास वाले पेट्रोल पंप पर सीसीटीवी कैमरा लगे हुए

हैं। तुम्हारा सच या झूठ कर दूध का दूध और पानी का पानी वहीं जा कर मालूम पड़ जायेगा!" मंजरी ने जवाब दिया और रौनक सिंह और केवल राम को कुलभूषण चावला को साथ ले कर आने का इशारा करती हुई थाने से बाहर निकल आयी।

□□□

अध्याय 18

शहर से बाहर जाती सड़क पर कोई खास भीड़ नहीं थी। टोल नाके पर हर रोज़ की तरह चार-पाँच गाड़ियाँ खड़ी हुई थीं जो अपनी बारी का इंतज़ार कर रही थीं। मंजरी टोल नाके पर बने उस छोटे से केबिन के अंदर एक लड़के के साथ कंप्यूटर स्क्रीन पर सर घुसाए बैठी हुई थी।

"सोलह दिसंबर की रात साढ़े नौ बजे से रात के दो बजे के आस-पास तक का फुटेज दिखाओ!" मंजरी का सब्र जवाब देने लगा था। पिछले कई दिनों से वो चैन की नींद नहीं ले पाई थी। जब से कपूर विला मर्डर केस की शुरुआत हुई थी तभी से मंजरी और उसकी टीम के लिये मानो जैसे एक बुरा वक़्त शुरू हो गया था। उनकी दिन रात की मेहनत के बावजूद लोग उनकी कार्यप्रणाली पर लगातार सवाल उठा रहे थे और मंजरी अब उन सभी सवालों के जवाब देते देते थक चुकी थी।

"ब्लैक हौंडा सिटी है, ध्यान से देखो!"

"कोई भी गाड़ी छूटनी नहीं चाहिए!", कुछ देर बाद उसने हिदायत सी दी।

"एक तो अँधेरा इतना है कि सही से कुछ नज़र भी तो नहीं आ रहा ऊपर से तुम लोगों के ये सीसीटीवी कैमरा भी ना!"

मंजरी बात बात पर झुंझलाने लगी थी। वो अच्छे से जानती थी कि अपनी तरफ से सब इस केस पर बहुत मेहनत कर रहे हैं पर उनकी उस मेहनत का फल उन्हें अभी तक नहीं मिला था और यही बात उसे नागवार गुज़र रही थी।

"ये देखो… रुको इधर! हाँ, ये ही... पीछे लो रिकॉर्डिंग…. और पीछे!" मंजरी यकायक स्क्रीन पर देखती हुई बोली।

मंजरी ने देखा स्क्रीन पर अब साफ़ दिखाई दे रहा था कि टोल नाके के पास पुलिस का भारी बंदोबस्त था उस रात। तभी एक गाड़ी वहाँ आ कर रुकी और एक पुलिस वाला उसकी तरफ लपका। मंजरी स्क्रीन के कुछ और करीब आ गयी। उसने देखा स्क्रीन पर अब काली हौंडा सिटी नज़र आ रही थी। मंजरी अपनी आँखें अब पूरी तरह से स्क्रीन पर जमा चुकी थी। तभी उसे वहाँ गाड़ी से सर बाहर निकालते हुए कुलभूषण चावला नज़र आया। साथ में ड्राइविंग सीट के साथ वाली सीट पर बिल्लू रामपुरिया बैठा नज़र आ रहा था। मंजरी को एक और असफलता हाथ लगती नज़र आ रही थी।

वो केबिन से बाहर निकली और सड़क की दूसरी ओर खड़ी पुलिस जीप की तरफ चलने लगी।

तेज़ी से चलती हुई वो जीप तक पहुँची। पीछे तीन हवलदारों के साथ कुलभूषण चावला और बिल्लू रामपुरिया दोनों ही बैठे हुए थे। आगे की सीट पर केवल राम ड्राइविंग सीट पर था।

"देख लिया आपने जो देखना चाह रही थीं? मैंने कहा था न आपको कि मेरा इस केस से कोई लेना देना नहीं है!" कुलभूषण चावला के होंठों पर मुस्कराहट वापस लौट आयी थी।

"अभी एक और जगह जाना बाकि है!" मंजरी अपना अगला पासा फेंकती हुई बोली। वो अपने

हर पत्ते धीर धीरे खोलती थी।

“अब क्या हुआ? आपने देख तो लिया उस रात टोल नाके पर हम दोनों ही थे गाड़ी में!” बिल्लू रामपुरिया की जुबान काफी देर के बाद खुली थी।

मंजरी ने उसकी बात का जवाब देना सही नहीं समझा और जीप में आगे आकर बैठ गयी। केवल राम ने चाबी इग्निशन में लगाई और जीप को स्टार्ट किया। कुछ ही देर में जीप हवा से बातें कर रही थी।

“टोल नाके पर लगे सीसीटीवी के हिसाब से सोलह दिसंबर की रात दस बज कर तेरह मिनट पर आप बिल्लू के साथ वहाँ गाड़ी में थे। कपूर विला में जो क़त्ल हुए वो सभी तकरीबन रात साढ़े नौ से रात डेढ़ बजे के बीच में हुए थे। यहाँ से कपूर विला की दूरी करीब पौने दो घंटे की है। तो उस हिसाब से आप दोनों में से कोई रात साढ़े नौ बजे तो वहाँ नहीं हो सकता!” मंजरी खिड़की से बाहर देखती हुई बोली। उसे बाहर से आती ठंडी हवा के झोंके अच्छे लग रहे थे। वो आँखें बंद किये उन झोंके को अपने चेहरे पर महसूस कर रही थी। पर उसके दिमाग में काफी कुछ चल रहा था।

उसकी बात सुन कर पीछे बैठे कुलभूषण चावला और बिल्लू रामपुरिया के चेहरे पर मुस्कराहट अब बढ़ने लगी थी।

“तो फिर हमें कहाँ ले जा रही हो? अब तो तुमने देख लिया की हम बेगुनाह हैं!” कुलभूषण चावला ने पूछा।

“आपके ड्राइवर से मिली पेट्रोल पंप की पर्ची के हिसाब से आप आगे आने वाले पेट्रोल पंप पर भी रुके थे। बस थोड़ी तस्सली और कर लूँ!” मंजरी ने बिना पीछे देखा जवाब दिया।

“एक दम पक्की खिलाड़ी हो एसीपी। बहुत आगे जाओगी!” कुलभूषण चावला की आवाज़ में खनक वापस लौट चुकी थी।

पुलिस जीप कुछ ही देर में उस पेट्रोल पंप पर थी। वहाँ खड़े अटेंडेंट ने जैसी ही पुलिस की गाड़ी देखी तो वो काम छोड़ उसी की तरफ दौड़ा चला आया।

“नमस्ते मैडम!” उसने हाथ जोड़ते हुए मंजरी की तरफ इशारा किया। अगले ही पल उसकी नज़र गाड़ी में बैठे कुलभूषण चावला पर पड़ी तो उसका माथा ठनका।

“नमस्ते साहब जी!” वो दूर से हाथ जोड़ता हुआ बोला।

“बड़ी जानपहचान है तुम्हारी सब से!” मंजरी ने अटेंडेंट की तरफ देखते हुए कहा।

अटेंडेंट जो की एक बीस साल का लड़का था, इस बात पर सकपका सा गया।

“ज...जी वो... सा....साहब हमेशा यहीं से अक्सर हो कर जाते हैं!” उसने किसी तरह से अपनी बात पूरी की।

मंजरी ने एक नज़र चारों तरफ दौड़ाई। सड़क के किनारे बने उस पेट्रोल पंप के आस-पास खूब हरियाली थी। सामने एक छोटा सा ढ़ाबा भी था जहाँ आने-जाने वाली कुछ गाड़ियाँ रुकी हुई थीं।

“सोलह दिसंबर की रात को भी तुम्हारे ये साहब यहाँ आये थे क्या?” मंजरी ने ढ़ाबे की तरफ देखते हुए उस लड़के से सवाल पूछा।

“सोलह तारीख़!”, कहकर कुछ देर तक वो सोचता रहा और फिर बोला, “मैडम जी चेक करना होगा, ऐसे एकदम से पक्का तो नहीं कह सकता!” लड़का अपने दिमाग पर ज़ोर डालता हुआ बोला।

“हाँ तो करो चेक। कोई रजिस्टर, कोई ऐसी चीज़ जिससे ये पक्का हो जाए की चावला साहब

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

यदि आप दुर्लभ , प्रेरणादायक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों

और अनुवादित साहित्य की खोज में हैं,

तो हमारे विशेष 📲 टेलीग्राम चैनल से जुड़ें

और अनमोल साहित्य का आनंद लें।

📖 हमारे चैनल में आपको मिलेगा:

📚 अद्वितीय और दुर्लभ उपन्यास (Novels)

💡 प्रेरणादायक पुस्तकें (Motivational Books)

🕉️ धार्मिक ग्रंथ और किताबें

🌎 विभिन्न भाषाओं में अनुवादित साहित्य

📜 बेहतरीन पत्रिकाएं (Magazines)

🎁 और अन्य दुर्लभ साहित्यिक खज़ाने

🔔 कृपया "Join Now" बटन या लिंक पर Click करें!

HINDI BOOKS CHANNEL

Join Now▶️ (धार्मिक, आजादी, इतिहास...से सबंधित)

https://t.me/Hindi_Books_Library

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

(नई, पुरानी किताबों के लिए)

Join Now 📒

https://t.me/Book_Hindi

ENGLISH BOOKS CHANNEL

Join Now 📗

https://t.me/Google_Ebooks

Join Now 📙

https://t.me/English_Library_Books

(ALL CHANNEL LINKS)

Join Now 📘

https://t.me/Hindilibrary

उस रात यहाँ थे!" मंजरी ने उस लड़के के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

"यहाँ सीसीटीवी भी लगा हुआ है, आप चाहो तो उसमें भी देख सकती हो!" लड़के ने कहा तो मंजरी बिना वक़्त गँवाए उसके साथ सामने बने उस छोटे से कमरे में चली आयी।

जीप में बैठे कुलभूषण चावला और बिल्लू रामपुरिया बड़े ध्यान से ये सब देखे जा रहे थे। उनकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी।

"तुम्हारी एसीपी मैडम को बाल की खाल निकालने की बहुत आदत है!" कुलभूषण चावला ने ड्राइविंग सीट पर बैठे केवल राम की ओर देखते हुए बात शुरू की।

"हाँ सर, पर शुक्र मानिये आपके बाल और खाल दोनों ही अब तक सही सलामत हैं!" केवल राम ने तंज कसा और मुस्कुराते हुए पीछे मुड़ कर देखने लगा।

"क्या बोला तू? तेरी इतनी हिम्मत की तू चावला से उलटी बात करे?" चावला अपना आप खो बैठा।

"मैडम ने देख लिया ना आपको ऊँची आवाज़ में बोलते हुए तो फिर आप जानते नहीं कि क्या होगा। इसलिए चुपचाप यहाँ बैठे रहो और उनके वापस आने का इंतज़ार करो। साथ ही भगवान से प्रार्थना करो की तुम्हारे खिलाफ उन्हें कोई सबूत न मिले।" केवल राम ने उसे वापस जवाब दिया और इत्मीनान से अपनी पीठ सीधी करने लगा।

इससे पहले की चावला पलट कर उसकी बात का कोई जवाब देता, मंजरी वापस लौट आयी थी।

"लगता है किस्मत बहुत मेहरबान है आप दोनों पर। उसको भी कुछ खिला पीला दिया होगा। क्यों चावला साहब?" मंजरी जीप में बैठती हुई बोली। उसकी आवाज़ से ज़ाहिर था कि इतना सब करने के बाद भी उसे इस केस में कुछ भी हाथ नहीं लगा था।

"चावला जो भी काम करता है खुलेआम करता है एसीपी। मुझे पीछे से चाकू मारने की आदत नहीं है!" चावला काफी देर के बाद अब अच्छा महसूस करने लगा था। एक बार फिर उसकी उँगलियाँ सोने की बनी अँगूठी को घुमाने लगी।

"हाँ, तभी तो चुपके से बिल्लू को सुपारी दी थी तुमने!" मंजरी ने तंज मारा।

चावला चुप रहा। वो उस वक़्त बनी बनाई बात को को और बिगाड़ना नहीं चाहता था।

"फिलहाल तो सारे सुबूत तुम्हारा साथ दे रहे हैं इसलिए मैं तुम्हें छोड़ रही हूँ। तुम दोनों की डीएनए रिपोर्ट भी उस चौथे शख़्स के डीएनए से मैच नहीं करती। पर शहर से बाहर जाने की गलती मत करना।" मंजरी ने एक आखिरी हिदायत दी और केवल राम को जीप दौड़ाने का इशारा किया।

□□□

"ये केस कभी ख़त्म होगा भी या नहीं?" केवल राम ने मौका देख रौनक सिंह के कान में जा कर अपने दिल की बात बयाँ कर डाली।

कुलभूषण चावला और बिल्लू रामपुरिया की बेगुनाही के सबूत मिलने के बाद से मंजरी और उसकी टीम के हौसले और भी पस्त हो चुके थे। मंजरी केस के बारे में रिपोर्ट देने कमिश्नर से मिलने गयी थी। मीडिया और लोगों के निशाने पर चल रही पुलिस पर अब दबाव बढ़ता जा रहा था। सत्ता में विपक्ष भी चुटकी लेते हुए इसे सत्ताधारी पार्टी की नाकामयाबी बता रहा था इसलिए

सत्ता पक्ष के मंत्री भी पुलिस कमिश्नर के सर पर तलवार की तरह लटक रहे थे। अब ज़ाहिर सी बात है की अगर पुलिस कमिश्नर की कुर्सी के नीचे आग लगेगी, तो उसकी गर्मी दूसरी कुर्सियों भी पहुँचेगी ही। इसलिए सारा पुलिस विभाग कहीं पर भी चैन से एक जगह नहीं बैठ पा रहा था। ऐसे में रौनक सिंह और केवल राम को कुछ देर के लिए सुस्ताने और बतियाने का मौका मिला तो दोनों थाने से बाहर बने गेट के पास जा बैठे और चाय की चुस्कियों में केस का कड़वापन मिटाने लगे।

"हमारे सारे दाँव पेंच गलत साबित हो रहे हैं। क्या करें, कुछ समझ नहीं आ रहा है। केस इतनी बुरी तरह से उलझा हुआ है कि कभी एक छोर पर गाँठ पड़ जाती है तो कभी दूसरे छोर पर। अब देखो ना किसने सोचा था चावला और बिल्लू की रिकॉर्डिंग मिलने के बाद भी हमारे हाथ कुछ नहीं लगेगा। साला! सुपारी ले कर भी कपूर को नहीं मार सका तो अब इसमें हमारी क्या गलती? पता ही नहीं चल रहा की क़ातिल है कौन?" रौनक सिंह सर खुजाते हुए और साथ-साथ चाय की चुस्की लेते हुए बोला।

तभी उन्हें पुलिस जीप की जानी पहचानी आवाज़ सुनाई पड़ी।

"ओह, लगता है मैडम आ गयी हैं। चल जल्दी से चाय ख़त्म कर वरना आज अपनी क्लास लग जाएगी!" रौनक सिंह ने गर्म चाय को ठंडे पानी के घूँट की तरह गले के अंदर डाला और वापस थाने के भीतर दौड़ता हुआ चला आया।

मंजरी अपनी सीट पर आ कर बैठी और उसने अपने दोनों सहकर्मियों की ओर नज़र दौड़ाई।

"कैसी थी चाय? क्या बात आज अकेले अकेले ही पी गए?" वो रौनक सिंह को घूरती हुई बोली।

दोनों के मुँह ये सुनते ही खुले के खुले रह गए।

"क्या हुआ? सोच रहे हो कि मैडम को कैसे पता चला?" मंजरी उम्मीद से हट कर अच्छे मूड में थी। रौनक सिंह और केवल राम सोच रहे थे कि कमिश्नर के वहाँ से वापस आ कर मंजरी अपना सारा गुस्सा उन पर निकालेगी, पर हुआ उस के एकदम उलट।

"मैडम! मैं ...मैं... वो.... अभी आपके लिए चाय..." हकलाता हुआ केवल राम बाहर की तरफ दौड़ा।

रौनक सिंह उठ कर मंजरी के पास चला आया।

"बैठो!" मंजरी ने कुर्सी खिसकाते हुए उसे बैठने का इशारा किया।

"घबराओ नहीं, कमिश्नर साहब भी जानते हैं कि हम लोग दिन रात एक करके इस केस पर लगे हुए हैं। वो अलग बता है कि सीनियर होने के नाते हमें उनकी सुननी तो पड़ेगी ही।" मंजरी ने रौनक सिंह के ज़हन में उठते सवालों को जैसे पढ़ लिया था और उसी के मुताबिक बात शुरू करी।

"मैडम कुछ समझ नहीं आ रहा करें तो क्या करें? हर एक रस्ते पर आगे चल के एक काली अँधेरी सुरंग खड़ी हो जाती है। जब लगता है कि कुछ आगे बढ़े हैं, वहीं पे चार कदम फिर से पीछे खींच लेने पड़ते हैं।" रौनक सिंह की आवाज़ थर्राने लगी थी। पहली बार वो अपने काम को लेकर ज़ज़्बाती हो रहा था। इस बार वो ये केस अपने लिए नहीं सिर्फ और सिर्फ मंजरी के लिए सही अंजाम तक पहुँचाना चाहता था।

"होगा रौनक सिंह जी होगा! हर अँधेरी सुरंग के आगे रौशनी हमारे इंतज़ार में खड़ी होती है,

बस हमें थोड़ी सी हिम्मत करते हुए उस सुरंग को पार करना होता है!" मंजरी ने मुस्कुराते हुए कहा।

"चावला और बिल्लू भी बच के निकल गए!" रौनक सिंह हताश सा उसे देखता हुआ बोला।

"रौनक सिंह जी मैंने बहुत साल पहले एक बात सीखी थी। जब हमें किसी सवाल के जवाब बाहर न मिल रहे हों, तो उन्हीं सवालों के जवाब ढूँढने के लिए हमें अपने अंदर चले आना चाहिए!" मंजरी ने केवल राम के हाथ से चाय का कप लेते हुए जवाब में कहा।

"मैं समझा नहीं मैडम जी!" रौनक सिंह बोला।

"हम अब तक मनमोहन कपूर के क़ातिल को यहाँ वहाँ ढूँढ रहे थे। अक्सर कहा जाता है कि हम जहाँ बिछुड़े होते हैं ना, वहीं पर वापस आकर खोने वाले को ढूँढना चाहिए। मुझे लगता है हमें एक बार मनमोहन कपूर के परिवार में ही छानबीन करनी चाहिए। जिस तरह से ये क़त्ल हुये हैं न उससे इसमें किसी अंदर के ही इंसान का हाथ होने के आसार अब ज़्यादा नज़र आ रहे हैं!" मंजरी चाय की चुस्की लेती हुई बोली।

"तो अब आगे क्या करना है मैडम जी?" रौनक सिंह मंजरी की ओर आशावादी नज़रों से देखता हुआ बोला। मंजरी की बातों ने उसके भीतर एक बार फिर से विश्वास की शक्ति फूँक सी दी थी।

"मैं एक बार फिर मनमोहन कपूर की बेटी से मिलना चाहती हूँ!" मंजरी बोली।

"शिखा से?" रौनक सिंह ने छूटते ही कहा।

"दोनों से ही और साथ ही शिखा के पति रणधीर से भी कुछ बातें करनी है। याद है ना शिखा ने बताया था मनमोहन कपूर रणधीर के किसी स्टार्टअप के लिए उसे मदद कर रहे थे!" मंजरी ने कहा और बाकि की चाय इत्मीनान से ख़त्म करने लगी।

□□□

अध्याय 19

"आपका तो बहुत बड़ा नुकसान हुआ होगा न मिस्टर रणधीर?" मंजरी रणधीर चोपड़ा के घर पर दोपहर होते ही पहुँच गयी थी। उसने सुबह सुबह रणधीर को उसके वहाँ आने की जानकारी दे दी थी।

"नुकसान?" रणधीर अपनी चाय के कप में चीनी घोलता हुआ रुक गया।

"हाँ, नुकसान तो हुआ ही होगा न आपके ससुर जी का क़त्ल होने की वजह से? वो आपके किसी स्टार्टअप को फंड कर रहे थे ना?" मंजरी चाय के कप की तरफ देखती हुई बोली।

"जी... जी हाँ.... ज़ाहिर सी बात है पर इस वक़्त नफे नुक्सान की किसे पड़ी है एसीपी मैडम!" रणधीर कुछ पल के लिए जवाब देते हुए झिझका था पर फिर उसने बात को संभाल ही लिया।

"वैसे किस चीज़ का स्टार्टअप प्लान कर रहे हैं आप?" मंजरी ने प्लेट से एक बिस्कुट उठाते हुए पूछा।

रणधीर ने चाय की चुस्की ली और मंजरी की तरफ देखता हुआ बोला:

"बॉटलिंग यूनिट है। सॉफ्ट ड्रिंक्स की बोतलें बनाने का! कपूर साहब का ही आईडिया था कि कुछ ऐसा शुरू किया जाए। साइट देखने भी वो मेरे साथ आये थे, पर होनी को शायद कुछ और ही मंज़ूर था।" रणधीर ने गहरी साँस लेते हुए बात ख़त्म की।

"आपको क्या लगता है रणधीर जी, कपूर साहब का क़त्ल कौन कर सकता है?" मंजरी के हर सवाल में उसकी एक सोच छुपी हुई थी। वो बहुत बारीकी से अपने सवाल पूछा करती थी। जवाब से ज़्यादा उसका ध्यान जवाब देने वाले की शारीरिक भाषा, उसके हाव भाव उसकी अंतर्दशा जैसी कई चीज़ों को पढ़ने की कोशिश में रहता था।

"कपूर साहब एक नामी गिरामी आदमी थे। ज़ाहिर सी बात है उनका मिलना जुलना कई तरह के लोगों से लगा ही रहता होगा, ऐसे में ये कहना बहुत मुश्किल है कि उनका क़ातिल कौन हो सकता है!" रणधीर ने नपातुला सा जवाब दिया।

"हाँ, पर आप उनके करीबी थे। आप उन के दामाद हैं और उनके परिवार का ही हिस्सा हैं। कुछ तो बता ही सकते हैं आप भी उनकी ज़िंदगी के बारे में!" मंजरी की कोशिश बरकरार थी।

रणधीर कुछ देर चुप रहा। फिर कुछ सोचता हुआ बोला:

"मेरे लिए वो क्या थे अब मैं आपको क्या बताऊँ मंजरी जी। किसी डूबते हुए के लिए तिनके का सहारा थे वो, मेरे सर पर जब से उनका हाथ पड़ा था मुझे जैसे सब कुछ मिल गया था। आप शायद नहीं जानती होंगी मैं अपने माँ बाप को बचपन ही में खो चुका हूँ। मेरी परवरिश मेरे मामा ने करी थी। मेरे मामा मेरे लिए माँ और बाप दोनों ही थे। किस्मत ने कुछ ऐसा खेल रचा की शिखा से शादी के कुछ दिनों बाद ही मामा चल बसे। तभी से कपूर अंकल ने मुझे अपने बेटे का दर्जा दे दिया था। वो मुझे दामाद नहीं अपना बेटा मानते थे!" बोलते-बोलते रणधीर की आँखें भर आयीं।

मंजरी कुछ पल के लिए उसकी बातों पर गौर करती रही और फिर बोली:

“शिखा के अलावा बाकी लोगों के साथ कैसे रिश्ते थे आपके?”

सवाल सुन रणधीर चौंक गया। उसके चेहरे का भाव बदल सा गया।

“कैसे रिश्ते थे मतलब? मैंने अभी आपको बताया न कि कपूर अंकल ने मुझे बेटे का दर्जा दिया था, तो ज़ाहिर सी बात है कि बाकी लोग भी मुझे उतना ही प्यार देते होंगे!” रणधीर की आवाज़ में हल्का सा तंज था।

“और आप उन्हें कितना प्यार करते थे?” मंजरी ने उसी जवाब का दूसरा सिरा पकड़ते हुए पूछा।

इस बार रणधीर बौखला गया।

“आप कहना क्या चाहती हैं एसीपी मंजरी? साफ़ साफ़ बोलिये। यूँ घुमा फिर के बात करना मुझे पसंद नहीं!” रणधीर अपनी जगह से उठ गया था।

“यहाँ फिलहाल बात आपकी पसंद नापसंद की नहीं हो रही मिस्टर रणधीर चोपड़ा। यहाँ एक क़त्ल की तहक़ीक़ात चल रही है और मैं उसी सिलसिले में आपसे पूछताछ कर रही हूँ।” मंजरी के तेवर भी बदलने लगे थे।

“तो आपको लगता है उनके क़त्ल के पीछे मेरा हाथ है?” रणधीर उसे घूरने लगा।

“होने को तो कुछ भी हो सकता है रणधीर जी। मेरा काम केस की तह तक पहुँचना है और उसके लिए मुझे कितनी ही गहरी खाई में भी उतरना पड़े, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।” मंजरी उसकी आँखों में आँखें डाल बोली।

“हाँ पर इतना भी नीचे मत उतर जाइएगा कि ऊपर वापस लौटना नामुमकिन हो जाए मंजरी जी!” रणधीर इस दफे अपनी जेब से सिगरेट निकाल कर सुलगाने लगा।

“जब तक मुझे मेरे जवाब नहीं मिल जाते तब तक मैं कहीं से भी लौट कर आती ही रहूँगी!” मंजरी की आवाज़ में एक शिद्दत थी।

“आप आखिर चाहती क्या हैं? आप भी जानती हैं की आप के सभी तीर निशाने से दूर ही गिर रहे हैं। इसका मतलब ये नहीं कि आप अँधेरे में हर किसी पर निशाना लगाती रहें।” रणधीर धुएँ का छल्ला हवा में उड़ाते हुए बोला।

“फिलहाल तो अब मेरे निशाने पर कपूर परिवार के ख़ास लोग ही हैं। पता नहीं क्यों पर मुझे लग रहा है कि इस उलझी हुई गुत्थी को सुलझाने का एक सिरा मुझे कपूर विला में ही मिलेगा!” मंजरी अपनी जगह से उठती हुई बोली।

“देखिये मेरी तरफ से आपको अगर कोई भी मदद चाहिए तो मैं हमेशा तैयार हूँ। इसमें कोई छुपाने वाली बात नहीं है कि कपूर अंकल के जाने से सबसे बड़ा नुक्सान मेरा ही हुआ है। ये मत भूलिए के वो मेरे स्टार्टअप को फंड कर रहे थे। मैं खुद चाहता हूँ कि उनके क़ातिल को सख़्त से सख़्त सज़ा मिले और उनकी आत्मा को शांति!” रणधीर मंजरी के आगे हाथ जोड़ता हुआ बोला।

“ठीक है फिलहाल मैं चलती हूँ पर अगर ज़रूरत हुई तो आपको दोबारा तकलीफ दूँगी।” मंजरी ने भी हाथ जोड़ते हुए उसका अभिवादन किया।

“बिलकुल मैं तो आपको बोल ही रहा हूँ की आपको इस केस में जब भी मेरी कोई मदद की ज़रूरत पड़े तो बिना कुछ सोचे आप मुझे बुला सकती हैं।” रणधीर ने मुस्कुराते हुए कहा।

□□□

“रणधीर के साथ आपकी शादी को कितने साल हो गए हैं?” मंजरी ने बिना लाग लपेट शिखा के सामने बैठते हुए उससे ये सवाल किया। शिखा के साथ बैठी उसकी बहन शिप्रा को ये बात कुछ सही नहीं लगी। मंजरी को यूँ बार बार चले आना भी उसे खास अच्छा नहीं लग रहा था। नताशा और कुणाल के बेकसूर साबित होने के बाद से वो पुलिस की हर बात पर कोई न कोई कमी निकालने में लगी हुई थी।

“अब इस बात से हमारे केस का का क्या लेना देना? एसीपी मंजरी अगर आप ये फालतू की बातों पर अपना वक़्त जाया करने के बजाय ख़ूनी को ढूँढने की कोशिश करेंगी तो हम सभी का बहुत भला होगा। वो मंजरी की तरफ गुस्से से देखती हुई बोली।

मंजरी ने शिखा की तरफ से नज़रें हटा कर शिप्रा की ओर कर ली।

“अब आप मुझे सिखाएँगी की पुलिस को क्या करना चाहिए और क्या नहीं? आपके बेकार के शक की वजह से नताशा और कुणाल को लेकर हमारा जो वक़्त बर्बाद हुआ उसका क्या? जिसे देखो यहाँ शरलॉक होम्स बना फिरता है!” मंजरी ने तंज कसा।

“माफ़ कीजिये ये इस केस को लेकर थोड़ी परेशान है!” शिखा ने अपनी बहन की तरफ से माफ़ी माँगते हुए कहा।

“इस केस को लेकर हम भी उतने ही परेशान हैं शिखा जी। ऐसा नहीं हैं कि हम लोग हाथ पर हाथ धर के बैठे हुए हैं। हर के लीड पर, हर एक पहलू की बारीकी से जाँच की जा रही है और इसी सिलसिले में मैं यहाँ आयी हूँ।” मंजरी ने शिप्रा की तरफ देखते हुए अपनी बात पूरी करी।

“चलिए, जो आप जानना चाहिए वो मैं वो आपको बताती हूँ। जहाँ तक रणधीर से मेरी शादी का सवाल है तो वो दो साल पहले हुई थी।” शिखा ने मंजरी की बात का जवाब देते हुए कहा।

“दो साल! माफ़ कीजिये और आप दोनों ने अभी तक बच्चे के बारे में कुछ नहीं सोचा?” मंजरी ने अगला सवाल दागा।

“रणधीर और मुझे बच्चे बेहद पसंद हैं पर अभी फिलहाल रणधीर का सारा ध्यान अपने स्टार्टअप की तरफ है। वो उसका बहुत बड़ा सपना है जिसके लिए वो दिन रात बहुत मेहनत भी कर रहा है।” शिखा ने इत्मीनान से मंजरी की बात का जवाब देते हुए बताया।

“ये वही स्टार्टअप है ना जिसके लिए आपके पिताजी भी रणधीर की मदद कर रहे थे?” मंजरी उसे भाँपना चाह रही थी।

उसके सवाल पर साथ बैठी शिप्रा शिखा की ओर देखने लगी। शिखा और शिप्रा की नज़रें आपस में मिलीं और फिर शिखा ने जवाब दिया:

“पापा चाहते थे कि रणधीर अपने बिज़नेस में बहुत आगे जाए। उन दोनों के लिए ये प्रोजेक्ट बहुत अहम था।” शिखा की आँखों से आँसू बह निकले।

“मंजरी जी प्लीज़! मैं आपके आगे हाथ जोड़ती हूँ यूँ बार बार दीदी के दिल को मत दुखाइए। आपको जो पूछना है मुझसे पूछिए। मैं जवाब दूँगी आपकी हर बात का।” शिप्रा बीच में कूद पड़ी।

“जब आपका वक़्त आएगा तब आपसे भी सवाल करूँगी शिप्रा जी।” मंजरी बोली।

“ठीक है मैं वैसे भी आज वापस ही जा रही हूँ। तो आपको अगर मुझे कुछ भी बात करनी हो तो मेरे घर आना होगा।” शिप्रा ने बात ख़त्म की और वहाँ से उठा कर चली आयी।

“आपकी बहन कहाँ रहती है?” मंजरी ने शिप्रा के जाते ही शिखा से पूछा।

“यहीं पास में गोपालगंज से बीस किलोमीटर की दूरी पर इसका कॉलेज है। वहीं पढ़ाती है ये।

पापा ने बहुत बोला की वहाँ अलग रहने की क्या ज़रूरत पर ये मानी नहीं। हमेशा से ऐसी ही रही है ये, ज़िद्दी सी। हमेशा अपने मन की करने वाली।” शिखा अपने होंठों पर मुस्कराहट लाती हुई बोली।

“आपसे कितनी छोटी हैं ये?” मंजरी कुछ सोचती हुई बोली।

“मुझसे तीन साल छोटी है!” शिखा ने नपातुला जवाब दिया।

“इनकी शादी नहीं हुई अभी तक?” मंजरी का अगला सवाल हाज़िर था।

“नहीं! कहती है कभी शादी नहीं करेगी!” शिखा के चेहरे पर फिर से मायूसी छा गयी थी।

मंजरी कुछ देर तक उसका चेहरा पढ़ने की कोशिश करती रही। शिखा की सूनी आँखें जैसे ज़माने भर का दर्द समेटे हुए थीं।

“शिखा! मैं नताशा और कुणाल को भी तलब कर चुकी हूँ। घटनास्थल से मिला डीएनए उन दोनों से मैच नहीं करता पर ध्रुव की गाड़ी पर मिला डीएनए उस डीएनए मैच करता है। सच कहूँ तो इस केस को लेकर मैं खुद भी परेशान हूँ। आपके मामा मनोहर को भी तलब कर चुकी हूँ पर वहाँ भी निराशा ही हाथ लगी!” मंजरी ने बात शुरू करते हुए कहा।

शिखा ने आँखें मूँद ली। बंद आँखों से दो आँसू उसके गालों को भिगोते हुए नीचे लुढ़क गए।

“पता नहीं किसकी नज़र लग गयी हमारे परिवार को। सब कुछ ठीक ही तो चल रहा था। कपूर विला ने हमेशा रौनकें ही देखी हैं। पहले ध्रुव नताशा की शादी फिर मेरी शादी। अब यहाँ ऐसी मनहूसियत है जैसे यहाँ की दरो-दीवारों ने अँधेरे ज़ज़्ब कर लिए हों!” वो अपने आँसू पोंछती हुई बोली।

मंजरी को एक पल के लिए उससे सहानुभूति महसूस हुई पर फिर उसके अंदर के पुलिस अफ़सर ने उस पर काबू पा लिया।

“आप यहाँ अकेली क्यों रह रही हैं? अब तो शिप्रा भी जा रही है और रणधीर पहले ही जा चुके हैं!” मंजरी बात पलटती हुई बोली।

“पता नहीं क्यों पर मेरा यहाँ से जाने का मन नहीं हो रहा। रणधीर को काम भी देखना है, पापा के जाने के बाद उसका प्रोजेक्ट रुका हुआ है जिसको लेकर वो बहुत टेंशन में है। जिस रात ये हादसा हुआ उस रात भी वो इसी सिलसिले में शहर से बाहर गया था और अगली सुबह जैसे ही खबर मिली, सब काम छोड़ कर यहाँ चला आया। शिप्रा का भी कॉलेज है तो वो भी अब कब तक यहाँ रहेगी। पर जब तक उस क़ातिल का पता नहीं चल जाता मैं यहीं रहूँगी!” शिखा की आवाज़ भारी हो चली थी।

“हम्म!” मंजरी उसकी बात पर गौर करती हुई बोली।

□□□

अध्याय 20

रात की कालिख आसमान में स्याही की तरह फ़ैल चुकी थी। सड़कें सुनसान थीं और चारों तरफ ख़ामोशी शोर मचाती हुई बेतरतीब सी गूँज रही थी। हर तरफ देखो तो ऐसा लग रहा था जैसे सिर्फ और सिर्फ अँधेरे का काला साम्राज्य फैला हुआ हो। अक्सर ऐसे ही अँधेरों में कुछ सफेदपोश लोग अपने चेहरे छुपाते हुए निकलते हैं। कुछ ऐसा ही उस रात भी हो रहा था। एक कार सुनसान सड़क पर दौड़ी जा रही थी। कार के काले शीशे ऊपर चढ़े हुए थे और अंदर ड्राइविंग सीट पर बस एक साया बैठा हुआ नज़र आ रहा था। कौन था वो साया जो उस ठंडी अँधेरी रात में उस वक़्त उस वीरान पड़ी सड़क पर गाड़ी तेज़ दौड़ाते हुए चला जा रहा था? शायद इस बात का जवाब वहाँ छाए अँधेरे को भी नहीं था। उसने तो जैसे सब कुछ अपनी गिरफ़्त में ले लिया था।

कार के अंदर बैठे उस साये ने गियर बदला और कार की रफ़्तार में थोड़ा और इज़ाफ़ा हो गया। साफ़ ज़ाहिर था उस साये को अपनी मंज़िल पर पहुँचने की बहुत जल्दी थी। कार हवा से बतियाती हुई उस सीधी सड़क पर चली जा रही थी। कुछ ही देर में वो कार एक सुनसान सी छोटी सड़क पर मुड़ गयी। वो सड़क शहर को जोड़ने वाली मुख्य सड़क से कटती हुई बायीं तरफ की ओर कहीं दूसरे ही रास्ते पर निकल रही थी। साये ने कार उसी तरफ मोड़ दी और एक बार फिर गियर बदलते हुए कार की रफ़्तार बढ़ा दी।

कुछ देर तक उस कच्ची सड़क पर कार के चलने से धूल उड़ती रही और फिर वो धूल भी उसी कालिख में जा समाई। वो कार धीरे धीरे अब अपनी मंज़िल की तरफ बढ़ रही थी। उस कच्ची सड़क के दोनों तरफ बड़े बड़े दरख़्त खड़े हुए थे और रात की ठंडी हवा में झूल रहे थे। दूर से आती झींगुरों की आवाज़ के बीच में वो कार एक पुराने से मकान के ठीक सामने आ कर रुकी। हवा की थपकियों से पत्तों के टकराने की आवाज़ साफ़ सुनाई देने लगी। उसी आवाज़ के बीच कार का दरवाज़ा खुला और ड्राइविंग सीट से वो साया नीचे उतर आया।

साये ने नीचे उतर कर एक नज़र चारों तरफ दौड़ाई। दूर-दूर तक उसे कोई भी वहाँ नज़र नहीं आया। अपनी तस्सली कर के वो साया उस पुराने से मकान की तरफ चलने लगा।

पीले रंग के उस मकान की छत पर लाल गुंबद से बने हुए थे। चारों तरफ से प्लास्टर झड़ चुका था। देखने से ही लग रहा था कि उस मकान की सुध लेने वाला शायद कोई भी नहीं है।

वो साया दबे हुए कदमों से चलता हुआ मकान के दरवाज़े तक पहुँचा और आ कर खड़ा हो गया। काले दस्ताने वाला दायाँ हाथ उसने अपनी जेब में डाला और एक चाबी बाहर निकाली। फिर उस चाबी से बड़े ही इत्मीनान के साथ उसने वहाँ लगे की-होल में डाली और दरवाज़े को हौले से धक्का दिया। दरवाज़ा मद्धम से आवाज़ करता हुआ खुल गया।

“कौन है?” एक औरत की थकी हुई सी बोझिल आवाज़ ने उसके अंदर आते ही सवाल दागा। इससे पहले की वो साया आगे बढ़ता वो औरत बुरी तरह से खाँसने लगी। साया लगभग दौड़ता हुआ उसकी तरफ लपका और मोबाइल की रौशनी में पानी का गिलास उसे थमाने लगा।

“मैं हूँ! और कौन होगा इस वक़्त?” कहते हुए उस साये ने वापस दरवाज़े की तरफ पलटते हुए दीवार पर लगे एक स्विच पर हाथ मारा। अगले ही पल कमरा एक पीली रौशनी से भर गया।

“इतनी रात गए नहीं आना चाहिए था तुझे?” वो औरत चौंकती हुई बोली।

झुर्रियों से भरा चेहरा, नींद और थकान से भरी आँखें, माथे पर टेढ़ी मेढ़ी सी लकीरें और सफ़ेद पड़ चुके बाल। उस औरत की हालत भी उस मकान जैसी ही कुछ दिखाई देती थी।

एक भूरे रंग की सलवार कमीज़ जिसका रंग जगह-जगह से उतर चुका था, उसे पहने वो गुज़रे ज़माने की एक ऐसी इमारत नज़र आ रही थी जो अब एक खंडहर का रूप ले चुकी थी।

“तुझसे मिलने के लिए रात का वक़्त ही मुनासिब होता है माँ!” उस साये ने औरत के सर पर प्यार से हाथ फेरते हुआ कहा।

औरत लपक कर उसके गले जा लगी। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहना शुरू हो गयी।

“तू अपनी दवा सही वक़्त पर तो ले रही है ना माँ?” साये ने बिस्तर के बगल में रखे छोटे से टेबल पर रखी दवाओं की तरफ देखते हुए पूछा।

“इन दवाओं से ज़्यादा मुझे तेरी ज़रूरत है। दवा खिलाने के लिए वो रघु है ना इधर, पर मुझे अब तेरे साथ रहना है। ऐसे कब तक यहाँ इतनी दूर अकेले पड़ी रहूँगी?” वो औरत लगातार रोये जा रही थी।

“बस थोड़ा वक़्त और दे माँ। जिस काम को पूरा करने की कसम मैंने खायी है, उसे तो पूरा करना ही होगा ना। बस अब ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा। जैसे ही काम ख़त्म होगा हम दोनों साथ में रहना शुरू कर देंगे!” कहते हुए उस साये की आँखें भी भर आयीं।

उसने अपनी माँ के माथे को चूमा और फिर उसके आँसुओं को पोंछना शुरू कर दिया।

“मुझे हर वक़्त तेरी चिंता लगी रहती है, हर वक़्त दिल में एक अजीब सा डर रहता है कि कहीं तुझे कुछ हो तो नहीं गया!” वो औरत खुद को संभालती हुई बोली।

“मुझे कुछ नहीं होगा माँ, मेरे साथ तेरा आशीर्वाद जो है। तू मेरी चिंता बिलकुल मत किया कर। बस तू डॉक्टर के कहे मुताबिक़ अपनी दवा टाइम से लेती रहा कर। मुझे तुझसे और कुछ नहीं चाहिए। भगवान ने चाहा तो वो दिन अब ज़्यादा दूर नहीं माँ, जब हम दोनों एक छत के नीचे आराम की ज़िंदगी गुज़ारेंगे!” उस साये ने अपनी माँ के चेहरे को पुचकारते हुए जवाब दिया।

“मेरी ज़िंदगी में तेरे सिवा अब कोई नहीं है। कुछ भी करने से पहले बस इस बात का ध्यान रखना। मैं पहले ही बहुत कुछ खो चुकी हूँ, अब मुझमें तुझे खोने की हिम्मत नहीं है!” वो औरत अपने पल्लू से अपनी आँखों के किनारे पोंछती हुई बोली।

“माँ, मैंने भी एक सपना देखा था कि मैं तुझे हर वो ख़ुशी दे सकूँ जिसकी तू हमेशा से हक़दार रही थी। तूने अपनी ज़िंदगी में बहुत कुछ खोया है माँ पर, अब वक़्त आ गया है की तुझे वो सब वापस मिले और मेरा हर कदम बस उसी तरफ बढ़ रहा है माँ!” साये ने एक बारे फिर उस बूढी औरत को गले से लगा लिया।

कमरे में कुछ देर तक दोनों की बेज़ुबान सिसकियाँ गूँजती रही।

□□□

पुलिस जीप एक घुमावदार सड़क से होती हुई एक बिल्डिंग के कंपाउंड के अंदर आ कर रुकी। रौनक सिंह ने लपक कर जीप का दरवाज़ा खोला और मंजरी नीचे उतर आयी।

“जगह तो काफी अच्छी है। काफी सोच समझ कर चुनी हुई लगती है!” वो चारों तरफ नज़रें दौड़ाती हुई बोली।

“कॉलेज भी यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है मैडम जी, शायद इसलिए यहाँ रह रही होंगी!” रौनक सिंह ने अपना ज्ञान बखारते हुए जवाब दिया।

“हम्म, चलो मिल कर देखते हैं। आज हमें कौन सा नया लेक्चर सुनने को मिलता है!” मंजरी ने मुस्कुराते हुए कहा और वो दोनों बिल्डिंग के अंदर दाखिल हो गए।

कुछ ही देर में वो दोनों शिप्रा के दरवाज़े पर खड़े थे। मंजरी ने यहाँ आने से पहले शिखा से शिप्रा का नंबर ले लिया था और रविवार के दिन सुबह-सुबह उससे मिलने की इच्छा जताई थी। वो जानती थी कि शिप्रा रविवार को घर पर ही मिलेगी और यहाँ उससे इत्मीनान से बातचीत की जा सकती है।

“बैठिये मंजरी जी मैं ज़रा हाथ धो कर आयी!” शिप्रा की आवाज़ में हल्की सी बेरुखी झलक रही थी। वो उस वक़्त नाश्ता कर रही थी और उसके हाथ में एक टिशू पेपर था जिससे वो अपना मुँह पोंछ रही थी।

“आप आराम से नाश्ता कर लीजिये हमें कोई जल्दी नहीं है!” मंजरी ने सामने मौजूद सोफे पर बैठते हुए कहा।

“आपको नहीं होगी पर मुझे है। मुझे लाइब्रेरी भी जाना है इसके बाद!” शिप्रा ने उसी तल्खी से जवाब दिया और कागज़ के उस नैपकिन के किनारे से अपने होंठों के किनारे पर लगी जूठन को पोंछती हुई रसोई में चली आयी।

मंजरी और रौनक सिंह कुछ देर वहीं बैठे घर का ज़ायज़ा लेने लगे। दो कमरों के अलावा एक छोटी सा किचन भी था वहाँ पर। कमरे की दीवारों पर एक तरफ देवी देवताओं के लंबे से पोस्टर लगे थे। एक जगह पर दीवार में पेंट से कुछ कलाकारी सी की गयी थी। कुल मिला कर रहने की जगह बेहद साफसुथरी नज़र आ रही थी। वहाँ का माहौल देख कर साफ़ नज़र आ रहा था कि शिप्रा को बेतरतीबी से रहने की आदत तो बिलकुल भी नहीं थी।

कुछ ही देर में शिप्रा रसोई से बाहर आयी और ट्रे से पानी का गिलास उन दोनों के आगे करती हुई बोली:

“कुछ चाय नाश्ता लेंगे?”

“नो थैंक्स। हम यहाँ जिस काम के लिए आये हैं वो हो जाये बस उसके बाद निकलना है। फिर वैसे भी आपको भी तो लाइब्रेरी जाना है ना तो ये सब तकलीफ रहने ही देते हैं!” मंजरी ने उसी की बात पर तंज कसते हुए जवाब दिया।

शिप्रा ने ट्रे टेबल पर रखी और सामने बैठ गयी।

“कहिये क्या जानना चाहते हैं मुझसे आप? वैसे तो हम पहले भी कई बार मिल चुके हैं, तो ऐसा क्या है जिसके लिए आपको अलग से मेरे पास यहाँ आना पड़ा?” वो मंजरी को घूरते हुए बोली।

“अब अगर आप इतनी दूर अकेली न रह रही होती तो हमें सच में अलग से यहाँ नहीं आना पड़ता!” मंजरी ने हल्की सी मुस्कराहट के साथ उसकी बात का जवाब दिया तो वो कुछ तिलमिला सी गयी।

“क्या मतलब है आपका?” शिप्रा के तेवर बदलने लगे थे।

“मतलब ये कि बस मैं ये जानना चाहती थी कि आप यहाँ अकेली क्यों रहती हैं जबकि पूरा

कपूर विला खाली पड़ा है!” मंजरी ने बिना बात घुमाये पूछताछ शुरू करते हुए कहा।

शिप्रा कुछ पल के लिए चुप हो गयी। मानो वो सोच समझ कर उसकी बात का जवाब देना चाहती हो। रौनक सिंह उसे बड़े ध्यान से देख रहा था। अगले ही पल शिप्रा ने खुद को संभाला और बोली:

“कपूर विला से मेरे कॉलेज की दूरी थोड़ी ज़्यादा है। वहाँ से रोज़ कॉलेज आना जाना मुझे पसंद नहीं था।”

मंजरी ने उसकी बात सुन धीमे से सर हिलाया और बोली:

“और ये शादी न करने का कारण? सिर्फ नौकरी करना तो नहीं हो सकता?”

“क्या मतलब?” शिप्रा इस बार अपना आपा खो बैठी।

“मतलब की आपने शादी क्यों नहीं की? क्यों ऐसी अकेली घर से दूर नौकरी…” इससे पहले कि मंजरी अपनी बात ख़त्म करती शिप्रा ने उसे बीच में ही टोक दिया।

“क्यों? कानून की किस किताब में लिखा है कि अपनी ज़िंदगी के फैसले करने के लिए हमें पुलिस से इजाज़त लेनी होगी?” शिप्रा ने वापस तंज कसा।

“शिप्रा कपूर! ऊँची आवाज़ में बात मैं भी कर सकती हूँ। आपके लिए अच्छा होगा कि पूछताछ में पुलिस की मदद करें!” इस बार मंजरी की आवाज़ कड़क हो चली थी। साथ बैठा रौनक सिंह भी एक बार के लिए सकपका सा गया।

मंजरी की आवाज़ और उसके तेवर का ऐसा असर हुआ कि शिप्रा के तेवर ठंडे पड़ने लगे। उसने बात सँभालते हुए जवाब दिया:

“एसीपी मैडम! मैंने अब तक आपकी हर पूछताछ का, हर सवाल का जवाब सही से दिया है। देखिये मैं एक पढ़ी लिखी अच्छे घर की नौकरीशुदा लड़की हूँ जो अपनी ज़िंदगी अपनी शर्तों पर जीती आयी है। मैं चाहती तो वहाँ रह कर भी ऐशोआराम की ज़िंदगी जी सकती थी, पर मैं अपने पैरों पर खड़ी हो कर अपनी ज़िंदगी बनाना चाहती थी। मेरे पापा को भी इस बात पर बहुत गर्व था मुझ पर!” कहते-कहते शिप्रा की आवाज़ थर्राने लगी और उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे।

मंजरी ने एक गहरी साँस ली और बोली:

“क्या आपके पापा नहीं चाहते थे कि आप भी शादी कर के अपना घर बसा लें? हर बाप की यही ख़्वाहिश होती है कि उसकी बेटी का घर बसे!”

“क्यों नहीं चाहेंगे?” शिप्रा ने आँसू पोंछते हुए जवाब दिया।

“फिर भी आपने शादी नहीं की?” मंजरी उसे कुरेदती हुई बोली।

“आपको देख कर ऐसा लगता तो नहीं पर क्या आपकी भी ऐसी ही सोच है कि एक लड़की की ज़िंदगी तब तक मुकम्मल नहीं होती जब तक वो किसी की बीवी न बन जाए?” शिप्रा की हाज़िरजवाबी सुन रौनक सिंह भी हैरान रह गया।

“मेरी सोच क्या है और क्या नहीं फिलहाल उसे रहने दें। बस मैं ये जानना चाहती हूँ कि क्या आपके परिवार वाले आपके इस फैसले से खुश थे?”

मंजरी ने बातों का रुख मोड़ते हुए कहा।

“मेरे घरवालों ने मुझे हमेशा सपोर्ट किया है। उनकी तरफ से मुझपर कभी कोई दबाव नहीं था!” शिप्रा अब एकदम सामान्य नज़र आ रही थी।

“क्या आपको आज तक कोई पसंद नहीं आया?” मंजरी का अगला सवाल तैयार था।

शिप्रा इस बार फिर से चुप हो गयी। वो कुछ देर तक जैसे शून्य में ताक रही थी। एक पल की ख़ामोशी के बाद वो बोली:

"नहीं!" और वो फिर से चुप हो गयी।

□□□

अध्याय 21

“शिखा ने मुझे बताया कि जिस रात कपूर विला में वो वारदात हुई, आप शहर से कहीं बाहर गए हुए थे। क्या मैं जान सकती हूँ आप कहाँ गए थे?” मंजरी रणधीर के ऑफिस में बैठी कॉफी का घूँट लेती हुई बोली। अपनी तरफ से इस केस में वो कोई भी कसर नहीं छोड़ना चाहती थी इसलिए बहुत सोच समझ कर वो रणधीर से मिलने यहाँ चली आयी थी। रणधीर ने भी बिना किसी हिचकिचाहट के उसे ऑफिस आने के लिए हाँ बोल दिया था।

रणधीर उसकी बात सुन कर कुछ पल के लिए उसके तरफ देखने लगा। वो बड़े गौर से मंजरी को निहार रहा था। मंजरी भी उसकी आँखों में आँखें डाले उसे पढ़ने की कोशिश कर रही थी।

“जी हाँ बिलकुल जान सकती हैं। मैं रानीगंज गया था अपने प्रोजेक्ट के सिलसिले में। कपूर साहब मतलब शिखा के पापा मेरे इस प्रोजेक्ट को ले कर बहुत उत्साहित थे। वो हमेशा मुझे आगे बढ़ता हुआ देखना चाहते थे।” कहते कहते रणधीर का गला भर आया।

मंजरी अभी भी उसे देख रही थी। रणधीर बेहद सुलझा हुआ नज़र आता था। उसके बात करने का तरीका, उसके उठने बैठने का सलीका उसे सब से कुछ अलग दर्शाता था। ऐसे ग़मज़दा माहौल में भी उसने खुद को बेहद संभाल के रखा हुआ था।

“आपकी पत्नी ने बताया कि मिस्टर कपूर आपके प्रोजेक्ट में पैसा भी लगाने वाले थे?” मंजरी कॉफ़ी का कप टेबल पर रखती हुई बोली।

रणधीर कॉफ़ी का घूँट ले ही रहा था कि उसकी बात सुन कर वो वहीं रुक गया।

“हाँ! मैंने कहा ना आपको कपूर साहब को मेरे प्रोजेक्ट में बहुत दिलचस्पी थी। वो मुझे अपने बेटे जैसा ही मानते थे और इसी नाते वो मेरी मदद करना चाहते थे।” रणधीर ने मंजरी की बात का जवाब देते हुए कहा।

मंजरी ने उसकी बात सुन कर धीमे से सर हिलाया फिर बोली:

“आपके उनके बेटे यानी ध्रुव के साथ कैसे रिश्ते थे?”

रणधीर ने एक साँस में कॉफी गटकी और अपने होंठ पोंछता हुआ बोला:

“ध्रुव और मैं कुछ ही समय में अच्छे दोस्त बन गए थे। उसकी बेवक़्त मौत ने मुझे बुरी तरह से झकझोर कर रख दिया था। उस हादसे के बाद ही मैं कपूर साहब के और करीब आ गया था। शायद मुझमें वो अपने मरे हुए बेटे को देखने लगे थे।” रणधीर की आँखों के किनारे से एक आँसू बह निकला।

मंजरी अपनी जगह से उठी और कुर्सी के इर्द गिर्द चहलकदमी करने लगी। ज़ाहिर था कि वो कुछ सोच रही थी। उसके दिमाग में अभी भी कई सवाल थे जिनके जवाब वो तलाशने की कोशिश में लगी हुई थी।

अगले ही पल वो चलती चलती रुक गयी और रणधीर की तरफ देखती हुई बोली:

“यहाँ से रानीगंज कितनी दूर है?”

रणधीर उसकी बात सुन कर एक पल के लिए चौंक गया। फिर अगले ही पल खुद को संभालता हुआ बोला:

"यहाँ से करीब चार घंटे का सफर है रानीगंज का!"

"चार घंटे! पर आप तो अपनी गाड़ी में गए होंगे ना तब तो कम टाइम लगा होगा?" मंजरी ने अगला सवाल किया।

"नहीं, मैं उस रात कार से नहीं गया था। मैं ज़्यादातर इतनी दूरी का सफर ट्रेन से ही करता हूँ। खुद को आराम भी मिल जाता है और सफर भी कट जाता है।" रणधीर ने बताया।

"हादसे वाली रात आप रानीगंज कितने बजे की ट्रेन से गए?" मंजरी पीछा छोड़ने वालों में नहीं थी।

रणधीर एक बार फिर सोच में डूब गया। फिर यकायक उसने अपनी डायरी के पन्ने पलटने शुरू किये।

"हादसे वाली रात.. हम्म... शाम साढ़े सात बजे की ट्रेन थी रानीगंज के लिए।" वो बोला।

मंजरी ने मन ही मन उसकी बात को नोट किया और जवाब में बोली:

"पर शिखा ने बताया था की हादसे की ख़बर मिलते ही आप अगले सुबह वहाँ से वापस आ गए थे। इतनी जल्दी तो ट्रेन में तत्काल कोटे से भी सीट नहीं मिलती?"

इस बार रणधीर का सब्र जवाब दे गया।

"आप कहना क्या चाहती हैं मंजरी जी? आपको लगता है यहाँ कोई मज़ाक चल रहा है? कब से देख रहा हूँ आप सवाल पर सवाल किये जा रही हैं। वो तो मेरी शराफत है कि मैं आपके हर सवाल का जवाब दिए जा रहा हूँ वरना!"

"आपके पास इसके अलावा कोई चारा है क्या?" मंजरी ने पलटते हुए जवाब दिया।

उसकी बात सुन कर रणधीर चुप हो गया।

"माफ़ कीजिये मेरा वो मतलब नहीं था। खैर, आप भी अपना काम ही कर रही हैं। समझ सकता हूँ। रुकिए आपके हर सवाल का जवाब है मेरे पास।"

कहते हुए वो अपने लैपटॉप पर कुछ खोजने लगा। मंजरी एक बार फिर उसे गौर से देखने लगी।

"ये देखिये! जिस रात वो वारदात हुई ये उस रात का मेरा ट्रेन टिकट है यहाँ से रानीगंज का!" कहते हुए उसने लैपटॉप मंजरी की तरफ़ मोड़ दिया।

मंजरी अब स्क्रीन की तरफ देख रही थी। रणधीर की ईमेल पर उसका ट्रेन टिकट था।

"और जहाँ तक रही मेरे रानीगंज से अगली सुबह वापस आने की बात तो जैसे ही मुझे वो ख़बर मिली मैं वहाँ से टैक्सी लेकर इधर वापस आ गया था!" रणधीर ने अपनी बात पूरी करते हुए कहा।

मंजरी ने एक नज़र उठा कर उसकी तरफ देखा और एक बार फिर स्क्रीन की तरफ देखती हुई बोली:

"क्या आप मुझे ये टिकट ईमेल कर सकते हैं?"

"जी हाँ, आप आराम से अपनी तस्सली कर सकती हैं। आपका ईमेल आई डी क्या है?" कहते हुए रणधीर ने लैपटॉप अपनी तरफ मोड़ लिया।

मंजरी ने उसे ईमेल आई डी दिया और अगले ही मिनट रणधीर ने उसे वो टिकट मेल कर दिया

था।

“लीजिये टिकट आपको भेज दिया है। इसके अलावा भी अगर आपको किसी और चीज़ की ज़रूरत पड़े या मेरी किसी मदद की ज़रूरत हो तो बेहिचक मुझे बता दीजियेगा!” कहते हुए रणधीर के चेहरे पर इस दफे हलकी सी मुस्कराहट थी।

□□□

“यात्रीगण कृपया ध्यान दें! रानीगंज मेल प्लेटफार्म नंबर तीन से रवाना होने वाली है।”

रेलवे प्लेटफार्म पर लगे लाउडस्पीकर से ये आवाज़ जैसे ही गूँजी, वहाँ चारों तरफ अफरातफरी सा माहौल बन गया। पुलिस की जीप रेलवे स्टेशन के बाहर आ कर रुकी और वहाँ रानीगंज मेल धुआँ उड़ाती हुई पटरियों पर धीमे से आगे सरकने लगी। मंजरी अपनी टीम के साथ धड़ल्ले से स्टेशन के अंदर चली आयी और सीधे स्टेशन मास्टर के कमरे की तरफ बढ़ चली।

एक पीले रंग के दरवाज़े के आगे आधी टूटी हुई फट्टी पर लिखा था ‘के. के. श्रीवास्तव, स्टेशन मास्टर गोपालगंज’I

अगले ही पल मंजरी उस दरवाज़े के अंदर थी। सामने एक बड़ी सी कुर्सी पर नाक पर मोटा सा काला चश्मा चढ़ाये एक शख़्स बैठा था। उसके पीछे एक बड़ा सा नक्शा लगा हुआ था जिसपर लाल रंग के छोटे छोटे बल्ब जल रहे थे। पुलिस को यकायक सामने देख कर श्रीवास्तव साहब के हाथ में पकड़ा हुआ पेन फाइल पर चलते हुए रुक गया। उनकी ऐनक नाक से फिसलती हुई नीचे की तरफ गिरी जिसे सँभालते हुए उन्होंने कहा:

“जी कहिये, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?”

मंजरी ने आपने हाथ आगे बढ़ाते हुए जवाब दिया:

“एसीपी मंजरी मिश्रा गोपालगंज थाने से। मैं एक केस के सिलसिले में आपसे मिलने आयी हूँ!”

स्टेशन मास्टर ने काले चश्मे को उतार कर टेबल पर एक तरफ रखा और मंजरी की तरफ देखते हुए बोले:

“मुझसे जो मदद बन पड़ेगी मैं करूँगा पर केस है क्या?”

जवाब में मंजरी ने साथ बैठे रौनक सिंह की तरफ इशारा किया। रौनक सिंह ने अपनी जेब से एक प्रिंट आउट निकाला और उसे मंजरी की तरफ बढ़ा दिया।

“मुझे इस टिकट के बारे में पूछताछ करनी है।” मंजरी ने वो कागज़ स्टेशन मास्टर की तरफ सरकाते हुए कहा।

स्टेशन मास्टर ने एक नज़र उस ट्रेन टिकट पर डाली और फिर अगली नज़र मंजरी की तरफ देखते हुए कहा:

“ये तो रानीगंज मेल का टिकट है सोलह दिसंबर का! एक सेकंड... सोलह दिसंबर ये तो.. ये तो... उसी रात की बात है ना जिस रोज़ कपूर विला में वो हत्याकांड हुआ था?” के. के. श्रीवास्तव की पेशानी पर लकीरें उभर आयी थीं।

“याददाश्त तो बहुत अच्छी है आपकी!” मंजरी मुस्कुराती हुई बोली।

“मैडम इतने दिनों से हर अख़बार की सुर्ख़ियों में बस यही एक ख़बर ही तो है। और फिर ये तारीख़ मुझे इसलिए भी याद है क्यूँकि उस रोज़ इस ट्रेन के टिकट कलेक्टर केशव शर्मा जी की शादी की सालगिरह थी और वो बेचारे अनमने मन से ड्यूटी पर जाने को तैयार हुए थे। रुकिए मैं

बुलाता हुआ उन्हें, वो शायद रेस्ट रूम में ही होंगे। आज उनकी दोबारा से नाइट ड्यूटी है।" कहते हुए स्टेशन मास्टर ने अपने टेबल के नीचे से एक बेल दबाई।

मंजरी और रौनक सिंह ने एक नज़र चारों तरफ दौड़ाई और कमरे का जायज़ा लेने लगे। वो कमरा कुछ खास बड़ा नहीं था पर सजाया पूरे करीने से गया था। लकड़ी का टेबल जिस पर टेबल लैंप, तीन मोटे से रजिस्टर और एक पेन स्टैंड था। टेबल के नीचे एक रूम हीटर लगा हुआ था जिसकी गर्मी सिर्फ स्टेशन मास्टर के पैरों तक ही सीमित थी।

मंजरी अभी उस कमरे का और जायज़ा ले ही रही थी कि तभी एक और व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश किया। उनकी कमीज़ पर एक काला बैज लगा हुआ था जिसपर उनका नाम चमक रहा था:

केशव शर्मा!

"जी सर आपने बुलाया?" केशव शर्मा ने आते ही स्टेशन मास्टर की तरफ देखते हुए हाथ जोड़े और कहा।

"शर्मा जी ये गोपलगंज थाने से एसीपी मंजरी मिश्रा जी हैं। ये वो कपूर विला वाले केस के सिलसिले में यहाँ कुछ पूछताछ करने के लिए आयी हैं, बैठिये इधर और इन्हें जो भी जानकारी चाहिए, दे दीजिये।" के. के श्रीवास्तव ने धीमे से मुस्कुराते हुए बताया।

"शर्मा जी मैं आपसे ये जानना चाहती हूँ की सोलह दिसंबर की रात इस नाम का पैसेंजर ट्रेन में गया था या नहीं?" कहते हुए मंजरी ने वो टिकट का प्रिंट आउट केशव शर्मा की तरफ बढ़ा दिया।

केशव शर्मा ने प्रिंट आउट हाथ में लिया और कुछ देर तक अपनी नज़रें उसी में गड़ाए रखीं। रौनक सिंह और मंजरी ध्यान से उन्हें निहारने लगे।

"मैडम ऐसे बता पाना तो मुश्किल है। रुकिए, मैं देखता हूँ... एक मिनट!" कहते हुए केशव शर्मा ने अपने बैग से टेबलेट निकाला और उसमें कुछ टाइप करने लगा।

"रणधीर चोपड़ा… हम्म! हाँ मैडम इस नाम से एक पैसेंजर तो है।" कहते हुए उसने टेबलेट घुमा कर मंजरी के आगे कर दिया।

"एक सेकंड शर्मा जी! मेरे पास रणधीर की एक तस्वीर है।" मंजरी बोली और अपने मोबाइल पर एक तस्वीर खोल कर उसे दिखाने लगी।

केशव शर्मा ने गौर से उस तस्वीर की ओर देखा और फिर कुछ पल तक उसे ही निहारता रहा। वो बड़े ध्यान से रणधीर के चेहरे को पहचानने की कोशिश कर रहा था।

"हाँ, याद आ गया। मैडम, मैंने इस पैसेंजर से उस रात काफी बातचीत भी करी थी।" केशव यकायक जैसे कुछ याद करता हुआ बोला।

"आप इतने पक्के तौर पर कैसे बोल सकते हैं? ट्रेन में अकेला एक यही पैसेंजर तो नहीं होगा न जिससे आपकी बातचीत हुई होगी?" मंजरी ने सवाल किया।

"मैडम आपकी बात तो सही है, पर ये इकलौता ही था जिसने मुझे अपने खाने में से गोभी का पराठा ऑफर किया था। गोभी के पराठे तो उफ़! अब क्या ही कहूँ मैडम। हम अपनी जान तक दे सकते हैं गोभी के पराठों के लिए। वो हमारी श्रीमती जी को पनीर के पराठे…"

"बस रुकिए आप!" मंजरी ने केशव शर्मा की बात काटते हुए उसे वहीं रोक दिया। गोभी के पराठे के नाम से ही उसकी ज़ुबान से लार टपकने लगी थी।

"केशव जी आप पक्के तौर पर ये कह सकते हैं ना कि रणधीर चोपड़ा उस रात रानीगंज मेल

में यहाँ से गया था? याद रखिये, मैं आपका स्टेटमेंट रिकॉर्ड कर रही हूँ!” मंजरी उसकी आँखों में आँखों डाले बोली।

“मैडम, मैं भी सच ही बोल रहा हूँ। रणधीर चोपड़ा उस रात हमारी ही ट्रेन में यहाँ से रानीगंज के लिए बैठा था!” केशव ने टैबलेट को वापस अपने बैग में रखा और मंजरी की तरफ मासूमियत से देखने लगा।

“श्रीवास्तव साहब थैंक यू! अभी फिलहाल के लिए बस इतना ही। अगर आगे कोई ज़रूरत हुई तो दोबारा से आपको तकलीफ दूँगी। एंड थैंक यू केशव जी!” मंजरी मुस्कुराती हुई वहाँ से उठी और कमरे से बाहर चली आयी।

□□□

अध्याय 22

उस रोज़ वकील इंद्रजीत चड्ढा के ऑफिस में चहल-पहल कुछ कम थी। मंजरी रौनक सिंह के साथ उनके ऑफिस पहुँच चुकी थी। चड्ढा अपने किसी जूनियर को एक केस के सिलसिले में कुछ ज़रूरी बातें समझा रहे थे। अभी चड्ढा से बात करने में वक्त था इसलिए तब तक मंजरी और रौनक सिंह उनके केबिन में बैठे बतियाने लगे थे।

"मैडम जी केस तो उलझता ही जा रहा है। कपूर साहब के दामाद को भी तलब कर के देख लिया अब तो। अब हम क्या करेंगे?" रौनक सिंह के चेहरे पर भाव हर पल के साथ बदलते जा रहे थे। सामने रखी चाय ख़त्म हो चुकी थी। पहले घूँट को लेते हुए जो स्वाद रौनक सिंह को आया था वो चाय ख़त्म होते होते नीचे की चाय पत्ती के रहते अब कड़वाहट में तब्दील हो चुका था। कमबोश यही हाल इस केस का भी था। शुरू शुरू में जो मज़ा तफ्तीश करने में आ रहा था, अब वो ही तफ्तीश रौनक सिंह को भारी लगने लगी थी।

"बस एक गाँठ के खुलने की देर है रौनक सिंह जी। एक गुत्थी में चाहे जितनी भी गाँठे क्यों न हो, एक गाँठ के खुलते ही गुत्थी खुद-ब-खुद सुलझने लगती है।" मंजरी ने चाय का कप टेबल पर रखते हुए जवाब दिया।

इतने में चड्ढा दरवाज़ा खोल कर अंदर दाखिल हो गया।

"माफ़ कीजिये आप लोगों को मेरा यूँ इंतज़ार करना पड़ा। वो दरअसल एक केस अटका पड़ा है कई महीनों से, उसी के सिलसिले में अपने जूनियर को कुछ पॉइंट्स बता रहा था।" इंद्रजीत चड्ढा ने अपनी कुर्सी पर बैठते हुए कहा और एक रुमाल से अपना चश्मा पोंछने लगा।

"चड्ढा साहब कुछ समझ नहीं आ रहा।" मंजरी ने बात शुरू करते हुए कहा।

"मैं समझा नहीं आप क्या कहना चाहती हैं?" चड्ढा ने चश्मा वापस लगाते हुए पूछा।

"मैं इस केस के सिलसिले में हर उस शख़्स को तलब कर चुकी हूँ जिसपर मुझे ज़रा भी शक था। चाहे वो सोनाली का वो आशिक़ हो, या उनके मनोहर मामा। शिखा और शिप्रा से भी सवाल जवाब कर चुकी हूँ। कुलभूषण चावला तक को नहीं छोड़ा मैंने, नताशा और कुणाल की भी कुंडली जाँच ली पर हाथ कुछ भी नहीं लगा है अब तक।"

चड्ढा ने एक नज़र रौनक सिंह पर दौड़ाई और फिर मंजरी को ताकने लगा।

"मैडम, आप हुकुम कीजिए मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?" वो आगे सरकता हुआ बोला।

"क्या आप मुझे बता सकते हैं कि कपूर साहब की वसीयत के मुताबिक जायदाद का क्या होना था?" मंजरी ने चड्ढा को कुरदेते हुए पूछा।

चड्ढा एक पल के लिए ख़ामोश हो हवा में देखते हुए किसी सोच में पड़ गया। फिर जैसे वापस लौटते हुए मंजरी को देखते हुए बोला:

"कपूर साहब ने अपने बच्चों के नाम से बराबर बँटवारा किया हुआ था। यहाँ तक कि शिखा के

पति रणधीर को भी उसके बिज़नेस में मदद करने वाले थे।"

"जी हाँ, ये बात तो रणधीर मुझे बता ही चुका है। इसका मतलब कपूर साहब ने अपने सभी बच्चों के नाम से वसीयत में कुछ न कुछ ज़रूर छोड़ा था। ध्रुव की बीवी नताशा को वो पहले ही अपनी जायदाद से बेदखल कर चुके थे। इस बात को लेकर अगर हम चलते तो सबसे पहला शक नताशा पर ही जाता था क्यूँकि उसके पास क़त्ल करने की वजह थी पर मेरी तफ्तीश में नताशा और कुणाल दोनों ही निर्दोष निकले।" मंजरी चड्ढा की ओर देखती हुई बोली।

"इसका मतलब ये क़त्ल जायदाद को ले कर नहीं हुआ है?" इस बार सवाल करने की बारी चड्ढा की थी।

"पता नहीं अभी कुछ साफ़ तरीके से कहा नहीं जा सकता। ज़्यादातर मामलों में क़त्ल की वजह पैसा, ज़मीन जायदाद ही होती है। पर यहाँ शायद मामला अलग है। कुछ तो है जिसकी वजह से ये क़त्लेआम हुआ है, बस वो क्या है यही जानना बाकी है।" मंजरी ने उनकी बात का जवाब देते हुए कहा।

"पर आप तो इस केस में तफ्तीश करते हुए हर वो हथकंडा अपना चुकी हैं जिससे आपको कोई मदद मिल सकती थी।" चड्ढा ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा।

"कई बार ऐसा होता है चड्ढा साहब। हमारी आँखों के आगे ऐसा कोहरा छाया हुआ होता है कि हम चाह कर भी साफ़ नहीं देख पाते। आँखों के बेहद करीब होते हुए भी हमें वो चीज़ नज़र नहीं आती जिसकी हमें तलाश रहती है।" मंजरी बोली।

"तो अब आगे क्या इरादा है आपका?" वकील ने पूछा।

मंजरी कुछ देर चुप रही। वो अपना हर पत्ता एकदम से खोलने वालों में नहीं थी। एक बार को वो कुछ बोलने को हुई पर फिर कुछ सोचती हुई चुप हो गयी। फिर अगले ही पल कुछ सोचती हुई बोली:

"मैं हार मानने वालों में नहीं हूँ चड्ढा साहब। कपूर विला में क़त्ल हुआ है और अगर क़त्ल हुआ है तो ज़ाहिर है कि क़ातिल भी यहीं कहीं होगा। हवा में ग़ायब तो नहीं हो सकता ना। बस उसके मिलने की देर है पर मुझे लगता है कि हमें इस केस में वहीं से शुरुआत करनी होगी जहाँ से हमने ये सफर शुरू किया था।" उसने अपनी बात रौनक सिंह की तरफ देखते हुए ख़त्म की।

रौनक सिंह, जो अब तक मंजरी के साथ वाली कुर्सी पर बैठा हुआ था, वहाँ से उठ खड़ा हुआ।

"कहाँ चलना है मैडम जी?" रौनक सिंह मंजरी की ओर मुस्तैदी से देखते हुए बोला।

"फिलहाल तो पुलिस थाने वापस जायेंगे।" मंजरी ने मुस्कुराते हुए उसकी बात का जवाब दिया और खुद भी खड़ी उठ गई।

"और हाँ रौनक सिंह जी, केवल राम को कहिये मुझे शिखा, शिप्रा, रणधीर और नताशा इन सभी की बैंक स्टेटमेंट्स चाहिए। पैसे का और क़त्ल का चोली दामन का रिश्ता होता है। क्यों चड्ढा साहब?" मंजरी चड्ढा की तरफ देखती हुई बोली।

"बिलकुल सही फ़रमाया आपने मैडम। चलिए मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताइयेगा।" चड्ढा भी उसे देख के उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ कर उसका अभिनंदन करने लगा।

"ज़रूर चड्ढा साहब। जहाँ मामला क़त्ल का हो वहाँ वकीलों की ज़रूरत तो पड़ेगी ही।" मंजरी ने अपनी मुस्कान बिखेरते हुए कहा और हाथ जोड़ती हुई कमरे से बाहर निकल आयी।

पीछे चड्ढा काफी देर तक ज़ोर से इस बात पर ठहाका लगाते रहा।

□□□

घड़ी ने रात के आठ बजने का इशारा किया तो केवल राम ने गर्दन उचका कर उसकी तरफ देखा। सामने की कुर्सी पर रौनक सिंह किसी फाइल में उलझा हुआ था और दूसरी तरफ मंजरी भी किसी से फ़ोन पर बात कर रही थी।

“पता नहीं ये साला केस कब तक चलेगा। जीना दूभर कर दिया है हमारा। उधर बीवी अलग चिल्लाती है कि टाइम पर घर नहीं आते, बच्चे अलग रोना ले कर बैठे रहते हैं मेला घूमने नहीं ले गए, यहाँ नहीं ले गए वहाँ नहीं ले गए। हे प्रभु! अब तू ही कुछ रास्ता निकल।” केवल राम खुद से ही बड़बड़ाये जा रहा था। उसका सारा ध्यान दीवार घड़ी की तरफ था जो कि हर बीतते पल के साथ धीरे धीरे आगे सरकती जा रही थी और केवल राम को ये एहसास दिलाती जा रही थी कि बस उसी की ज़िंदगी है जो थम सी गयी है।

“केवल राम? केवल राम? अबे क्या हो गया है तुम्हें? चरस सूँघे हो क्या?”

रौनक सिंह ने करीब आ कर उसके कंधे से पकड़ कर उसे झिंझोड़ा तब कहीं जा कर केवल राम अपने ख्यालों से बाहर आ सका।

“साहब जी! ओह! वो मैं.... मैं तो बस काम देख रहा... आप बैठिये इधर!” हड़बड़ाते हुए वो कुर्सी से उठ कर खड़ा होने को हुआ ही था कि फिसल कर नीचे गिर गया।

उसके नीचे गिरते ही रौनक सिंह ठहाका लगा कर हँसने लगा।

“पगला गए हो तुम केवल राम। लगता है कपूर विला के इस केस ने तुम्हारे दिमाग के पेंच ढ़ीले कर दिए हैं!” रौनक सिंह ने उसे उठाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा तो केवल राम झेंप सा गया।

वो अभी उठ कर खड़ा हुआ ही था कि पीछे से मंजरी को आता देख उसकी घिग्गी बँध गयी।

“मैडम जी! वो मैं गलती से गिर गया था। सॉरी मैडम जी!”वो फिर से हकलाने लगा।

मंजरी के चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान उभर आयी और वो बोली:

“केस ख़त्म हो जाने दो उसके बाद आराम से गिरते रहना अभी फिलहाल मुझे तुम्हारी ज़रूरत है!”

कुछ ही देर बाद रौनक सिंह और केवल राम मंजरी के सामने बैठे हुए थे और संजीदा नज़र आ रहे थे।

“कहते हैं कोई चीज़ जहाँ भी छूट जाए उसे वापस उसी जगह पर जाकर देखना चाहिए। ये ठीक एक गोले की तरह होता है, जहाँ से शुरू होगा वहीं आ कर ख़त्म होगा।” मंजरी उन्हें समझाते हुए बोली।

“जी मैडम जी!” रौनक सिंह ने सर हिलाते हुए उसकी बात का समर्थन किया।

“क्या समझे रौनक सिंह जी?” मंजरी ने सवाल पूछा।

“मैडम जी यही कि जो चीज़ जहाँ से शुरू होती है वहीं पर आकर ख़त्म भी होती है!” रौनक सिंह ने मासूमियत से जवाब देते हुए कहा।

“ये बात तो मैंने अभी अभी कही पर इसका मतलब क्या है? हमारे इस केस में ये बात कैसे लागू होगी ये बताओ?” मंजरी दोनों की तरफ देखती हुई बोली।

दोनों के पास उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं था। वो दोनों उसकी तरफ देखते रह गए।

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

यदि आप दुर्लभ , प्रेरणादायक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों

और अनुवादित साहित्य की खोज में हैं,

तो हमारे विशेष 📲 टेलीग्राम चैनल से जुड़ें

और अनमोल साहित्य का आनंद लें।

📖 हमारे चैनल में आपको मिलेगा:

📚 अद्वितीय और दुर्लभ उपन्यास (Novels)

💡 प्रेरणादायक पुस्तकें (Motivational Books)

🕉️ धार्मिक ग्रंथ और किताबें

🌎 विभिन्न भाषाओं में अनुवादित साहित्य

📜 बेहतरीन पत्रिकाएं (Magazines)

🎁 और अन्य दुर्लभ साहित्यिक खज़ाने

🔔 कृपया "Join Now" बटन या लिंक पर Click करें!

HINDI BOOKS CHANNEL

Join Now ▶️ (धार्मिक, आजादी, इतिहास...से सबंधित)

https://t.me/Hindi_Books_Library

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

(नई, पुरानी किताबों के लिए)

Join Now 📒

https://t.me/Book_Hindi

ENGLISH BOOKS CHANNEL

Join Now 📗

https://t.me/Google_Ebooks

Join Now 📙

https://t.me/English_Library_Books

(ALL CHANNEL LINKS)

Join Now 📘

https://t.me/Hindilibrary

“इस केस की शुरुआत कपूर विला से हुई है। सोलह दिसंबर की रात को वहाँ एक क़त्लेआम हुआ और अब तक हम क़ातिल के बारे में कुछ भी पता नहीं लगा सके हैं।”

मंजरी की बात सुन कर उन दोनों के सर नीचे झुक गए।

“इसमें मायूस होने वाली कोई बात नहीं है। हमने पूरी कोशिश करी और अभी भी कर ही रहे हैं और तब तक करते रहेंगे जब तक हमें असली गुनाहगार नहीं मिल जाता।” मंजरी ने उनकी हौंसलाअफ़्ज़ाई करते हुए कहा।

“हम अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं मैडम जी पर पता नहीं क्यों हम असलियत तक नहीं पहुँच पा रहे?” रौनक सिंह हिम्मत करते हुए बोला।

“पहुँचेंगे! बहुत जल्दी पहुँचेंगे! और इसके लिए हमें वहीं से शुरुआत करनी होगी!” मंजरी उसकी ओर देखती हुई बोली।

“कहाँ से?” इस बार बारी केवल राम की थी। वो काफी देर से चुपचाप उन दोनों को देख रहा था।

मंजरी ने अपना गला साफ़ किया और अपनी कुर्सी आगे खिसकाती हुई बोली:

“हमें फिर से कपूर विला जाना होगा!”

कपूर विला का नाम सुनते ही रौनक सिंह और केवल राम एक दूसरे का मुँह तकने लगे।

“क्या हुआ?”मंजरी उनका चेहरा पढ़ती हुई बोली।

“मैडम जी आपको नहीं लगता कि कपूर विला में जा कर हमें कुछ नहीं मिलने वाला? मेरा मतलब हम पहले ही वहाँ तफ्तीश कर चुके हैं। डीएनए सैंपल, उँगलियों के निशान जैसी सब चीज़ों की जानकारी हमें मिल चुकी है। फिर अब वहाँ क्या बचा है जिसके लिए आप वहाँ जाना चाहती हैं?” रौनक सिंह ने अपने साथी की तरफ देखते हुए बात पूरी की।

मंजरी ने सर हिलाया और कुछ सोचती हुई बोली:

“बात तो आपकी सही है रौनक सिंह जी। हम वो सब कुछ कर चुके हैं जो हमें करना चाहिए था। पुरानी से ले कर नयी तकनीक तक सब कुछ हम आज़मा चुके। पर पता नहीं क्यों मुझे अभी भी ऐसा लग रहा है की कुछ ऐसा है जो हमारी आँखों के सामने होते हुए भी हमें नज़र नहीं आ रहा। कुछ है जो मुझे वहाँ जाने के लिए अंदर से विवश कर रहा है। अब वो क्या है ये तो वहीं जा कर ही पता चल सकेगा।” मंजरी की आँखों में इस बार एक अलग ही चमक थी।

“अगर ऐसा है तो हम तैयार है मैडम जी, आप कहिये कब चलना है कपूर विला?” इस बार रौनक सिंह की आवाज़ में एक अलग ही जोश था।

“नेक काम में देरी कैसी? आज रात को ही चलते हैं क्यूँकि मैं दिन में सब की नज़रों के सामने वहाँ नहीं जाना चाहती। कुछ काम ऐसे होते हैं जिनके किये अँधेरा ही मुनासिब रहता है। दिन में गए तो बेवजह सुर्खियाँ बनेंगी जो मैं बिलकुल भी नहीं चाहती।” कहते हुए मंजरी उठी और वहीं चहलकदमी करने लगी।

□□□

अध्याय 23

कपूर विला! एक ऐसी ईमारत जो हमेशा रौशनी में नहाई रहती थी, आज अँधेरे में ऐसी लिपटी थी जैसे रात की कालिख के हैवानी पंजों ने रौशनी के हर एक क़तरे को बेरहमी से ज़ज़्ब कर लिया हो। आसपास मीलों तक कुछ था तो बस दिल दहला देने वाला सन्नाटा।

उसी सन्नाटे के बीच रात के सर्द कोहरे को भेदती हुई एक मोटरसाइकल कपूर विला के सामने आ कर जा रुकी। रौनक सिंह ने अपने दस्तानों को पीछे खींच कर कस के पकड़ बनाने की कोशिश की पर सर्दी का एक ठंडा झोंका उसके जिस्म में किसी नश्तर सा चुभोता गुज़र गया।

“आज ठंड कुछ ज़्यादा ही है!” मंजरी के मुँह से भाप बन कर लफ़्ज़ हवा में उड़ गए। काली जैकेट के अंदर लाल रंग का हाई नैक पहने वो बेहद खूबसूरत नज़र आ रही थी। उस पर नीचे काली जींस और मोटे काले बूट्स उसे किसी सुपर मॉडल सी होने का एहसास दे रहे थे। मंजरी ने सही कहा था। अगर वो लोग दिन में वहाँ आते तो और वो भी ऐसे लिबास में, तो यकीनन शहर के सभी अख़बारों में ये बात पहले पन्ने की सुर्ख़ियों में होती।

“जनवरी का महीना है मैडम जी ठंडा तो होगा ही ना!” रौनक सिंह ने बमुश्किल उसकी बात का जवाब देते हुए कहा।

वो बुरी तरफ से काँप रहा था। हालाँकि उसने भी एक गर्म जैकेट और अंदर से गर्म स्वेटर पहन रखा था पर अब उम्र शायद उस पर कहीं हावी होने लगी थी।

उसने मोटरसाइकल एक तरफ पार्क करी और सड़क पार करके कपूर विला के गेट के पास आकर खड़ा हो गया। मंजरी वहाँ पहले सी ही खड़ी इधर उधर नज़रें दौड़ा रही थी।

“अच्छा खासा रिहायशी इलाका है ये फिर भी उस रात क़ातिल बड़ी सफाई से अपने काम को अंजाम दे कर निकल गया!” रौनक सिंह कपूर विला के आसपास देखते हुए बोला।

“क़त्ल कैसे हुआ है ये तो हम जानते हैं रौनक सिंह जी, पर दिक्कत ये है कि क़ातिल कौन है और उसने इस काम को अंजाम कैसे दिया, बस यही गुत्थी सुलझानी बाकी है।” मंजरी अपने हाथों को आपस में रगड़ती हुई बोली।

“आपको दस्ताने पहन लेने चाहिए थे मैडम जी, ठंडा कुछ ज़्यादा ही है आज तो!” रौनक सिंह उसके हाथों की तरफ देखते हुए बोला।

“मुझे आदत नहीं दस्तानों की। अजीब सा लगता है कुछ हाथों में!” मंजरी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया और कपूर विला के गेट पर चढ़ गयी।

“ध्यान रखना जितनी कम आवाज़ होगी उतना बेहतर होगा!” कहते हुए उसने दूसरी तरफ छलाँग लगा दी।

धप्प की आवाज़ हुई तो सही पर रात के अँधेरे में और झींगुरों की आवाज़ के नीचे वो कहीं खो सी गयी। अगले ही पल रौनक सिंह भी गेट से अंदर कूद कर मंजरी के साथ ही खड़ा था।

दोनों चुपचाप कुछ पल वहीं साँस थामे खड़े रहे। मंजरी पक्का करना चाहती थी कि कपूर विला में रह रही शिखा कहीं जाग न जाए, क्यूँकि वो नहीं चाहती थी की उसकी इस तफ्तीश में कोई भी किसी तरह से रोड़ा अटकाने की कोशिश करे। जब उसे पक्के तौर पर यकीन हो गया कि कपूर विला के अंदर उनके यूँ कूदने से भी कोई हलचल नहीं हुई है, तब जाकर मंजरी ने रौनक सिंह को इशारा किया।

"मैं इस तरफ देखती हूँ तुम वहाँ देखो!" कहकर वो कपूर विला के अंदर बने लॉन में दायीं तरफ की ओर चल पड़ी। विला के अंदर गेट के पास एक छोटा सा बगीचा सा बना हुआ था जहाँ फूलों की क्यारियाँ उगी हुई थीं। बाहर लगे स्ट्रीट लैंप की सफ़ेद रौशनी के कुछ टुकड़े उन क्यारियों पर भी पड़ रहे थे। मंजरी धीमे धीमे उस क्यारी के इर्द गिर्द चक्कर लगाती रही। वो कुछ सोच रही थी और जब भी वो कुछ सोच रही होती थी तब वो ऐसे ही चक्कर लगाया करती थी। उसने अपनी जेब से एक छोटी सी पेंसिल टोर्च निकली और उसकी नीली रौशनी को लॉन के हर कोने में फिराने लगी।

"मैडम जी उस तरफ तो ऐसा कुछ भी नज़र नहीं आ रहा।" रौनक सिंह दूसरी तरफ से आता हुआ बोला। उसके हाथ में भी एक वैसी ही पेंसिल टोर्च थी।

"ध्यान से देखा ना रौनक सिंह जी? हर कोने को अच्छे से देखिये क्या पता कोई सुराग ही मिल जाए। कुछ भी ऐसा जो इस केस में हमें मदद कर सके।" मंजरी उसे हिदायत देती हुई बोली।

"जी मैडम जी!" कहते हुए रौनक सिंह ने दोबारा अपनी टोर्च ऑन करी और पीछे की तरफ मुड़ गया।

मंजरी उसके जाते ही फिर से अपनी तफ्तीश में जुट गयी। उसके दिमाग में फिलहाल काफी कुछ चल रहा था। केस को लेकर हर तरफ से उस पर दबाव बढ़ता जा रहा था। प्रेस, राजनीतिज्ञ, आम जनता, उसके अपने सीनियर। सभी इस केस को जल्द से जल्द सुपुर्दे-ख़ाक करना चाहते थे। और इस वक़्त मंजरी उसी ख़ाक में इस केस का कोई एक ऐसा सिरा ढूँढ रही थी, जिससे इस केस से जुड़ी हर गाँठ खुल जाए और ये गुत्थी हल हो जाए।

लॉन के चक्कर लगाते हुए मंजरी एक बार फिर टोर्च हाथ में लिए उन क्यारियों के पास आ पहुँची जो कपूर विला के गेट के अंदर बनी हुई थी। मंजरी एक पल के लिए ठिठकी और फिर टॉर्च ऑन कर के उसकी नीली रोशनी को क्यारियों पर फेंका। वहाँ की मिट्टी नम नज़र आ रही थी। शहर में बरसात भी हुई थी और इसी वजह से वहाँ की मिट्टी गीली नज़र आ रही थी। अचानक टॉर्च की रोशनी में मंजरी को एक क्यारी के पीछे कुछ चीज़ नज़र आयी। सफ़ेद रंग का कुछ टुकड़ा बाहर झाँक रहा था। मंजरी को जाने क्या सूझा उसने लपक कर उसे उठा लिया।

"टिशू पेपर? होटल ग्रीन वैली? और ये क्या है? होटल ग्रीन वैली! ये होटल बिल का टुकड़ा लगता है।" मंजरी उस टुकड़े को घूरती हुई बोली। टिशू पेपर और बिल का वो टुकड़ा जगह-जगह से फट गया था और बारिश के कारण वो गीला भी हो चुका था और उस पर मिट्टी भी लगी हुई थी।

मंजरी उस बिल के फटे टुकड़े को ध्यान से देखने लगी।

"सोलह दिसंबर? ये तो उसी रात का बिल है जिस रात यहाँ हत्याकांड हुआ था!" मंजरी की आँखें उबलने लगी थीं।

अचानक उस टिशू पेपर को देखते हुए मंजरी की आँखों में एक चमक सी उठी।

"ये टिशू पेपर! मैंने ठीक ऐसा ही एक टिशू पेपर देखा है। पर कहाँ? कहाँ?" बोलती हुई वो

आदतन उसी क्यारी के इर्द गिर्द चक्कर काटने लगी।

उसे खुद से बड़बड़ाता देख रौनक सिंह भी उसी तरफ चला आया।

“क्या हुआ मैडम जी? सब ठीक तो है ना?” वो मंजरी के हाथ में उस फटे हुए टिशू पेपर की तरफ देखता हुआ बोला।

“शायब अब सब ठीक हो जाये रौनक सिंह जी! ये देखिये क्या मिला है मुझे यहाँ।” कहते हुए मंजरी ने वो टिशू पेपर और बिल का टुकड़ा रौनक सिंह के आगे कर दिया।

“ये क्या है?” रौनक सिंह उसे देखते हुए बोला।

“ये मुझे यहाँ पड़ा मिला इन क्यारियों में।” मंजरी उस तरफ इशारा करती हुई बोली।

“पर इससे क्या मिलेगा हमें? मैं समझा नहीं मैडम जी।” रौनक सिंह के चेहरे पर सवालिया निशान थे।

“रौनक सिंह जी मैं इसी होटल का एक ऐसा ही टिशू पेपर अभी हाल फिलहाल कहीं देख चुकी हूँ। बस याद नहीं आ रहा की कहाँ देखा था। इसको देखते ही मेरे दिमाग में जैसे एक बल्ब जला पर अभी तक रोशनी पूरी तरह से फैली नहीं है।” मंजरी उसे समझती हुई बोली।

“हाल फिलहाल देखा है! मैडम जी हाल फिलहाल तो हम वकील साहब के पास गए थे, उससे पहले आप रणधीर चोपड़ा जी से मिलने गयी थीं, रानीगंज मेल के सिलसिले में स्टेशन भी गयीं थीं।” रौनक सिंह उसे याद करवाता हुआ बोला।

“हाँ, मैं भी वो ही याद करने की कोशिश में हूँ कि इसी होटल का टिशू पेपर मैंने कहाँ देखा… कहाँ देखा!” वो अपने माथे पर हाथ मारती हुई बोली।

रौनक सिंह भी उसके साथ ही सोचने लगा। वो याद करने की कोशिश करने लगा की तफ्तीश के दौरान वो और कहाँ कहाँ गए थे।

अचानक तभी जैसे मंजरी को कुछ सूझा और वो लगभग उछल ही पड़ी।

“यस! याद आ गया! शिप्रा! शिप्रा कपूर! उस रोज़ जब मैं उससे मिलने उसके घर गयी थी तब वो नाश्ता कर रही थी और उस वक़्त उसके हाथ में इसी होटल का यानी ग्रीन वैली होटल का टिशू पेपर था।” मंजरी की आवाज़ में खनक लौट आयी थी। उसके चेहरे पर अब एक अलग ही रंगत नज़र आने लगी थी।

“शिप्रा कपूर? क्या मतलब मैडम जी?” रौनक सिंह को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

“मतलब ये कि कोहरा अब छँटने लगा है रौनक सिंह जी। ये बिल सोलह दिसंबर का ही है और ये देखो यहाँ टाइम भी लिखा नज़र आ रहा है, शाम के 5:36 मिनट। यानी उस रोज़ यहाँ कपूर विला में इसी होटल से खाना आया था और उसी खाने में ब्लेड के टुकड़े मिला कर मिस्टर कपूर, उनकी बीवी और लड़की सोनाली का क़त्ल किया गया है।” बहुत जल्द क़ातिल का असली चेहरा हमारे सामने होगा। पर इससे पहले हमें इस टिशू पेपर की जाँच करवानी होगी। वैसे तो ये फट चुका है और इस पर मिट्टी भी काफी लग चुकी है, पर शायद कहीं से हमें इस पर किसी डीएनए का सैंपल मिल जाये। शिप्रा कपूर तुम खुद को जितना चालाक समझती हो ना, उतनी हो नहीं!”

मंजरी ने वो टिशू पेपर और बिल का टुकड़ा सावधानी से एक प्लास्टिक के छोटे से बैग में डाला और फिर रौनक सिंह के साथ बाकी का लॉन छानने लगी।

□□□

“व्हाट? ये क्या बोल रहे हैं आप? टेस्टिंग तो सही से हुई है ना?” मंजरी फ़ोन पर लगभग चीखती हुई बोली। उसने बात करते हुए अपना दायाँ हाथ टेबल पर इतनी ज़ोर से मारा कि टेबल पर रखा पानी का गिलास और कुछ फाइलें नीचे आ गिरीं।

रौनक सिंह और केवल राम उस का ये रूप देख कर चौंक गए। उन दोनों ने उसे कभी इतने गुस्से में नहीं देखा था। दोनों ने एक दूसरे की तरफ नज़र दौड़ाई और फिर वापस मंजरी की तरफ देखने लगी। वो अब तक फ़ोन नीचे रख कर अपना सर हाथों में पकड़ कर कुर्सी पर थकी हारी सी बैठ गयी थी।

रौनक सिंह ने आखिर हिम्मत करी और मंजरी के पास चला आया।

“मैडम जी सब ठीक तो है ना? क्या हुआ?” उसने डरते डरते पूछा।

मंजरी ने देखा थाने में बाकी के लोग भी उसकी तरफ सहमे सहमे से देख रहे थे। वो ये जानती थी कि इस थाने की इंचार्ज होने के नाते उसे अपने आप पर, अपनी भावनाओं पर काबू रखना होगा, पर कई बार परिस्थितियाँ ऐसी बन जाती हैं जब कुछ पल के लिए इंसान का खुद पर से वश ख़त्म हो जाता है। कुछ ऐसा ही अभी अभी मंजरी के साथ भी हुआ था। वो तुरंत संभली और नीचे गिरे गिलास और फाइलों को उठाने लगी।

“सॉरी वो बस! उस टिशू पेपर और बिल की जानकारी भी पता चल गयी है। उस फटे हुए टिशू पेपर पर भी डीएनए मिला है पर वो भी उसी शख़्स से मैच करता है, जिसका डीएनए मौक़ा- ए-वारदात पर मिला था।”

मंजरी ने टेबल पर सामान वापस रखते हुए बताया तो रौनक सिंह के भी चेहरे का रंग उतर गया। वो जानता था कि अब फिर से वो लोग वापस वहीं पहुँच चुके हैं जहाँ से उन्होंने शुरुआत करी थी।

“मैडम जी ये सब चल क्या रहा हैं कुछ भी तो समझ नहीं आ रहा। मेरा दिमाग सही में अब काम नहीं कर रहा मैडम जी।” रौनक सिंह अपना सर पकड़ कर वहीं रखी एक कुर्सी पर बैठ गया।

“कुछ न कुछ तो करना ही होगा रौनक सिंह जी। हम लोग ऐसे हाथ पर हाथ धर कर नहीं बैठ सकते। अब क्या करें पुलिस की नौकरी है तो ये सब तो झेलना ही पड़ेगा ना!” मंजरी उसकी हिम्मत बढ़ाती हुई बोली।

“पर अब हम करें तो करें क्या मैडम जी?” रौनक सिंह का सवाल किसी तेज़ नश्तर सा मंजरी को चुभा तो सही पर इस बार उसने खुद पर काबू रखते हुए सिर्फ मुस्कुराते हुए कहा:

“मुझे अभी भी उम्मीद है हमें कहीं न कहीं से कोई न कोई रास्ता ज़रूर मिलेगा!”

मंजरी ने बात ख़त्म करी ही थी कि तभी केवल राम कुछ कागज़ एक फाइल में लिए उसके सामने हाज़िर हो गया।

“मैडम जी ये कपूर परिवार के सभी सदस्यों की बैंक स्टेटमेंट्स हैं। इसमें नताशा भी शामिल है।” कहते हुए उसने वो फाइल टेबल पर मंजरी के सामने रख दी।

“हम्म! चलो क्या पता इनमें हमें वो रास्ता मिल जाए जिसकी हम सभी को तलाश है!” मंजरी रौनक सिंह की तरफ देखती हुई बोली और उस फाइल को उठा लिया।

कुछ ही देर बाद वो तीनों उन सभी बैंक स्टेटमेंट्स को बारिकी से पढ़ने में लगे हुए थे।

मंजरी एक-एक कर के हर कागज़ को बड़े ध्यान से पढ़ रही थी। वो नहीं चाहती थी कि कुछ

भी ऐसा छूट जाए जिससे इस केस में उन्हें कोई मदद मिल सके। कुछ ऐसा ही रौनक सिंह और केवल राम का भी हाल था। उन्होंने भी खुद को पूरी तरह से उन कागज़ों के सुपुर्द कर दिया था।

बैंक स्टेटमेंट्स खँगालते हुए उन्हें करीब एक घंटा होने को था कि तभी अचानक मंजरी एक पन्ने पर आ कर रुक गयी। उसकी त्योरियाँ चढ़ने लगी थी, उसके होंठ कुछ बुदबुदाने लगे। वो कागज़ पर लिखे हुए को पढ़ रही थी और पढ़ कर समझने की कोशिश कर रही थी।

"ओह माय गॉड! रौनक सिंह जी। इधर आईये और ये देखिये!" उसकी आवाज़ में एक खनक थी और चेहरे पर हैरानी नाच रही थी। रौनक सिंह लपक कर उसके पास आ खड़ा हुआ।

"ये देखिये!" कहते हुए मंजरी ने एक बैंक स्टेटमेंट उसके आगे कर दी। वो भी उसे गौर से पढ़ने लगा। पढ़ते पढ़ते उसकी भी आँखें फैलने लगीं।

"मैंने कल रात क्या कहा था याद है ना? मैंने ये ग्रीन वैली होटल का टिशू पेपर शिप्रा कपूर के पास देखा था जब मैं उसके घर पूछताछ के लिए गयी थी। अब यहाँ देखो ग्रीन वैली होटल में ये सोलह दिसंबर को डेबिट कार्ड से पेमेंट की गयी है। और ये डेबिट कार्ड और ये स्टेटमेंट पर नाम किसका है!"

रौनक सिंह की आँखें फ़ैल चुकी थीं।

"ये? ये कैसे मैडम जी? इसका मतलब…" वो बोलते बोलते चुप हो गया।

"इसका मतलब ये गुत्थी बेहद बुरी तरह से उलझी हुई है। इसकी एक गाँठ कुछ ढ़ीली ज़रूर हुई है पर अभी पूरी तरह से खुली नहीं है। पर शायद अब हम इसी सिरे को पकड़ कर इस गुत्थी की हर गाँठ को खोल सकें।" मंजरी के चेहरे पर अब मुस्कराहट तैर रही थी।

उसे अब उम्मीद की एक किरण नज़र आ रही थी।

□□□

अध्याय 24

होटल ग्रीन वैली शहर के कुछ नए उभरते हुए होटलों में से एक था जहाँ शहरवासियों से लेकर पर्यटकों की अच्छी खासी भीड़ लगी रहती थी। खासकर चिकन और मटन खाने वालों के लिए वो जगह किसी जन्नत से कम नहीं थी। पिछले दो साल में इस होटल ने अच्छी खासी तरक्की कर ली थी। सड़क के किनारे किसी पुरानी शैली के घर और रसोई के आकार में बने ग्रीन वैली होटल में सभी तरह के व्यंजनों की व्यवस्था थी पर वहाँ ज़्यादातर चाइनीज़ और नॉन वेज की ही डिमांड रहती थी।

पुलिस जीप ठीक होटल के सामने वाली सड़क पर आ कर रुकी तो उधर बैठे लोगों में एक खलबली सी मच गयी। उनकी शक्लें देख कर लग रहा था जैसे उनकी ज़ुबान पर कोई कड़वा स्वाद लग गया हो।

मंजरी जीप से उतरी और होटल को निहारने लगी। उसे वहाँ की आबो हवा अच्छी लग रही थी। सर्दियों की ठंडी हवा उसके चेहरे को छूते हुए गुज़री तो उसके बाल उड़ कर उसकी आँखों के आगे आ गए। उसने आँखों के सामने से अपने बाल हटाए और एक गहरी साँस लेती हुई होटल की तरफ चलने लगी। कोई और वक़्त होता तो शायद मंजरी सब कुछ भुला गर्मागर्म कॉफी और चाइनीज़ डिश ले कर इत्मीनान से वहाँ के माहौल का मज़ा लेती हुई खाती।

“मैं मैनेजर से बात करती हूँ। तब तक तुम पता करो कोई सीसीटीवी फुटेज भी अगर मिल सके तो बढ़िया रहेगा।” मंजरी केवल राम को निर्देश देती हुई रौनक सिंह के साथ होटल के अंदर दाखिल हो गयी।

“एसीपी मंजरी मिश्रा, गोपालगंज थाने से। मुझे यहाँ के मैनेजर से मिलना है।” उसने अंदर घुसते ही रिसेप्शन पर बैठी लड़की को अपना आईडी दिखाते हुए कहा।

लड़की ने फुर्ती से सर हिलाया और अपनी सीट से उठ खड़ी हुई। उसने सामने रखे टेलीकॉम से एक नंबर मिलाया।

“सर आपसे मिलने के लिए गोपालगंज थाने से एसीपी मंजरी मिश्रा आयी हैं। जी सर, ओके सर!” लड़की ने रिसीवर नीचे रखा और मंजरी से मुख़ातिब हुई।

“आप दो मिनट रुकिए मैडम, सर आते ही होंगे!” कहते हुए उसने सामने रखे एक सोफे की तरफ इशारा किया।

मंजरी रौनक सिंह को लिए सामने के सोफे पर जा बैठी। सोफे के ऊपर लटका हुआ काँच का वो फानूस बेहद खूबसूरत नज़र आ रहा था। रौनक सिंह उस फानूस में अपनी परछाई देख मन ही मन खुश हो रहा था।

“मूँछों पर अभी सफेदी नहीं आयी है शुक्र है भगवान का।” वो मन ही मन बोला और अनजाने में अपनी मूँछों को ताव देने लगा।

मंजरी उसकी हरकतों को नज़रअंदाज़ करती हुई दूसरी तरफ बैठे मेहमानों को निहारने में

लगी हुई थी। सभी लोग कुछ न कुछ खाने में व्यस्त थे। हर तरफ खुशी और मस्ती का माहौल था।

पर मंजरी के पास फिलहाल सोचने के लिए बहुत कुछ था। तभी सामने से एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने आ कर अपना हाथ उसके आगे करते हुए कुछ कहा तो उसका ध्यान टूटा।

"गुड मॉर्निंग मैडम! शमशेर सिंह ठाकुर, ग्रीन वैली होटल का मैनेजर हूँ मैं। कहिये मैं आपकी क्या ख़िदमत कर सकता हूँ?" शमशेर ठाकुर के चेहरे पर शालीनता थी और व्यक्तित्व में एक अलग सा ही आकर्षण था। वो काले रंग का सूट पहने हुए था और माथे पर चंदन का तिलक लगाए अपनी एक अलग ही आभा बिखेर रहा था।

मंजरी उठ कर खड़ी हो गयी और अपना हाथ आगे बढ़ाती हुई बोली:

"गुड मॉर्निंग ठाकुर साहब! दरअसल एक केस के सिलसिले में मुझे आपकी कुछ मदद चाहिए।"

"जी बताइए, मैं आपकी पूरी मदद करूँगा।"

शमशेर ने कहा तो मंजरी ने अपना मोबाइल निकाला और एक फोटो उसके सामने रखती हुई बोली:

"ये सारी तफ्तीश कपूर विला मर्डर केस को ले कर हो रही है और इसी सिलसिले में हमें इस बैंक स्टेटमेंट से ये पता चला है कि सोलह दिसंबर की शाम को इनके कार्ड से यहाँ आपके होटल से मटन ख़रीदा गया था।" मंजरी का इशारा मोबाइल की तरफ था जहाँ एक फोटो थी जिसे शमशेर ठाकुर बड़े गौर से देख रहा था।

"सोलह दिसंबर! ये जो फोटो में हैं इन्हें मैंने यहाँ देखा है कई बार। फिर भी एक बार कंप्यूटर में रिकॉर्ड चेक कर लेते हैं और वैसे हमारे पास यहाँ हर आने जाने वाले ग्राहक की सीसीटीवी रिकॉर्डिंग भी होती है। वो देखिये उधर लगा है सीसीटीवी कैमरा।" कहते हुए शमशेर ने रिसेप्शन की तरफ इशारा किया जहाँ रिसेप्शनिस्ट के ठीक ऊपर वाली जगह पर दो पेंटिंग्स के बीच एक बेहद छोटा सा कैमरा लगा हुआ था जिसे आसानी से नहीं देखा जा सकता था।

"बड़े खुफ़िया तरीके से निगरानी करते हैं आप अपने मेहमानों की?" मंजरी मुस्कुराती हुई बोली।

"जी, वो दरअसल हमारा एक होटल और भी है दूसरे शहर में और वहाँ पर दो तीन बार कुछ घटनाएँ ऐसी हुई कि हमें इस तकनीक का सहारा लेना ही पड़ा।" शमशेर ने भी मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

"चलिए देखते हैं क्या कहता है आपका सीसीटीवी कैमरा और आपके कंप्यूटर रिकार्ड्स।" मंजरी बोली तो शमशेर उसे और रौनक सिंह को एक तरफ ले कर चल दिया।

वो एक छोटा सा कमरा था जहाँ चार मॉनिटर लगे हुए थे। वहाँ एक युवक बैठा हुआ था जो उन चारों मॉनिटर पर बारी बारी से नज़र रखे हुए था।

"हिमेश! ये एसीपी मैडम हैं, इन्हें सोलह दिसंबर की रिकॉर्डिंग देखनी है!" शमशेर उसे बताने लगा।

"सोलह दिसंबर शाम पाँच बजे के बाद की। मुझे इनकी तलाश है।" मंजरी बात पूरी करते हुए बोली और उसने हिमेश की सामने मोबाइल पर वो फोटो खोल कर रख दी।

वो लड़का दिए गए काम पर लग गया। मंजरी और रौनक सिंह के साथ-साथ अब शमशेर की उत्सुकता भी बढ़ती जा रही थी। सभी की निगाहें सामने लगी कंप्यूटर स्क्रीन पर थी। उस लड़के

की उँगलियाँ कीबोर्ड पर घोड़े की तरह सरपट दौड़ रही थी। अचानक वो रुका और एक रिकॉर्डिंग पर आ कर मंजरी की तरफ देखने लगा।

"हाँ, थोड़ा आगे करो चेहरा कुछ साफ़ नज़र नहीं आ रहा। हाँ हाँ बस रुको यहीं!" मंजरी उसके कंधे पर हाथ रखती हुई बोली।

"मैडम जी! आपका अंदाजा सही निकला।" रौनक सिंह की आवाज़ में इस बार एक अलग ही ख़ुशी थी।

"लीजिये उम्मीद करता हूँ आपकी तलाश अब पूरी हो गयी होगी।" शमशेर ने भी एक बार फिर मुस्कुराते हुए मंजरी की तरफ देख कर कहा।

"हाँ! मछली नज़र आ गयी है, बस जाल फेंकना बाकी है!" कहते हुए मंजरी मुस्कुरा दी।

□□□

रात अपने पूरे शबाब पर थी। आसमान में चाँद बादलों की पीछे से आँख मिचोली कर रहा था और कुछ ऐसा ही पुलिस की टीम भी कर रही थी। उस हाईवे पर मंजरी अपनी टीम के साथ काफी देर से रुक कर उसी 'मछली' के आने का इंतज़ार कर रही थी।

"मैडम जी काफी देर हो गयी अब तो! आपको लगता है हमें यहाँ और रुक कर उसका इंतज़ार करना चाहिए?" केवल राम जो अब तक किसी तरह से ठंड बर्दाश्त कर रहा था, आख़िरकार बोल ही पड़ा।

रौनक सिंह ने उसे घूरा और चुप रहने का इशारा करने लगा। पर मंजरी ने बड़े इत्मीनान से उसकी बात को सुना और फिर बोली:

"मैं जानती हूँ केवल राम, हम सभी ने अपनी कई ऐसी रातें इस केस पर काली की हैं। बस अब ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा, वो 'मछली' जल्द ही हमारे जाल में होगी ऐसा मुझे पूरा विश्वास है।

"मैडम जी बुरा न मानें तो एक बात पूछ सकता हूँ?" केवल राम की हिम्मत ठंड के साथ साथ जैसे बढ़ती ही जा रही थी। शायद केस के जल्द से जल्द सुलझने के अहसास ने उसमें किसी नयी ऊर्जा शक्ति का संचार कर दिया था।

"हाँ पूछो ना?" मंजरी बोली।

"मैडम जी अब जब हमें असली गुनाहगार का पता चल ही गया है तो हम उसे सीधे जा कर दबोच क्यों नहीं लेते?" केवल राम ने सवाल किया।

"मैं चाहती हूँ कि उसे बच कर निकलने का अब कोई और मौका ना मिले और मैं ये भी जानती हूँ कि हर गुनाहगार चाहे वो कितना ही शातिर क्यों न हो, कहीं न कहीं कोई न कोई एक ऐसी ग़लती ज़रूर करता है जो आख़िर में उसकी सबसे बड़ी ग़लती साबित होती है। इस केस में भी उस गुनाहगार से वो ग़लती हो चुकी है। अब बस सबके सामने उससे ग़लती का इज़हार करवाना बाकी है।" मंजरी की आँखों में जीत की ख़ुशी साफ़ झलक रही थी।

"मैडम जी क्या आपको पक्का यकीन है कि आज रात ही वो क़ातिल हमारे क़ब्ज़े में होगा?" अब केवल राम को भी मज़ा आने लगा था।

"उम्मीद पर दुनिया टिकी हुई है केवल राम। हमें इतने टाइम तक हिम्मत और उम्मीद नहीं छोड़ी तो अब तो बहुत कुछ साफ़ दिख रहा है। बस एक छोटी सी औपचारिकता बाकी है, वो भी क़ातिल के मिलते ही पूरी कर दूँगी।" मंजरी अपने हाथ आपस में रगड़ती हुई बोली।

अभी उसने बात ख़त्म ही करी थी कि सामने से किसी गाड़ी की हेडलाइट्स उसकी आँखों में पड़ी।

"नीचे हो जाओ! कोई आ रहा है वहाँ से? तैयार रहना! अगर ये वो ही है जिसकी हमें तलाश है, तो हमें उसका पीछा करना होगा।" वो बोली और अपनी टीम की साथ उस बड़ी सी चट्टान के नीचे छुप गयी जो सड़क की किनारे पड़ी हुई थी।

एक कार तेज़ी से वहाँ से गुज़री। ठीक उसी वक़्त चाँद बादलों की चादर से बाहर आ निकला और उसकी सफ़ेद रौशनी में ड्राइविंग सीट पर मंजरी और उसकी टीम की नज़रें पड़ीं।

"चलो वो ही है! इससे कुछ दूरी बना कर इसका पीछा करते रहो।" मंजरी ने आदेश दिया और जीप की तरफ दौड़ पड़ी।

कुछ ही देर में वो लोग एक उचित दूरी बना कर उस कार का पीछा कर रहे थे। वो कार काफी देर तक उस सुनसान सड़क पर दौड़ती रही। थोड़ी देर बाद वो कार एक कच्ची सड़क पर उत्तरी और आगे चलने लगी। कुछ ही देर में वो कार उसी पीले रंग के मकान की पास आ रुकी। ड्राइविंग सीट से वो साया नीचे उतरा और तेज़ी से उस मकान की ओर बढ़ चला।

करीब पाँच मिनट के बाद पुलिस जीप उसी मकान से कुछ दूर रुकी और मंजरी अपनी टीम की साथ पैदल चलती हुई उसी मकान की तरफ चल पड़ी।

"मैं नहीं चाहती थी कि कोई भी आवाज़ हो जिससे उसे किसी की यहाँ होने का अंदाज़ा भी लगे। अब दबे पाँव हमें उस मकान में जाना है और बस सारा खेल ख़त्म!" मंजरी बोली और ठीक वैसे ही दबे पाँव रौनक सिंह, केवल राम और दो हवलदार उस मकान की तरफ चलने लगे।

कुछ ही पल में वो दरवाज़े पर खड़े थे जो कि अंदर से बंद था।

मंजरी ने इशारों में अपने साथियों को रिवॉल्वर निकालने को कहा और खुद भी अपनी रिवॉल्वर निकाल कर दरवाज़े पर एक दस्तक दी।

"ठक ठक! ठक ठक!"

नीम ख़ामोशी में दरवाज़े पर हुई इस दस्तक ने रात के सन्नाटे की जैसे धाज्जियाँ उड़ा कर रख दी। कुछ पल की लिए कोई कुछ न बोला। ऐसा लगा वक़्त जैसे ठहर सा गया है।

"दरवाज़ा खोलो वरना अंदर आने के हमारे पास और भी तरीके हैं!" मंजरी गरजी और एक ज़ोरदार लात उस दरवाज़े पर मारी।

"धड़ाक!"

एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ वो दरवाज़ा खुला और उसके खुलते ही एक मुक्का मंजरी की माथे पर पड़ा। वो लड़खड़ा कर नीचे जा गिरी। अंदर से कोई बाहर निकल कर भागा। ये सब इतनी तेज़ी से हुआ की कोई कुछ भी समझ नहीं पाया।

"कौन है बाहर? क्या हुआ? ये शोर कैसा?" अंदर बैठी उस बूढ़ी औरत को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

"शूट! गोली मारो उसके पाँव में शूट!" मंजरी चिल्लाई।

पर इससे पहले रौनक सिंह कुछ कर पाता, मंजरी ने खुद ही संभलते हुए अपनी रिवॉल्वर उठाई और फायर कर दिया।

एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ वो साया नीचे गिरा। गोली ठीक उसकी जाँघ की पिछले हिस्से में लगी थी।

इससे पहले कोई और अनहोनी होती, मंजरी मुस्तैदी से अपनी टीम के साथ वहाँ पहुँच चुकी थी।

“यू आर अंडर अरेस्ट! चुपचाप खुद को हमारे हवाले कर दो, तुम्हारा खेल ख़त्म हो चुका है!” मंजरी चिल्लाई।

“मैंने क्या किया है?” वो साया चीखा।

“बस एक टेस्ट करने की देर है और फिर सब शीशे की तरह साफ़ हो जायेगा! रौनक सिंह जी डालिये इसे जीप में!” मंजरी उसे उठाती हुई बोली।

□□□

अध्याय 25

साठ वॉट का वो बल्ब बासी सी पीली रौशनी फेंकते हुए जल उठा। उस आठ बाय आठ की छोटी सी कोठरी में मंजरी के सामने कपूर विला हत्याकांड की गुत्थी अब लगभग सुलझी पड़ी हुई थी। इंतज़ार था तो बस एक रिपोर्ट का। डीएनए रिपोर्ट! जो इस गुत्थी को पूरी तरह से सुलझा देती।

तभी केवल राम ने रिपोर्ट ला कर मंजरी की सामने उस छोटे से टेबल पर रखी और वहाँ से बाहर निकल आया। उसके सामने इस वक्त अपराधी बैठे हुए थे।

रिपोर्ट पढ़ने के बाद मंजरी ने ही चुप्पी तोड़ी।

“शातिर से शातिर दिमाग भी एक छोटी सी ग़लती कर बैठता है। हर केस से पहले यही मेरा मूलमंत्र रहा है। पर इतनी ज़रूर कहूँगी की जितनी भी केस स्टडीज़ मैंने ट्रेनिंग में पढ़ी, ये केस उन सबसे पेचीदा और दिमाग की नसें हिला देने वाला था। पर जैसा मैंने कहा, मेरा अपने मूलमंत्र पर हमेशा से भरोसा रहा है, और शायद इसी की वजह से आज ये केस मैं और मेरी टीम सुलझा सकी है।”

मंजरी ने वो डीएनए रिपोर्ट उठाई और पढ़ कर एक तरफ रखते हुए अपनी बात ख़त्म की। फिर उसने एक नज़र उस कोठरी के बाहर खड़े रौनक सिंह और केवल राम की ओर देखा। उन दोनों की चेहरे पर सुकून साफ़ झलक रहा था। कोठरी के बाहर कपूर विला के अन्य सदस्य भी खड़े थे। वो सब मंजरी के बुलाने पर पुलिस थाने चले आये थे।

“अगर उस रोज़ मैं अगर कपूर विला में नहीं गयी होती और उस क्यारी पर मेरी नज़र नहीं पड़ी होती, तो शायद ये गुत्थी अनसुलझी ही रह जाती। तुमने शायद सपने में भी नहीं सोचा होगा कि तुम्हारी एक छोटी सी ग़लती तुम्हें यहाँ तक पहुँचा देगी। क्यों मिस्टर रणधीर चोपड़ा उर्फ़ रणधीर ठाकुर?”

सामने बैठे रणधीर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। कपूर विला हत्याकांड के क़ातिल का पर्दाफाश हो चुका था।

वो नज़रें नीचे किये हुए बैठा रहा।

“तुमने बड़ी सफाई से सारी दुनिया की सामने ये बात रखी कि तुम्हारे बाप की तरह तुम्हारी माँ भी मर चुकी है। पर हक़ीक़त ये है कि उस रात जिस औरत से मिलने तुम उस पुराने मकान में गए थे, वो कोई और नहीं तुम्हारी माँ है। अब मैं तुमसे पूछना चाहती हूँ रणधीर। क्यों? आख़िर क्यों इस जुर्म की दुनिया की दलदल में तुम उतरे? ऐसी क्या मज़बूरी थी जो तुमने तीन नहीं चार ज़िंदगियों को मौत की घाट उतार दिया?”

मंजरी ने एक छोटा सा टेप रिकॉर्डर ऑन किया, कपूर विला के सदस्यों को अंदर आने का इशारा किया और रणधीर के बोलने का इंतज़ार करने लगी।

“कहते हैं इश्क़ में पड़ कर कई राजाओं ने अपने तख़्त-ओ-ताज तक लुटवा दिए। इतिहास गवाह है की कई सल्तनतें इसी इश्क़ की वजह से बर्बाद हुई हैं। शायद कुछ ऐसा ही मेरे साथ भी

हुआ।” रणधीर ने अपनी आँखों से बहते आँसू पोंछे और बोलना शुरू किया।

“दो साल पहले कपूर साहब के यहाँ शिखा से रिश्ता हुआ था मेरा। वो मेरे मामा को पहले से जानते थे। वहीं से मेरी और शिखा की रिश्ते की बात हुई, और वहीं मेरी और शिप्रा की नज़रें चार हुई थीं। पर किस्मत को शायद कुछ और ही मंज़ूर था। शिप्रा और मैं एक दूसरे को पसंद करने लगे, छुप छुप कर एक दूसरे से मिलने लगे, पर हम दोनों में ही इतनी हिम्मत नहीं थी की कपूर साहब के आगे इस सच को कह पाते। मुझे अपने प्रोजेक्ट के लिए पैसों की ज़रूरत थी, और मैं जानता था कि अगर मैंने शिखा की साथ रिश्ता ठुकराया या तोड़ा तो मेरा उस प्रोजेक्ट का सपना भी चकनाचूर हो जाता। मैं और शिप्रा सही मौके की तलाश में थे। पर उससे पहले ही उसके भाई ध्रुव को हमारे रिश्ते की खबर लग गयी। उसने हमें धमकाना शुरू कर दिया।”

कहते कहते रणधीर की आँखों में अब ख़ून उतर आया था। वो एक पल के लिए रुका और अपने माथे पर बनी पसीने की बूँदों को पोंछते हुए फिर बोला, “मेरे पास कोई और चारा नहीं था। अगर वो बात कपूर साहब को पता चल जाती तो सबसे ज़्यादा नुकसान मेरा ही होता। शिखा से रिश्ता तो टूटता ही, साथ ही प्रोजेक्ट की फंडिंग भी पानी में बह जाती। इसलिए मुझे ध्रुव को रास्ते से हटाना पड़ा।”

उसकी बात सुन कर नताशा के साथ साथ शिखा की आँखों में नफरत की सैंकड़ों बादल उमड़ आये।

रणधीर बोलता रहा, “वो मैं ही था जिसकी गाड़ी से ध्रुव की कार का एक्सीडेंट हुआ था। मैंने ही उसे ज़बरदस्ती टक्कर मारी थी। इस बात की जानकारी शिप्रा को पहले से ही थी।”

सभी की आँखें शिप्रा की तरफ मुड़ी। शिप्रा किसी से भी नज़रें नहीं मिला पा रही थी।

“हमें लगा कि किस्सा वहीं ख़त्म ही जायेगा पर ऐसा हुआ नहीं। इस घटना के कुछ महीने बाद ही सोनाली को भी मेरे और शिप्रा के नाजायज़ रिश्ते की भनक लग गयी और इस बार उसने ये बात कपूर साहब को बता दी। उन्होंने मुझे खूब खरी खोटी सुनाई और मेरे खिलाफ अदालत जाने की धमकी देने लगे। तब मैंने ये प्लान बनाया और उनसे मिलने उनके घर आने की इच्छा जताई। मैंने उन्हें किसी तरह से यकीन दिलवाने की कोशिश करी कि मेरे और शिप्रा की बीच ऐसा कुछ भी नहीं है। मैं जानता था कि उन्हें अच्छे लज़ीज़ खाने का बहुत शौक़ है। इसी बात का फ़ायदा उठा कर मैं उस रात उनके घर मटन ले कर पहुँच गया और उनसे माफ़ी माँगी। पर वो नहीं जानते थे कि मेरा असली इरादा क्या था। मैं उन सभी को ऐसी मौत देना चाहता था कि किसी को मुझ पर शक ना हो। मैंने उनके मटन में ब्लेड के छोटे छोटे टुकड़े इस तरह से मिला दिए की जिसकी वजह से उन्हें अंदरूनी ब्लीडिंग हुई और वो तीनों मारे गए।”

“और तुम्हें पूरा यकीन था कि तुम अपने मक़सद में कामयाब हो जाओगे?” मंजरी उसे घूरती हुई बोली।

“मेरा पास दूसरा कोई रास्ता बचा ही नहीं था। अगर किस्मत से वो उस रोज़ ब्लेड के टुकड़ों से मिला हुआ मटन खा के बच भी जाते तो मैं फिर कोई और प्लान बनाता। पर हर हालत में मेर मक़सद बस एक ही था… उनकी मौत!” रणधीर की आँखों से अब भी हैवानियत टपक रही थी।

रणधीर ने बात पूरी करी तो शिखा की सिसकी ने सभी का ध्यान उसकी तरफ खींचा। शिखा की आँखें लाल हो चुकी थी। वो गुस्से से काँप रही थी।

“मैं सपने में भी सोच नहीं सकती थी की तुम इतनी घटिया हरकत कर सकते हो रणधीर ।

मुझे शर्म आ रही है की मैंने तुमसे शादी की।"

उसकी नज़रें रणधीर से होते हुए अपनी बहन शिप्रा पर आ टिकी।

"बेशर्म है तू! नीच है तू! कभी नहीं सोचा था कि हमारा अपना ख़ून ही काला निकलेगा।" शिखा उस पर चिल्लाने लगी।

"शिप्रा की कोई ग़लती नहीं है शिखा! उसे तो मालूम भी नहीं था कि मैं ऐसा कुछ करने वाला हूँ। कपूर विला में उस रात जो हुआ वो सब सिर्फ और सिर्फ मेरा प्लान था। इसे तो मैंने बाद में सब बताया।" रणधीर शिप्रा की तरफदारी करते हुए बोला।

□□□

मंजरी जो काफी देर से ये सब सुन रही थी अब बीच में कूद पड़ी–

"मुझे तुम्हारी माँ के घर पर एक डायरी मिली थी जिसमें उसने एक अधूरी सी कहानी लिखी थी जिसमें यशवंत ठाकुर का जिक्र था। उसे पढ़कर लग रहा था यशवंत ठाकुर ने जरूर तुम्हारी माँ के साथ कुछ बुरा किया था। आखिर इस यशवंत ठाकुर से क्या रिश्ता था तुम्हारी माँ का ?"

"यशवंत ठाकुर मेरा बाप था!" रणधीर के कहे शब्द सभी के कानों में किसी पिघले शीशे से घुसते चले गए। उसने आगे कहना जारी रखा–

"यशवंत ठाकुर ने मेरी माँ को अपनी झूठी मोहब्बत के जाल में फँसाया और उसकी अस्मत से खेलता रहा। अपना बीज उसकी कोख में छोड़ कर वो मेरी माँ को धोखा दे कर चला गया। मेरी माँ ने मुझे मेरे मामा के हवाले किया पर उसकी हालत तब तक ऐसी हो चुकी थी कि वो अपना मानसिक संतुलन खो चुकी थी। मामा ने उसे पागलखाने में रखवाया, उसका इलाज करवाया। बड़े हो कर मैंने माँ को सारी दुनिया की नज़रों से दूर रखा क्यूँकि मैं नहीं चाहता था कि दुनिया उस पर कोई कीचड़ उछाले। माँ जब कुछ ठीक हुई तो उसने मुझे मेरे बाप की सच्चाई बताई। मुझे अगर किसी चीज़ का अफ़सोस है तो वो ये कि मेरी रगों में उस इंसान का काला ख़ून है, जिसकी वजह से मेरी माँ की ज़िंदगी बर्बाद हुई।"

बोलते बोलते रणधीर चुप हो गया। उसकी आँखों से आँसू लगातार बहे जा रहे थे।

न जाने क्यों कुछ देर के लिए रणधीर की कहानी सुन के मंजरी की आँखों में नमी आने लगी थी । उसे बरबस ही अपनी माँ की याद आने लगी, पर वो वक़्त अपनी भावनाओं पर काबू पाने का था, न की ज़ज़्बातों में बह जाने का।

"तुम्हारी सारी कहानी और तुम्हारा इक़बालिया बयान सुनने के बाद मैं एक बार फिर यही बोलूँगी कि अगर उस रात तुमने वो एक गलती न की होती तो शायद मैं तुम तक कभी नहीं पहुँच पाती।" मंजरी ने वहाँ छाई चुप्पी को तोड़ते हुए बात शुरू की।

"हमने तुमसे पहले बाकी लगभग सभी लोगों का डीएनए प्रोफाइल लिया पर हर बार नाकाम साबित हुए। मुझे लगने लगा शायद मैं गलत दिशा में जा रही हूँ इसलिए तुम्हारा डीएनए सैंपल पहले लिया ही नहीं। वो तो अब जा आकर जब बाकी सारी चीज़ें साफ़ हुई, कुछ सुबूत मिले जो तुम्हारी तरफ साफ़ इशारा कर रहे थे, तब कहीं जाकर मैंने तुम पर डीएनए सैंपलिंग तकनीक का इस्तेमाल किया।" मंजरी आगे बोली।

"हमें कपूर विला में किसी की उँगलियों की निशान नहीं मिले थे, क्यूँकि उस रात तुमने दस्ताने पहने हुए थे। ठीक इसी तरह जैसे अभी पहने हैं।" मंजरी इस बार उसके हाथों की तरफ

देखती हुई बोली।

"तुमने उस रात बड़ी सफाई से उन्हें ब्लेड के टुकड़े मिला हुआ मटन खिलाया और खुद साधारण मटन खाया। उसके बाद तुम वहाँ से निकले और अपनी बाइक में जाने से पहले शायद तुमने अपना मुँह साफ़ किया होगा इसलिए ग्रीन वैली होटल का वो टिशू पेपर तुमने जेब से निकाला और फिर जल्दबाज़ी में वहीं फेंक दिया। साथ ही गलती से वो बिल भी उसी की साथ तुमसे वहीं फेंका गया। क्यों ऐसा ही कुछ हुआ होगा ना?" मंजरी ने उससे पूछा।

रणधीर ने जवाब में धीमे से सर हिला दिया।

"ये पहली चीज़ थी जो तुम्हारे ख़िलाफ़ गयी। उसके बाद तुम्हारी बैंक स्टेटमेंट से हमें पता चला कि तुमने ग्रीन वैली होटल अपना कार्ड स्वाइप किया था मटन की पेमेंट करने को। ये थी तुम्हारी दूसरी ग़लती। और तुम्हारे ख़िलाफ़ एक बात और थी जो हमें तुम्हारे करीब ले आयी। रानीगंज मेल के टिकट कलेक्टर केशव शर्मा, जिनको तुमने ट्रेन में गोभी के परांठे खिलाये थे, उनका मेरे पास फ़ोन आया था। उन्हें हमसे मिलने के बाद अचानक याद आया कि तुम उस रात रानीगंज ट्रेन में दोबारा नज़र ही नहीं आये। तुम्हे लगा होगा की तुम्हारा टिकट चेक करने के बाद वो चले गए हैं, पर वो रात को वापस आये थे तुमसे बतियाने को पर तुम उससे पहले ही ट्रेन से उतर चुके थे। क्यूँकि तुम्हें यहाँ कपूर विला में अपने कारनामे को अंजाम जो देना था। तो दुनिया की नज़रों में तुम उस रात रानीगंज थे पर असलियत में तुम इसी शहर में कपूर विला में क़त्लेआम कर रहे थे। उसके बाद तुम रात बिताने को यहीं कहीं ठहर गए और सुबह सब को ये दिखाते हुए आये की तुम रानीगंज से वापस आ रहे हो। सही कहा न मैंने?" मंजरी उसकी तरफ देखती हुई बोली।

रणधीर के पास दोबारा सर हिलाने के और कोई विकल्प अब बचा ही नहीं था।

"तुमने अपना गुनाह क़ुबूल कर लिया है रणधीर। अब तुम्हें जो भी सज़ा होगी उसका फैसला अदालत करेगी। पर ये सज़ा तुम अकेले नहीं काटोगे, इस गुनाह में शिप्रा भी तुम्हारी भागीदार है।" मंजरी बोली और शिप्रा की तरफ देखने लगी। शिप्रा अभी भी नज़रें नीचे किये हुए ज़मीन की तरफ देखे जा रही थी। उसमें अब किसी से भी आँखें मिलाने की हिम्मत नहीं बची थी।

तभी कोठरी के बाहर से शिखा अंदर चली आयी। वो सीधे रणधीर की सामने आयी और एक तेज़ तमाचा उसने रणधीर के गाल पर धर दिया।

"मंजरी मैडम! ले जाइये इस हत्यारे को मेरी नज़रों से दूर वरना शायद आज यहाँ मेरे हाथों कहीं कोई हादसा न हो जाये।" शिखा बिलखने लगी।

मंजरी ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए उसे सहारा दिया।

कुछ ही देर में रणधीर को हथकड़ी लगा कर दूसरी जेल भेजने की औपचारिकताएँ भी पूरी हो चुकी थी। शिप्रा को लेने दो महिला कांस्टेबल भी थाने में पहुँच गयी थीं। केस सुलझने की खबर सुनने के बाद मंजरी के सीनियर अफसर भी उधर आ चुके थे।

"वेल डन मंजरी! इतने मुश्किल केस को तुमने जिस सूझबूझ से हल हर कर दिखाया ये वाक़ई में क़ाबिले तारीफ है।" मंजरी के एक सीनियर अफसर ने उसे बधाई देते हुए कहा।

"सर अगर मेरे पास ऐसी टीम न होती, तो शायद मैं इस केस की तह तक नहीं पहुँच पाती।" मंजरी रौनक सिंह और केवल राम की तरफ देखती हुई बोली तो उन दोनों का सीना भी गर्व से चौड़ा हो गया।

"क्यों रौनक सिंह जी?" मंजरी ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"जी मैडम जी, बस हम तो आपके दिखाए रास्ते पर ही चल रहे थे!" रौनक सिंह ने हाथ जोड़ते हुए जवाब दिया।

जवाब सुन कर मंजरी और वो अफसर मुस्कुरा दिए। आज काफी दिनों बाद गोपालगंज थाने का माहौल खुशनुमा लग रहा था।

❖ समाप्त ❖

---

[1] ऐसा केस जिसे पुलिस सुलझा न सकी हो

इस लेखक द्वारा पुस्तकें

Qatilaana

Tags
साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

यदि आप दुर्लभ उपन्यासों, प्रेरणादायक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों और अनुवादित साहित्य की खोज में हैं तो हमारे विशेष टेलीग्राम चैनल से जुड़ें और अनमोल साहित्य का आनंद लें।

हमारे चैनल में आपको मिलेगा :

- ★ अद्वितीय और दुर्लभ उपन्यास (Novels)
- ★ प्रेरणादायक पुस्तकें (Motivational Books)
- ★ धार्मिक ग्रंथ और किताबें
- ★ विभिन्न भाषाओं में अनुवादित साहित्य
- ★ बेहतरीन पत्रिकाएं (Magazines)
- ★ और अन्य दुर्लभ साहित्यिक खज़ाने

साहित्य और ज्ञान की इस अनोखी दुनिया का हिस्सा बनने के लिए

नीचे दिए गए Link पर Click करें !

HINDI BOOKS CHANNEL

(धार्मिक, आज़ादी, इतिहास...उपन्यास से संबंधित)

https://t.me/Hindi_Books_Library

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

(नयी, पुरानी किताबों के लिए)

https://t.me/Book_Hindi

ENGLISH BOOKS CHANNEL

https://t.me/Google_Ebooks

https://t.me/English_Library_Books

(ALL CHANNEL LINKS)

https://t.me/Hindilibrary

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

यदि आप दुर्लभ , प्रेरणादायक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों

और अनुवादित साहित्य की खोज में हैं,

तो हमारे विशेष 📲 टेलीग्राम चैनल से जुड़ें

और अनमोल साहित्य का आनंद लें।

📖 हमारे चैनल में आपको मिलेगा:

📚 अद्वितीय और दुर्लभ उपन्यास (Novels)

💡 प्रेरणादायक पुस्तकें (Motivational Books)

🕉️ धार्मिक ग्रंथ और किताबें

🌎 विभिन्न भाषाओं में अनुवादित साहित्य

📜 बेहतरीन पत्रिकाएं (Magazines)

🎁 और अन्य दुर्लभ साहित्यिक खज़ाने

🔔 कृपया "Join Now" बटन या लिंक पर Click करें!

HINDI BOOKS CHANNEL

Join Now▶️ (धार्मिक, आजादी, इतिहास...से सबंधित)

https://t.me/Hindi_Books_Library

साहित्य प्रेमियों के लिए खास पेशकश!

(नई, पुरानी किताबों के लिए)

Join Now 📒

https://t.me/Book_Hindi

ENGLISH BOOKS CHANNEL

Join Now 📗

https://t.me/Google_Ebooks

Join Now 📙

https://t.me/English_Library_Books

(ALL CHANNEL LINKS)

Join Now 📘

https://t.me/Hindilibrary